



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—संख्या 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 3]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 11, 1983/वैशाख 21, 1905

No. 3] NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 11, 1983/VAISAKHA 21, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वाली है जिससे कि यह भलग संकलन के लिये में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद्

प्रधिसूचना

नई दिल्ली, 11 मई, 1983

संख्या 7-1/83 सं. 3ी० एम० ३०—होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 (1973 का 59) की आरा 33 के खंड (अ), (अ) और (ट) और आरा 20 की उपधारा (i) द्वारा प्रवस्त सक्तियों का प्रयोग करते हुए होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् केन्द्रीय धरकार की पूर्व मंजूरी से निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :—

भाग 1

प्रारम्भिक

1. संक्षिप्त नामबारी और प्रारम्भ :— (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम होम्योपैथी (डिप्लोमा पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 है।

(2) ये भारत के राजपत्र में आगे प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएँ : इन विनियमों में अब तक कि संबंध में अन्यथा अपेक्षित न हो—

(i) “अधिनियम” से होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 (1973 का 59) अभिप्रेत है,

(ii) “पाठ्यक्रम” से अभिप्रेत है होम्योपैथी के पाठ्यक्रम, अर्थात् :—

(क) दी० एम० एम० एम० (डिप्लोमा इन होम्योपैथिक मैडिसिन एण्ड सर्जरी), और

(ख) दी० एम० एम० एम० (वैज्ञान आण शोम्योपैथिक मैडिसिन एण्ड सर्जरी)।

(iii) “डिप्लोमा” से अभिप्रेत है इन विनियमों के विनियम 3 में उपलिखित होम्योपैथी डिप्लोमा या दूसरी और तीसरी अनुसूची में अन्तर्विष्ट और कम से कम आर वर्ष की कालायधि का होम्योपैथी पाठ्यक्रम पूरा करने के पश्चात् अभिप्राप्त होम्योपैथी डिप्लोमा।

(iv) “डिप्री” से अभिप्रेत है होम्योपैथी (क्षणीय डिप्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के विनियम 2 के खंड (iv) में या होम्योपैथी (डिप्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के विनियम 2 के खंड (iv) में परिमाणित होम्योपैथी डिप्री;

(v) “होम्योपैथी महाविद्यालय” से अभिप्रेत है किसी भी या विश्व विद्यालय से संबद्ध और केन्द्रीय परिषद् द्वारा मान्यताप्राप्त होम्योपैथी आयुर्विज्ञान महाविद्यालय;

(vi) “निरीक्षक” से अधिनियम की आरा 17 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त निरीक्षक अभिप्रेत है;

(vii) “अध्यक्ष” से केन्द्रीय परिषद् का अध्यक्ष अभिप्रेत है;

(viii) “द्वितीय अनुसूची” और “तीसरी अनुसूची” से अधिनियम की क्रमसः दूसरी अनुसूची और तीसरी अनुसूची अभिप्रेत है;

(ix) "पाठ्य विवरण" और "पाठ्यकर्त्ता" से अभिप्रेत है केन्द्रीय परिषद् द्वारा इन विभिन्नों होम्योपैथी (थ्रेनोवर्ड दिग्गी पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 और होम्योपैथी (डिग्गी पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के अधीन विनिरिष्ट विभिन्न पाठ्यक्रमों का पाठ्यविवरण और पाठ्यकर्त्ता;

(X) "अध्यापन अनुभव" से अभिप्रेत है केन्द्रीय परिषद् द्वारा मान्यताप्राप्त किसी होम्योपैथी महाविद्यालय या अस्पताल में संबंधित विषय में अध्यापन अनुभव;

(xi) "परिवर्णक" से अधिनियम की धारा 18 की उपचारा (1) के अधीन नियुक्त परिवर्णक अभिप्रेत हैं।

पाठ्यक्रम

डिप्लोमा पाठ्यक्रम:

3. (i) होम्योपैथी के डिप्लोमा पाठ्यक्रम में भारतवर्ष की अद्वितीय का ऐसा पाठ्यक्रम समाविष्ट होगा जिसमें इन विभिन्नों द्वारा उपलब्धित पाठ्यकर्त्ता और पाठ्य विवरण सम्मिलित हैं और जिसके अन्तर्गत अन्तिम डिप्लोमा परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् छह मास अनिवार्य अथवा शिक्षा भी है।

(ii) अन्तःशिक्षुता, महाविद्यालय से संबद्ध अस्पताल में की जाएंगी और ऐसे मामलों में जिनमें ऐसे अस्पताल में उसके सभी विद्यार्थियों की अन्तःशिक्षुता के लिए स्थान नहीं मिल सकता है, ऐसे विद्यार्थी अपनी अन्तःशिक्षुता केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या स्थानीय निकायों द्वारा बलाए जा रहे किसी अस्पताल या औषधालय में कर सकेंगे।

(iii) विनिरिष्ट अधिकी की अन्तःशिक्षुता पूरी करने के पश्चात् और उस संस्था के, जहाँ अन्तःशिक्षुता की गई है, प्रधान की सिफारिश पर, याचास्तिति, राज्य बोर्ड या विश्वविद्यालय सकल अध्यर्थी को डिप्लोमा दारी करेगा।

धारा 3—पाठ्यक्रम में प्रवेश

4. व्यूनतम बहुताएँ:—कोई भी अध्यर्थी ही० एच० एम० एस० डिप्लोमा पाठ्यक्रम में तब तक प्रवेश नहीं पाएगा जब तक वह उसने—

(क) इंटरमीडिएट विज्ञान या उसकी समतुल्य परीक्षा भौतिक गणित, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान विषय सेकर उत्तीर्ण न कर सकी हो;

(ख) उस वर्ष के, जिसमें वह पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश पाता है, विसम्बर मास की 31 तारीख को या को उससे पूर्व 17 वर्ष आयु प्राप्त न कर सकी हो।

5. प्रारंभिकारी जिन्हें परीक्षाओं का आयोजन करने की शक्ति प्राप्त है: डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए विभिन्न राज्यों में परीक्षाएं, याचास्तिति, संबद्ध राज्य सरकारों या होम्योपैथी बोर्डों या परिषदों या विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित की जाएंगी।

धारा—4 पाठ्यकर्त्ता

6. विषय:—ही० एच० एम० एस (डिप्लोमा) पाठ्यक्रम के लिए अध्ययन और परीक्षा के विषय निम्नलिखित होंगे:—

(i) गरीब रखना विज्ञान।

(ii) गरीब किया विज्ञान।

(iii) औषधि आयोजन।

(iv) धिकालिक रोग और होम्योपैथी वर्णन।

(v) मनोविज्ञान और तर्क शास्त्र के मूल सिद्धान्त।

(vi) रोगिकृत लेना और होम्योपैथी रिपर्टरीकरण।

(vii) होम्योपैथी कार्मसेंसी (भेषजी)

(viii) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका।

(ix) विहृति विज्ञान, जीवाणु विज्ञान और पर्जीवी विज्ञान।

(x) सामाजिक और निरोगीक आयुर्विज्ञान जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुर्विज्ञान भी है।

(xi) स्थाय-आयुर्विज्ञान।

(xii) आयुर्विज्ञान और बाल आयुर्विज्ञान का ग्रन्थसंग्रह।

(xiii) प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान।

(xiv) शाश्वत विज्ञान जिसके अन्तर्गत कर्ण, नासा एवं कंठ और नेत्र विज्ञान भी हैं।

(xv) होम्योपैथी विकिसाशास्त्र, और

(xvi) आयुर्विज्ञान का इतिहास।

धारा 5—पाठ्य विवरण

7. डिप्लोमा पाठ्यक्रम का पाठ्य विवरण:—ही० एच० एम० एस० (डिप्लोमा) पाठ्यक्रम का पाठ्यविवरण निम्नलिखित होगा:—

डी०एच०एस०एस० प्रबन्ध परीक्षा होम्योपैथी कार्मसेंसी (भेषजी)।

सेवाप्रतिक्रिया

(i) प्रस्तावना:—भेषजी, होम्योपैथी भेषजी—उसकी विशेषता और मौलिकता, होम्योपैथी कार्मसेंसी (भेषज कीश)

(ii) निम्नलिखित के संबंध में होम्योपैथी भेषजी का प्रविष्य —

(1) आगेनन (आगेनन के सूत्र 264 से सूत्र 285 तक)

(2) मेटीरिया मेडिका।

(3) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था।

(iii) भार और माप जिसके अन्तर्गत होम्योपैथी मापमान (बेसी० सेटी० मिली० भी है।

(iv) होम्योपैथी के भेषजिक उपकरण और साधिल

(v) होम्योपैथी औषधियों के स्रोत। औषधि पदार्थों के संग्रहण, उनकी पहचान, शुद्धिकरण, परिरक्षण की तथा शक्तिकृत औषधियों के परिरक्षण की प्रक्रिया।

(vi) अनुपासन

(1) उनकी तैयारी और उनका उपयोग।

(2) शोधन

(3) एस्कोहल की प्रमाण सामर्थ्य

(vii) कार्बनिक और अकार्बनिक रसायनों, बनस्पतियों, पशुओं और पशु उत्पादों, रोग के उत्पादों आदि से औषधियों के तैयार करने के तरीके। हीमेन के प्रमाणिक और आभूतिक तरीके जिसमें गुण और अवगुण भी सम्मिलित हैं।

(viii) (क) मूल टिचर औल शक्तियों और संयोजनों (ओटाना) की तैयारी के तरीके।

(ख) (i) वशमल (डेमीसल) मापमान

(ii) भास्तिक (सेटीसीसल) मापमान

पर औषधियों को भास्ति प्रदान करना।

(ix) प्रवाहन शक्ति, संप्रेषण के तरल रूप में संपरिवर्तन के तरीके।

(x) आहय-प्रयोग—उसका प्रविष्य—सोशन, लेप, रिलमेराल, मलाम को बनाने के तरीके और उनका उपयोग।

(xi) औषध पद (कुस्ता)—उसका अध्ययन जिसके अन्तर्गत संयोजन, भीषणपतल लेखन के सिद्धांत और तरीके और उसकी विधिमाप्तता का अध्ययन भी है।

(xii) भेषजगुण विज्ञान (फारमाकालोजी)—भौषधि सामर्थ्य, होम्योपैथी भेषज निया विज्ञान, संक्रिय शक्ति— भौषधि माप्राशास्त्र-होम्योपैथी माप्राशास्त्र—उपचार।

(xiii) औषधियों और अनुपासों के मानकीकरण का संक्षिप्त वर्णन।

(xiv) होम्योपैथी भेदभाव से संबंधित विज्ञान का सामान्य ज्ञान ।	7. आरेनिकम एल्ब	8. औरम मेट
(xv) साधारण प्रयोगशाला तरीके / घोल, तमुकरण, नितारला, अवसेपन, निस्पेन, आसवन, किस्टलन, उदात्तीकरण, परिलक्षण आदि ।	9. बैप्टीसिया	10. सीटाइटा कार्ब
(xvi) कृष्ण महत्वपूर्ण औषधि पदार्थों की जैविक, भौतिक, और/या रासायनिक विशेषताओं का अध्ययन ।	11. ब्रेलारोना	12. ब्रायोनिया
(xvii) होम्योपैथिक औषधि प्रूषिग प्रविष्टि ।	13. कैटटस प्रैंडी	14. कैलकोटिया कार्ब
प्रयोगशाला	15. कैलकोटिया फास	16. कैरेंडला
(i) होम्योपैथी के भेदभिक उपस्कर्तों और साधिकों की पहचान और उनके उपयोग सथा उनको साफ करना ।	17. कैम्फर	18. कैथरिस
(ii) महत्वपूर्ण होम्योपैथी औषधियों की पहचान (संलग्न सूची देखिए)	19. कार्बो बेजिटेबिल्स	20. कास्टिकम
(क) सूक्ष्म-सूक्ष्मदर्शी	21. कैमोमिला	22. कैलीडोमियम
(i) कम से कम 30 औषधि पदार्थ—20 बनस्पति वर्ग के और 10 खनिज सथा रासायनिक वर्ग के ।	23. चायना	24. सिना
(ii) उद्यमिज संग्रह के लिए 30 औषधि पदार्थों का संग्रहण	25. कोकुलस	26. कोलूचिकम
(iii) 3+शक्ति तक के दो संपेक्षणों का सूक्ष्म-सूक्ष्मदर्शी अध्ययन ।	27. कोलोसिंचि	28. कोनियम
(iii) औषधि की आदता का जलोणक की सहायता से अनुमान लगाना ।	29. कुपरम बेट	30. डिजिटेलिस
(iv) एथिल एल्कोहॉल, आमुत जल, दुग्ध शर्करा की शुद्धता परीक्षण जिसके अन्तर्गत आमुत जल और एल्कोहॉल के विशिष्ट घनत्व का अवधारण भी है ।	31. ड्रोसेरा	32. डलकामारा
(v) गोली के आकार—उसके औषधि प्रयोग का दुग्ध शर्करा और आमुत जल का अनुमान—मात्रा होज तैयार करना ।	33. ग्लोनाइन	34. फ्रेकाइटीस
(vi) तनुकृत अल्कोहॉल घोल और तनुकृत घोल तैयार करना और उनका औषधि योजना ।	35. हीपर सल्फर	36. हायोसियामस
(vii) 3 पोली केस्ट के मूल टिक्कार तैयार करना ।	37. हाइपरिकम	38. इन्नेशिया
(viii) 3 अपरिकृत औषधियों के 3+तक संपेक्षण तैयार करना ।	39. हिपिकाकूबाना	40. काली कार्ब
(ix) ऐसी औषधियों के जो डी०ए०स०आई० के अनुरूप नहीं है मूल टिक्कार तैयार करना ।	41. लैकेसिस	42. लाइकोपोडियम
(ix) 3 मूल टिक्कारों को 6+दशमलव मापमान और 3 शक्तिक मापमान तक शक्ति प्रदान करना ।	43. मर्क्युरियस कर	44. मर्क्युरियस सोल
(xi) 3 औषधियों का 6+तक संपेक्षण और उनकी तरल शक्तियों में संपर्कर्तित करना ।	45. मेरीरियम	46. नेट्रम ब्यूर
(xii) बाह्य प्रयोग की औषधियां तैयार करना —प्रत्येक की एक ।	47. नाइट्रिक एसिड	48. नक्स जॉमिका
(xiii) औषधि पद (नुस्खे) लिखना और उनके अनुसार औषधि तैयार करना ।	49. ओपियम	50. फासफोरस
(xiv) प्रयोग शाला में काम में लाये जाने वाले तरीके:—	51. फासफोरिक एसिड	52. प्लाटीना
(क) उदात्तीकरण ।	53. प्लामबम	54. प्लेटिला
(ख) आसवन ।	55. रसटाक्स	56. रुटा
(ग) नितारला ।	57. सेम्बुयूक्स	58. सीशुरेशिया
(घ) निस्पेन ।	59. सिकेली कर	60. सीपिया
(ङ) किस्टलन ।	61. साइलेशिया	62. स्पाइजेलिया
(च) परिलक्षण ।	63. स्पाइजिया	64. स्टेनम मेट)
(xv) बड़े फैमाने पर औषधियों के विनिर्माण का अध्ययन करने के लिए होम्योपैथी प्रयोगशाला बेखते जाना ।	65. स्ट्रायोनियम	66. सल्फर
पहचान करने के लिए औषधियों की सूची	67. टरेंटुला क्यू०	68. चूजा
1. एफोनाइट नैप	68. बेरेटिम एल्बम	70. वेरेट्रम बिरीहि
3. एटीमोनियम टार्ट	69. बेरेटिम एल्बम	71. जिकम बेट
5. अर्जेन्टम नाइट्रिकम		

सचेतनता, जीवन और उसके आभास का स्वर्व्विकरण न हो सके यदीकिया विज्ञान से, न क्वांटम क्रियाविधि (क्वांटम मैकेनिज्म) से और न मनवैज्ञानिक धारणाओं से, जो स्वयं रासायनिक-भौतिक धारणाओं पर आधारित हैं, दिया जा सकता है।

यद्यपि अभी तक शरीर रखना विज्ञान और शरीर किया विज्ञान विषय संबंधी भिन्न-भिन्न विषयों के रूप में पढ़ाए जाते हैं तथापि इनके बीच कोई पूर्ण और कठोर विभाजन नहीं किया जाना चाहिए। संरखना (शरीर रखना) और कार्य (शरीर किया) परस्पर संबद्ध पक्ष तथा भीतक रासायनिक प्रक्रियाएं एक अंतर्वर्ग्य प्रत्यक्ष तथ्य की जिसे जीवन कहते हैं, बास्तु अभिव्यक्ति है।

अतः शरीर रखना विज्ञान और शरीर किया विज्ञान निम्नलिखित चर्चेय से पढ़ाए जाने चाहिए:

- (i) उन आकृतिक, शरीर कियात्मक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को समझाता जिनसे एक किया इकाई के रूप में सप्राण शरीर की संबंधित रखना का अधधारण होता है और उस पर प्रभाव पड़ता है;
- (ii) मानव शरीर के संरखनात्मक तंत्रजटन और उसकी प्रसामान्य शरीर किया के बीच संबंध स्पष्टित करना और उसका निर्विज्ञन करना तथा ऐसे आंकड़े उपलब्ध करना जिनके आधार पर क्रियाओं के विकार का पूर्वानुमान लगाया जा सके;
- (iii) विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे रोग लक्षण चिन्हों तथा झाति, रोग और कुपिकास के कारण विकारों के लक्षणों के शरीर रखनात्मक, शरीर कियात्मक और मनोवैज्ञानिक आधार को पहचान सकें;
- (iv) इसी प्रकार विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर प्रदान करना कि विकृतजग्य प्रक्रियाओं के विकास से संबद्ध बातें क्या हैं और उनसे संबंधित क्या पेशीवर्गियां उत्पन्न हो सकती हैं;
- (v) विद्यार्थियों को रोग लक्षण पूर्वं विषयों का ऐसा ज्ञान प्रदान करना जिसमें कि वे अंतर्गत, परीक्षण और उपचार (जिसके अन्तर्गत शल्यक्रिया भी है) के उन सभी सामान्य तरीकों का, जिनमें ऐसे ज्ञान की आवश्यकता हो, दक्षतापूर्वक और तक्षणगत रूप से उपयोग कर सकें;
- (vi) विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे होमोपैथी चिकित्सा व्यवसाय में सदूचों के नियम की लागू करने के प्रयोगजन से रोगी और औषधियों के निष्पक्षीकरण के लिये विशिष्ट व्याविज्ञापक लक्षणों में से विलक्षण, दुर्लभ और असामान्य लक्षणों को छांट सकें।

शरीर रखना विज्ञान

शरीर रखना विज्ञान की शिक्षा की योजना इस प्रकार बनाई जानी चाहिए कि उससे विद्यार्थी को मानव शरीर की संरखना का सामान्य कार्यवादीक ज्ञान प्राप्त हो सके। जिन व्यौरों को कठस्थ करते की उनसे अपेक्षा की जाये उनकी संख्या न्यूनतम करते ही जानी चाहिए। सबसे अधिक बल शब्द की स्थिर संरखनाओं की वजाय सप्राण शरीर की कियात्मक शरीर रखना पर तथा सामान्य शरीर रखनात्मक स्थितियों और अन्तराग, पेशियों, रक्तवाहिकाओं, तंत्रिकाओं तथा समवाहिकाओं के मुख्य संबंधों पर दिया जाना चाहिए। शब्द का अस्थय इस साध्य का साधन माना है। विद्यार्थियों पर ऐसे सूक्ष्म शरीर रखनात्मक व्यौरों का भार नहीं आला जाना चाहिए जिनका कोई मैदानिक महत्व नहीं है।

यद्यपि विद्यार्थी को रोग-विद्ययक अध्ययन के लिये तैयार करते के उद्देश्य से सम्पूर्ण शरीर का विच्छेदन अत्यन्त आवश्यक है तथापि यदि श्वलाहृति संबंधी व्यौरों की मात्रा कम कर दी जाये और निम्नलिखित बातों की व्यायाम में रखा जाये तो विच्छेदन का भार कम किया जा सकता है और समय की काफी बचत हो सकती है:—

1. केवल ऐसे व्यौरे आयुविज्ञान के विद्यार्थियों के मामने रखे जायें जिनका उसके लिये कोई व्यावसायिक या मानवान्य शिक्षा संबंधी मूल्य हो।

2. विच्छेदन का प्रयोगन तकनीकी वृष्टि से विशेषज्ञ विच्छेदक तैयार करना नहीं है। इसका प्रयोगन तो विद्यार्थी को यह समझाना है कि शरीर

और उसके कार्य के बीच क्या संबंध है और विच्छेदन की योजना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हीनी चाहिए। उदाहरणार्थ, छोटी और नैवानिक वृष्टि से महत्वहीन रसत वाहिकाओं की उपेक्षा कर देने के परिणामस्वरूप अपेक्षाकृत साफ विच्छेदन होता है तथा मुख्य संरखनाओं की और उनके स्थानाविक संबंधों की अधिक स्पष्ट तमसीर सामने आती है।

3. आकृतिक विच्छेदन के द्वारा जो कुछ पढ़ाया जाता है उसमें से काफी बातें तैयार किए हुए विच्छेदित नमूनों के माध्यम से उपयोगी स्पष्ट से प्रदर्शित की जा सकती हैं।

4. सामान्य नेडियोलाजिकल शरीर रखना भी व्यावहारिक प्रशिक्षण का भाग हो सकती है। शरीर की संरखना को उसके कार्यात्मक पहलू से जोड़कर पेश किया जाना चाहिए।

5. वास्तविक विच्छेदन से पूर्व उस बंग या पद्धति की, जिसके विषय में चर्चा हो रही है, सामान्य संरखना के और उसके बावजूद उसके कार्य के संबंध में लेकर होने चाहिए। इस प्रकार विद्यार्थियों को शरीर रखना और शरीर किया संबंधी ज्ञान एकीकृत रूप में प्रदान किया जा सकता है तथा शरीर रखना विज्ञान और शरीर किया विज्ञान के समूर्ण पाठ्यक्रम को अधिक विलक्षण, रोचक और व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

6. शरीर रखना विज्ञान के सिद्धान्त संबंधी अधिकतर नेतृत्व द्यूटीट्रियल कक्षाओं में प्रवर्शन सहित अंतरित किए जा सकते हैं।

नैवानिक और अनुप्रयुक्त शरीर रखना विज्ञान पर कुछ लेकरहों या प्रदर्शनों का आयोजन पाठ्यक्रम के बावजूद भाग में किया जा सकता है। ये जहां तक सम्भव हो किसी चिकित्सक (क्लीनिशियन) द्वारा दिए या विए जाने चाहिए और उनका उद्देश्य भीतिक चिन्हों के शरीर रखनात्मक आधार तथा चिकित्सक के लिए शरीर रखनात्मक ज्ञान का मूल्य प्रदर्शन करना होना चाहिए।

संदर्भातिक

शरीर के विभिन्न रखनात्मक भागों के सामान्य कार्यसाधक ज्ञान सहित मानव शरीर रखना का समूर्ण पाठ्यक्रम।

टिप्पण—द्यूटीट्रियल कक्षाओं में किए गए प्रदर्शनों की गणना साधारण कक्षा लेकरहों के स्पष्ट में की जा सकती है।

विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाएगी कि वे शरीर रखनात्मक नमूनों को पहचान लें और हाल ही में किए गए विच्छेदनों में संप्रवार्तित संरखनाओं को पहचान कर उनके संबंध में प्रश्नों के उत्तर दें, अस्थियों और उनकी सन्धियों से जिसके अंतर्गत बृंशोल्काएं (बट्टीं) और खोपड़ी (स्क्ल) भी हैं, तथा लींग अस्थियों (लांग बोल्स) के अस्थीसवन (आस्टीफिकेशन) की रीति से अवगत हों।

जहां तक संरखना को या औषधि और शल्यक्रिया में उनके उपयोग को समझने के लिये आवश्यक है उसको छोड़कर सूक्ष्म विवरणों पर बल नहीं दिया जायेगा। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि उन्हें पेशियों के संलग्नों (अटेंडमेंट्स आफ मस्ट्स) की जानकारी हो किंतु उनसे यह अपेक्षित नहीं है कि उन्हें हाथ और पैर की प्रत्येक पेशी या अस्थियों की उत्पत्ति और संप्रवार्ता के यथात्य विवरणों का तथा खोपड़ी की लघु अस्थियों (स्माल बोल्स) की संधियों और उनके विवरणों का ज्ञान हो।

स्पूल शरीर रखना (ग्रास अनेटिपि):

- (i) ऊर्ध्व शाखा, अर्ध-शाखा, आंग शीर्ष (पैलकिस हेड), ग्रास, वसा उदर का अध्ययन प्रवेशानुसार और एक एक तंत्र के अनुसार किया जाये।
- (ii) विकास और अनुप्रयुक्त शरीर के प्रति विशेष सिवेंग से अन्तःसाथी (एन्डोकाइन) अंग।

४. जीवित व्यक्तियों के विवरण

विद्यार्थी को पृष्ठ शरीर (सर्फेस अनाटमि) और जीवित व्यक्ति पर अंगरेखांकन (सर्फेस मार्किंग) की परीक्षा देने के लिये तैयार रहना चाहिये। विकिरण चिन्ह (रेडियोग्राफ़) :

विद्यार्थियों से सामान्य व्यक्ति के विकिरण चिन्हों के विवर में प्रश्न पूछे जायें।

सामान्य तंत्रिका तंत्र :

मस्तिष्क, मुख्यमना (स्पाइनल कार्ड) और मस्तिष्कावरण (मैनिनिजिस) की खाली आंख शरीर (नैकेड आइ बनाटमि) का तथा मुख्य केन्द्रों (न्यूक्लिअह) और पथों (ईक्ट) की स्थिति, संबंधों और फ्रियाटमक महत्व का ज्ञान।

प्रयोगात्मक

(1) मानव शरीर के विच्छेदन का पाठ्यक्रम।

टिप्पणी—(क) विद्यार्थियों के लिये विच्छेदन कार्डों की व्यवस्था की जानी चाहिये। शरीर के भाग विद्यार्थियों को आवंटित कर दिये जाने चाहिये और जब वे प्रत्येक भाग के संबंध में प्रवर्णनों द्वारा आयोजित गोचरिक परीक्षा पास कर ले उसके बाद ही यह लेखबद्ध किया जाये कि उन छात्रों का विच्छेदन कार्य पूरा हो गया है। विच्छेदन के लिये कम से कम चार भाग की अवधि होनी चाहिये।

(ख) शबों की कमी की दशा में शरीर के प्रत्येक भाग के संबंध में दस विद्यार्थियों के एक बैच द्वारा, विच्छेदन के प्रवर्णन के समय नियमित उपस्थिति की बाबत यह लेखबद्ध किया जा सकता है कि विद्यार्थियों ने अस्तुतः विच्छेदन किया है।

(2) निम्नलिखित के अंगरेखांकन के संबंध में प्रयोगात्मक प्रवर्णनों का पाठ्यक्रम :

(i) महत्वपूर्ण अन्तरांग

(ii) घ्रमनिया

(iii) तंत्रिकाएं

(iv) मस्तिष्क के नैदानिक महत्व के क्षेत्र

(v) अस्प्रिल निदिष्ट विद्यु (बौनी लैडमार्क्स)

शरीर रचना विज्ञान के लिखित पर्चों का वितरण निम्नानुसार होना :

पर्ची I — उच्च शाला, सिर, चेहरा, ग्रीवा और मस्तिष्क।

पर्ची II — अच्छे शाला, बक्स, उवर और थोणि।

शरीर किया विज्ञान

शरीर किया विज्ञान के पाठ्यक्रम का प्रयोगजन सामान्य मानव जीव के विभिन्न अंगों और तंत्रों के हृत्यों, उनकी प्रक्रियाओं और उनके अन्तः संबंधों की, रोग में उनके विक्षेपों के आवश्यक परिवर्त्य के रूप में शिक्षा देना है और विद्यार्थियों द्वारा, उस समय जब कि सामान्य स्थिति से होने वाले विचलनों का ने निदान और उपचार कर रहे हों, उपयोग के लिए निर्देश के सामान्य मानकों से संज्ञित करना है। हांग्योपैथी चिकित्सक के लिए मानव जीव (ह्यूमन आर्गेनिज्म) एक समग्र एकीकृत शरीर, जीवन और मन है। और यथापि जीवन के अन्तर्गत सभी रासायनिक—भौतिक प्रक्रियाएँ आती हैं तथापि वह उम सबसे परे है। मानव जीव को अनु-प्रणित करने वाले प्राणीधार थल (शाइटल फार्से) के बिना रोग के कोई लक्षण नहीं हो सकते हैं और रोग की दशा में मुख्य रूप से यहीं प्राणीधार थल अव्यवस्थित हो जाता है। शरीर किया विज्ञान की शिक्षा, प्राणीधार

थलना और स्वास्थ्य में उनकी आधाररूप रासायनिक भौतिक प्रक्रियाओं के वर्णन के दृष्टिकोण से वी जानी चाहिए।

उत्क विज्ञान (हिस्टोलॉजी) पर कुछ ध्यान से नेक्टर बोर्डर्नीय है।

तंत्रिक

शरीरी रचना विज्ञान के सामान्य सिद्धांतों और तथ्यों के विषय में योजनाबद्ध रूप में लैखवरों का पाठ्यक्रम।

(i) उत्क विज्ञान (हिस्टोलॉजी) —जन्तु कोशिका (एनिमल सेल), उपकला ऊतक (एपीथीलियल टिशू), संयोजी ऊतक (कोनेक्टिव टिशू), वैशी ऊतक (मस्क्यूलर टिशू), तंत्रिका ऊतक (नर्वस टिशू)।

(ii) संकुचन (फ्लेशन) —सरल संकुचन - टिटैनी, आन्ति, संकुचन से सम्बद्ध मुख्य परिवर्तन। एंजिल और अनैंजिल विशेषियों के बीच हृत्यों का अन्तर, मुख्य काठिन्य (रिगर मार्टिस)।

(iii) पाचन तंत्र—जिसके अन्तर्गत आहार विज्ञान भी है। आद्य पदार्थ, विटामिन, ग्रासमली (ईसोफेगस), उवर, गृहणांश और धूत्रांश, और धूदांश, लाला ग्रियांय (सेलाइबरी ग्लैड्स), अग्न्याशय (पैकियाज) के हृत्य। लार का संषटन और उसके हृत्य, जठर रस (गैस्टिक जूस), अग्न्याशय रस, पिस और थांबरस का संषटन और उनके हृत्य, वीषाकांक्षों के हृत्य। आद्य पदार्थों का अवशोषण, यहातु (जिगर) के हृत्य। निगरण (निगलन), पुरस्तरण, मलोत्सर्ग की क्रियाविधि।

एग्जाइम की परिभावा और उसकी सामान्य क्रिया वसा, कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीनों का सामान्य जयापचय।

(iv) एवसन तंत्र :

स्वास प्रणाल, एवसनी और कैफ़ांडों की संरचना, एवसन क्रिया विधि, एवसन के दोराम गैसों का विनियम। एवसन वायु, पूरक वायु, सम्पूरक वायु, अवशिष्ट वायु, प्राण वक्षाता, अवसन, एवसावरोध और उसके प्रक्रम, ऊतक एवसन।

(v) परिसंचरण तंत्र :

(क) रक्त—उसके संषटन, लांहूत रक्त कोशिकाओं और रक्त कोशिकाओं का जीवनवृत्त, उनके हृत्य, रक्त का स्कंदन।

(ख) हृत्य—संरचना, तंत्रिका वितरण, हृद चक्र, हृद ध्वनि—उनका स्वास्थ्य और कारण—कार्य-संबंध, हृद रोध, विद्युत हृदं सेच (ई० सी० जी०)।

(ग) रक्त वाहिकाएं।

ध्रमनियों, शिराओं और कोशिकाओं का ऊतक विज्ञान। रक्त प्रवाह की क्रियाविधि।

नाई—उसके सामान्य लक्षण

रक्तदाव, वाहिका तान—वाहिका प्रेरक तंत्रिका क्रिया विधि। जालीय अन्तःकला संत्र का संक्षिप्त वर्णन और उसके हृत्य, तिली, अंतरा वाहिका स्कंदन की क्रियाविधि, रोगक्षमता (इम्प्युनिटी)। सामान्य उद्धीपनों के प्रति जीव प्रतिक्रियाएं।

(vi) लसीका तंत्र :

लसीका ग्रंथियों और वाहिकाओं की संरचना, लसीका का संषटन। लसीका प्रवाह की क्रिया विधि।

(vii) मूत्र तंत्र :

बृक्ष (गुरुदे) की संरचना और उसके हृत्य, मूत्र और उसके भौतिक लक्षण तथा रासायनिक संषटन, सामान्य/असामान्य घटक और उनका पता लगाना।

(viii) त्वचातंत्र

त्वचा की संरचना और उसके कृत्य। स्त्रेद ग्रंथियों—उनकी संरचना। स्त्रेद का स्थान।

(ix) जन्तु अप्सा। ऊपर रक्तक जन्तुओं में उसका विनियमन।

(x) आहिनीहीन ग्रंथियों। थाइराइड और परायाइराइड की संरचना और उनके कृत्य। अधिकृक्त (सुपरारीनल) और पियूच ग्रंथियों। अन्याशय (पैकियां) और मधुमेह।

(xi) तंत्रिका और तंत्रिका तंत्र।

(क) तंत्रिकाओं का वर्गीकरण

(ख) केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र

(ग) ममिक्त संरचना और प्रमस्तिक्त प्रान्तस्था (सेरिक्ल कोर्टेस), (प्रमस्तिक्त वृक्क श्वेत्र/प्रान्तस्था केन्द्र)

(घ) मैदूला, यांत्रिक प्रेरक, श्वसन और हृद केन्द्र

(ङ) अनुमस्तिक्त (सेरिक्लेम) संरचना और अनुमस्तिक्त के कृत्य।

(च) सुषुम्ना—सुषुम्ना में आरोही और अवरोही व्यपजनन के चिह्न। सुषुम्ना के कृत्य।

(छ) स्वचानित तंत्रिका तंत्र।

(ज) अनुकम्भी (सिम्प्लेटिक) तंत्रिका तंत्र।

(झ) पर्ण अनुकम्भी तंत्रिका तंत्र।

(xii) विशेष संबोधन :—

(क) नेत्र गोलक (आई बाल) के विभिन्न भागों की संरचनाएं और उनके कृत्य, दृष्टि रेटिनल (विष्टप्टल) प्रतिक्रिया (इमेज) की रक्षा। समर्जन की क्रियाविधि, अपकर्तन की सामान्य वृद्धियाँ।

(ख) वाह्य, मध्य और आन्तरिक कर्ण का श्रवण शरीर (हियरिंग अनाटोमी) और कृत्य।

(ग) स्वाद और गंध। जिह्वा के अंकुरक की विस्तरों और उसकी संरचना।

(घ) स्वाद तंत्रिका, ध्वनि तंत्रिका।

(ङ) त्वचा और पेशी संबोधन—अन्तांग (एण्ड आर्गन) की किस्में, त्वचा संबोधन, पेशी संबोधन की किस्में।

(xiii) जनन तंत्र—पुरुष जलनेत्रिय, नर्ती जलनेत्रिय, डिम्ब (बोद्धम) का निवेदन (फटिलाइजेशन), स्तन ग्रंथियाँ, रजोधर्म। जनन के संबंध में आहिनीहीन ग्रंथियाँ।

प्रयोगास्त्रः

(1) ऊतकों (ठिणू) और अंगों, अस्थि, उपास्थि (काटिलेज), कोशिकीय ऊतक शिरां, धमनियों, यहूत (जिगर), फेफड़े, पुळ डिम्बवाहिनी मली, सुषुम्ना तंत्रिका, लसीका ग्रंथि, तिल्ली, वृक्क की अनुप्रस्थ काट (ऊपर सैमसन)।

(2) रक्त किलों की नैयारी और उनका अधिरंजन। रक्त कोशिकाओं की पुर्ण और विभेदी गणना।

(3) हांमोग्लोबिन मापी और रक्तदाव मापी का उपयोग। तंत्रिका पेशी गारीर से संबंधित कुछ प्रयोगों का प्रबोधन।

(4) मूत्र के सामान्य, प्रसामान्य और असामान्य घटकों की गांधारिक परीक्षा।

टिप्पण : विद्यार्थियों से अपेक्षित है कि उनके पास सुनिश्चित ज्ञानीरूपिक तथ्यों और सुस्थापित भिन्नताओं का, उनके संबंध में ज्ञानितम और संविवादात्मक परिकल्पनाओं को छोड़कर, साधारण और कार्यसाधक ज्ञान हो। शरीर रक्तना विज्ञान के

सम्पूर्ण विवरण का अध्यापन एस० हेसीमन द्वारा प्रतिपादित जैव बल सिद्धांत (वाइटल फोर्म थोरी) के संबंध में जैव घटना और उनकी आधारभूत रासायनिक-भौतिक प्रक्रियाओं के वर्णन की दृष्टि से किया जाए।

शरीर रक्तना विज्ञान के लिखित पर्चे निम्नलिखित रूप से होंगे :—

पर्चा I —ऊतक विज्ञान, रक्त और लसीका, हृदयवाहिका तंत्र, जासीय अन्तः कला तंत्र, तिल्ली, प्रवस्तनतंत्र, मूत्र तंत्र, त्वचा, शरीर ताप का विनियमन, ज्ञानेन्द्रिय, तंत्रिका वेशी शरीर।

पर्चा II — अंतः स्नायी अंग, तंत्रिका तंत्र, जनन तंत्र, पाचन तंत्र, चयापचय, एन्जाइम, पोषण।

शी०एच०एम०एस०२ परीक्षा

विहृति विज्ञान और जीवाणु विज्ञान

विहृति विज्ञान और जीवाणु विज्ञान का अध्यापन अस्तन्त सतकंता से और विवेकपूर्वक किया जाना चाहिए। ऐसेपैरी में रोग की दशाओं के माल ऊतक विहृति विज्ञान और सूक्ष्म जीवी को महबूब किया जाता है तथा उसमें जीवाणु को रोगों का सोपानि कारण माना जाता है किन्तु होम्योपैथी रोगों को परिवर्तित संबोधन और कार्यों के रूप में अधिक्षमत जैव-विकित का गतिशील विज्ञान माल मानती है जिसकी परिणति घोर ऊतक परिवर्तनों में या अन्यथा हो सकती है। अतः ऊतक परिवर्तन स्वयं रोग का आवश्यक भाग नहीं है और तदनुसार वे होम्योपैथी में औषधि द्वारा विकितस्त्र के विषय नहीं हैं।

2. सुई पास्चुर और राट्वंट कोच की खोजों के बाद से आयुविज्ञान जगत में “रोगाणुओं को मारकर रोगमुक्ति कीजिए” ऐसे सरल सिद्धांत में विश्वास किया जाने लगा है। किन्तु उसके बाद के अनुभव से यह प्रकट हुआ है कि संक्रमण और वस्तुतः रोग फैलने के पीछे एक सुग्राह्य वात जिसे रोगी की ‘सुग्राह्यता’ कहते हैं, होती है। होम्योपैथी का मृक्ष संबंध विभिन्न प्रकार के सूक्ष्म जीव सम्बन्धी या अन्यथा, विकारी घटकों के प्रति मामव जीव की प्रतिक्रियाओं से है, अतः होम्योपैथी में रोग होने में रोगाणु या विषाणु की भूमिका का सर्वेषा गोण स्थान है।

3. फिर भी जीवाणु विज्ञान की जानकारी एक पूर्ण होम्योपैथी काय चिकित्सक के लिए आवश्यक है किन्तु इसकी आवश्यकता चिकित्साशास्त्र से मिश्र प्रयोजनों जैसे कि निवारण, पूर्वानुमान, रोग निवारण और सामान्य अवस्था के लिए है। इसी प्रकार विहृति विज्ञान की जानकारी रोग अवधारण पूर्वानुमान, रोगी के स्थानों और रोग के स्थानों के बीच विभेद करने के लिए तथा उसके लिए उपयुक्त होम्योपैथी की भाँति और शक्ति के समायोजन के लिए आवश्यक है।

4. विद्यार्थियों को विहृति विज्ञान में केवल एक व्यापक आधारिक प्रशिक्षण, जो विशेषज्ञता पूर्ण न हो, दिया जाना चाहिए। विहृति विज्ञान के अध्यापकों को यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि वे चिकित्सा व्यवसायियों को और विशेषज्ञ व्यवसायियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं न हो कि विहृति विज्ञान के प्रविधियों और विषेषज्ञों को। इस विषय के अध्यापन की विषयवस्तु जीवित रोगी, न कि शब्द, होनी चाहिए।

5. विहृति विज्ञान में विज्ञा का प्रयोजन यह है कि विद्यार्थी रोग स्थानों और आधारी विहृति विज्ञान के आधार के अस्तरसम्बन्धों का अप्य लगाने के लिए अधिकारप्रद स्थानों और वस्तुप्रक स्थानों के बीच सम्बन्ध स्थापित कर सके।

क. सामान्य विहृति विज्ञान :

(1) प्रस्तावना—विहृति विज्ञान का प्रबिल्य पुरानी विचारणाएँ और नई विचारधारा (होम्योपैथी की) विहृति विज्ञान का अध्ययन कैसे करें।

(2) स्वास्थ्य और रोग, रोग हेतुकी (इंटिमोलाजी), संक्रमण विशिष्ट अंगीकार (डैक्सिट एडाप्शन)।

(3) शोष ।

शोष की धारणा—शोष हेतुकी की घटना—शोष की रोग अधिक्षयिता । शोष का वर्दीकरण—विशेष ऊतक पृथक्ता का शोष परिसंचरण के विक्षेप ।

(1) अतिविक्ता (मक्रिय मा निष्क्रिय)

(2) घनाकृता (धान्मोसिस) और अन्तःशल्यसा जिसके अंतर्गत संक्रमण भी है ।

(3) शोफ

(4) ज्वर

(5) पुरुजनक ऊतक परिवर्तन । अतिवृद्धि और अतिविक्ता । विरोहण प्रक्रिया, विशेष संरक्षणार्थी का विशेषण ।

(6) अ्यपजमक ऊतक परिवर्तन :

शोष अध्रम उत्सेष्म—स्लेष्मामय अपजनन, काषायम अपजनन—अपजनन—हैमिलाइड अपजनन—कोलाइड अपजनन—वसा अपजनन—लिपाइड अंतः संचरण—ग्लाइकोजन अंतः संचरण—वर्णक परिवर्तन—परिलन—कोष ।

(7) प्रफूल्षी अ तक परिवर्तन :

(क) अर्बुद, हेतुकी वर्दीकरण, सुदम्य अर्बुद, तंतु अर्बुद, पेशी अर्बुद, वसा अर्बुद, अस्थिअर्बुद, उपास्थि अर्बुद, लसीकार्बुद, दुर्दम अर्बुद, (i) कैंसर (ii) साकोंमा, सिस्ट, संक्रमक कणिका गुलमता (इन्फैक्टिव फ्रैन्यूलामाटा) ।

(8) इम्युनिटी (रोगकमता)—स्वाभाविक रोगकमता—अंतिर रोग-कमता—सक्रिय रोगकमता—निष्क्रिय रोगकमता, भ्रक्षण कोशिका क्रिया, आप्सोनिन, रसायन अनुचलन—जीवाणु संलयन प्रतिविष्ट समूहिका, प्रैसिपिटिन—कोशिकाकालायिका (साइटोलाइसिन), किष्वम विरोधी, लिपाइड' विरोधी—एच्जिमोलाइसिस वैकटीरियोट्रेपिन्स, रोगकमता प्रतिज्ञ (इम्युनिटी एष्टी जेस) के सिद्धांत—सीधग्राहिता (ऐनाफिलेविसिस) स्तम्भता (शाक) ।

क. विशेष विहृति विज्ञान :

(1) रक्त के रोग—सामान्य बातें—प्रणाशी अरक्षता—अविकासी अरक्षता—हृरितरोग, एवेटरक्षता ।

(2) परिसंचरण तंत्र के रोग—हृदयावरण शोष—अर्थहृदयोष—घमनी कठिन्य—सिफलिसी महाघमनी शोष अमृता ।

(3) मस्तिष्कावरण शोष ।

(4) श्वसन तंत्र के रोग ।

(5) वृक्ष के रोग ।

(6) पोषण पथ के रोग—पेटिक भ्रण—हैवा—टाइफाइड, भ्रण—गङ्गमज भ्रण—अमीबी पेशिस—वण्डाजु भवित्वार ।

(7) जिगर का सिरोसिस ।

(8) अज्ञात कारणों से हुए रोग, बेरी बेरी—जनपादिक जलशोफ ।

ग. जीवाणु विज्ञान :

निम्नलिखित सूक्ष्म जीवियों की मार्फालोजी जैविकी और, उनके रोगजमक गुण :

पूर्णजन्य कार्बै, न्यूमोकाक्स और गोमोकाक्स बैसीलस कोलाई, बैसीलस कोमिस, बैसीलस, डिप्पीरिया, बैसीलस द्युब्कुलासिस, बैसीलस टिटेनस, बैसीलस टाइफासिस, बैसीलस डिस्ट्रेसिस, बैसीलस लेप्रास, बैसीलस पेटिस, बैसीलस कोमा, डिप्पोकाक्स इन्ट्रोसेल्यूलरिस, भैनेजाइट्स, माइक्रो कोक्स कैटारालिस, बैसीलस एंट्रेस । बैसीलस परायाइफोमस

घ. परजीवी विज्ञान :

निम्नलिखित की मार्फालोजी, जैविकी और उनके रोगजमक गुण :

(1) प्रोटोजुआ, एन्ट्रोमीबा, हिस्टोलिटिका ।

(2) बैस्टीगोफोर लीशवेनिया ।

(3) सोरोजोआ ज्वाइमोडिम वाशेक्स (मलेरिया) वी पाल्मीफ्लूरम

(4) क्लिमिलणता ।

(5) तिफलिस की स्पाइरोकोटाता, वाइल रोग, उन्नुरदंश ज्वर, ईकेलिया लम्ब्रीकाश्डिस—आक्सीयूरिस, वैरीक्यूलैरीज फाइलेरिया लम्ब्रूफाई—एन्क्लोस्टोमा द्वृजोडिनेल, टीमिया सारी नावा, टी० सोलियम, ईकिनोकोक्स ।

क. विषाणु :

बेचक, छोटी भाता, खसरा, जुकाम, हर्पीज, जोस्टर, लीब्र अग्र पोलियो, इंफ्लूएंजा, मस्तिष्कशोष, जानपादिक मंक्रामक यकृत शोष, प्रायपरिक अप्रैली न्यूमोनिया ।

प्रयोगास्थक

1. ऊतकों और अंगों के ऊतक-विकृति अध्ययनों के 20 प्रदर्शन ।

2. रोगजमक जीवों के सूक्ष्म-सूक्ष्मदर्शीय निर्देशों के 20 प्रदर्शन ।

3. रक्त, मूत्र, पस, घृक और निःनावों जैसे विकारी पदार्थों के संग्रहण, तैमारी और परीक्षा की तकनीक । इसके साथ-साथ प्रदर्शन किए जाएंगे ।

ग्राम आयुर्विज्ञान और विज्ञान

यह विषय विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक भूत्व का है ज्योंकि होम्योपैथी के काप-विकिसक सरकार हारा ऐसे क्षेत्रों में नियुक्त किए जाने हैं जहाँ उनको विकिस्ता विभिन्नक मामलों से साक्ष्य देनेके अतिरिक्त उनसे निपटना पड़ सकता है और उन्हें शब्द परीक्षाएं करनी पड़ सकती हैं । इस समय व्याप्त आयुर्विज्ञान के संबंध में जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह इन अवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपर्याप्त है ।

इस पाठ्यक्रम में लैक्चररों की एक शूंखला और प्रदर्शन होने जाहिए जिनके अन्तर्गत निम्नलिखित हों :—

1. विक्रिक प्रक्रिया :

चिकित्सा व्यायामास्त्र की परिभाषा, व्यायामय और उनकी अधिकारिता ।

2. चिकित्साकार ।

चिकित्सक रजिस्ट्रीकरण सम्बाधी विष्टि तथा चिकित्सा व्यवसायी और राज्य, चिकित्सा व्यवसायी और रोगी के शील चिकित्सीय सम्बद्ध, अनाचार जिसके अंतर्गत वृत्तिक गोपनीयता भी है चिकित्सा व्यवसायी और संघिन प्रान्तीय और संघीय विधान (अधिनियम) जैसे कि कर्मकार प्रतिकर अधिनियम, कृष्टरोग अधिनियम, लोक स्वास्थ्य अधिनियम, धर्ति अधिनियम, बालक विवाह अधिनियम, बोर्टर्स स्कूल अधिनियम, गर्भ का चिकित्सीय समापन अधिनियम, पागलपन अधिनियम, भारतीय साध्य अधिनियम, केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य अधिनियम, 1973 आदि ।

3. व्याप्त आयुर्विज्ञान :

जीवित और मृत व्यक्तियों की अंगों, अस्थियों, घम्बों आदि की परीक्षा और पहचान ।

मृत्यु : चिकित्सा-विभिन्नरक, मरणोसर चिन्ह, प्रक्रम और परिवर्तन, पूर्तिभवन (सड़ना), समीकरण, साधारणीकरण, मृत्यु के रूप, कारण, अधिकरण, प्रारंभ आदि । हमला, धाव, क्षति तथा हिंसा हारा मृत्यु, यवासावरोध मृत्यु, रक्त परीक्षा, रक्त धम्बे/गुक धम्बे, दुख, तनाद्रवदाह, तंद्रित आधान आदि मृतमरी, मर्मता, प्रसव, गर्भात, शिशुहत्या लैंगिक अपराध ।

राज्य के सम्बन्ध में उम्मता, जीवन और दुर्घटना वीमा/विवर विज्ञान : सामान्य रूप से विवाक्तता, विभिन्न विषयों के सक्षण और

उत्तराखण्ड, भरतीय रूप और परीक्षणों के विषय में लेकरों का एक पृथक पाठ्यक्रम होना चाहिए।

निम्नलिखित विषयों का अध्ययन :

ग्रनिज अस्त्र, संक्षारक ऊर्ध्वपातज, संखिया और उसके योगिक, ऐक्सीहाल, अफीम और उसके ऐक्सेलाइड, कार्बोलिक अस्त्र, कार्बनसोल-स्ट्राइड, कार्बनडाइआक्साइड, मिट्टी का तेल, कैलेविट्रिका (चांग का पौधा) कोकेन, बैलांडोना स्ट्रिनित तथा नक्स वामिका, प्लॉनाइट, ओलिएन्डर, मर्मिविष, पूर्विक अस्त्र, भिन्न विषाक्तता।

4. चिकित्सा-विधि परक शब्द परीक्षा :

मरणोत्तर रूप को नेत्रबद्ध करना, ग्रासायनिक परीक्षकों को सामग्री भेजना। प्रदोषायात्रा तथा रात्रायात्रिक परीक्षण के लिएरों का निर्वाचन। उन विद्यार्थियों को जो न्याय—आयुर्विज्ञान सम्बन्धी लेक्चरों के पाठ्यक्रम में उपस्थित हो रहे हैं, न्याय—आयुर्विज्ञान के प्रोफेसरों द्वारा किये जाने वाले चिकित्सा-विधिपरक शब्दपरीक्षाओं के समय उपस्थित रहने के सभी संभव अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। यह आशा की जाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम दस शब्द परीक्षाओं के समय उपस्थित रहेगा।

5. प्रदर्शन :

1. आपूष ।
2. कार्बनिक और अकार्बनिक विधियों का विवरण ।
3. विचेतने पारप ।
4. चिकित्सा-विधिपरक रुचि के बारे, आरेख, माडल, एम्सरे फिल्में आदि ।

निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान

(जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुर्विज्ञान भी है)

इन पाठ्यक्रम की शिक्षा आयुर्विज्ञान अध्ययन के तृतीय वर्ष में सेक्षरों, प्रदर्शनों और फौलड अध्ययन द्वारा भी जानी चाहिए। यह विषय अत्यधिक महत्व का विषय है और आयुर्विज्ञान अध्ययन की पूरी अवधि में विद्यार्थी का द्वान निरोधक आयुर्विज्ञान के महत्व और धारावाहिक स्वास्थ्य की अभियुक्ति के उपर्योग की और विलाया जाना चाहिए।

उसका कार्य रोगहर प्रयोजनों के लिए होम्योपैथी की औषधियों का निरैशन करना मात्र नहीं है, बल्कि समाज में उसे उससे अधिक व्यापक भूमिका निभानी है। उसे ग्रामीण और नगरीय दोनों ही क्षेत्रों की राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्याओं से भली भांति परिवर्तित होना चाहिए जिससे कि उसे न केवल रोगादृक्क के क्षेत्र में अपितु परिवार नियोजन सहित तिरोघप और सामाजिक आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में भी प्रभावी भूमिका निभाने के लिए उत्तराधिक सौंपे जा सके।

(i) ग्रामीण क्रियात्मक स्वास्थ्य विज्ञान :

(क) आहार और पोषण — स्वास्थ्य और रोग के सम्बन्ध में आहार/मंतुलित आहार/पोषण हीनता और पोषण संबंधी सर्वेक्षण। आहार संसाधन/वृक्ष का पास्चुरीकरण/सार्व अपमिथ्यन और खाद्यविरीक्षण, व्याध विवाक्तता।

(ख) वायु, प्रकाश और धूप।

(ग) जलवायु का प्रभाव— आरेता, तापमान, दाढ़ और मौसमविज्ञान सम्बन्धी अस्य परिस्थितियां—मुख भेत्र/अति भीउभाव का प्रभाव।

(घ) वैद्यकित स्वास्थ्य — (स्वच्छता, आराम, निप्रा, कार्य), गरिमिक, व्यायाम और ऊर्जाकटिक्षण क्षेत्रों में स्वास्थ्य की क्षेत्रभाँति के विषय में प्रशिक्षण।

(ii) पर्यावरण स्वच्छता :

(क) पर्यावरण और स्वस्थ

(ख) वायुमण्डलीय प्रदुषण — वायु धोधन, वायु विसंक्रमण, वायुवाहित रोग।

(ग) जल प्रदायन — खोल और उपयोग, अशुद्धिया और धोधन। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में मार्वजनिक जल प्रदायन। ऐप जल के मानक, जलवाहित रोग।

(घ) मलवाहन — गांवों, कसबों और नगरों में नरीके, सेपिटक टेक, सूखी मिट्टी शोचालय, ग्रीष्मवर मल व्ययन, मृतक का व्ययन, कचरे का व्ययन, भस्मीकरण।

(इ) मेलों और उत्सवों के अवसर पर स्वच्छता।

(ज) विसंक्रमण — निः संक्रामक गंधहर, रोगाणु धोधन, रोगाणु-नाशी। विसंक्रमण और निर्जीवाणकरण के तरीके।

(iii) भिरोधक आयुर्विज्ञान:

(क) संचारी रोग, ज्वर, ज्वर, बैचक, डिफोरिया, कुल्हरोग, यजमा, मनेरिया, कलाजार, फाइलेरिया, सामान्य विषाणु रोग जैसे कि जुकाम, खसरा, छोटी भाना, पोलियो, संक्रमी यकृत शोष, कृषि संक्रमण, आल्ज ज्वर (मोटी जागा) और वेविश के तथा ऐसे पशु रोगों के जो मनुष्य को संचरणीय हैं, निवारण और नियन्त्रण के सिद्धान्त। उनका बर्णन, उनके निवारण के तरीके द्वाया समर्पक, विकृक, कोडों, पशु फाउल्टियों आदि द्वारा उनका फैलाना। रोगनिरोध और टीके के सम्बन्ध में होम्योपैथी का दृष्टिकोण।

(च) रोग का नैसर्गिक इनिलास :

(iv) परिवार नियोजन — जननव विज्ञान, संचार के माल, ग्रामीण परिवार नियोजन कार्यक्रम। गर्भनिरोधकों के प्रयोग सम्बन्ध में जानकारी और दृष्टिकोण। जन संख्या और बुद्धि नियंत्रण।

टिप्पणि— फैल व्रेशन — जल शोधन भवंत्रा संक्रामक रोग। अस्पताल आदि।

होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका

होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका

अस्य मैटीरिया मेडिका की तुलना में होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका भिन्न है से त्रियां दिया गया है। होम्योपैथी में यह समझा जाता है कि शरीर के अलग-अलग अंगों या तंत्रों पर या पशुओं पर या उनके अलग-अलग अंगों पर औषधियों की किया का अध्ययन ऐसी किया के अधीन जीवन प्रक्रियाओं का एक आधिक अध्ययन मात्र है और उसके आधार पर हम औषधिय अभिकर्ता की किया को पूरी तौर से समझ नहीं सकते हैं। औषधि अभिकर्ता ही पूर्णत दृष्टि से अलग ही रहता है।

2. समग्र रूप से औषधिय किया की पूरी जानकारी तो स्वस्थ अधिकान पर गुणात्मक अंतर्विद्यी औषधिय प्रयोगों द्वारा ही दी जा सकती है और केवल इसी के द्वारा कियी व्यक्ति के मनः कायिक समग्र रूप के संबंध में विचारे हुए आंकड़ों को देखा जा सकता है और ऐसे ही समग्र व्यक्ति को औषधि किया की जानकारी दी जाती है।

3. होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका में प्रत्येक औषधि द्वारा उत्पन्न लक्षणों की एक कार्यप्रवर्ती व्यवस्था होती है जिसमें उनके निर्वाचन या अंतर संबंध के बारे में कोई सिद्धान्त या साधीकरण नहीं होता है। प्रत्येक औषधि का अध्ययन-संस्थिलात्मक, विश्वेषणात्मक और तुलनात्मक रूप से किया जाता चाहिए और तभी होम्योपैथी का विद्यार्थी प्रत्येक औषधि का अलग-अलग और समग्र रूप से अध्ययन कर सकता है तथा वह अच्छा औषधि निर्वाचक बन सकता है।

4. पालीक्रेस्ट और बिन प्रतिदिवन की बीमारियों के लिए अतिसामान्य रूप से बताई गई औषधियों का अध्ययन सर्वेष्यम कराया जाना चाहिए जिससे कि विद्यार्थी नियामन कालाओं में या बहिर्भूत दृष्टि के समय उसके प्रयोगों पर परिवर्तित हो सकें। उनके बारे में पूरी चर्चा की जानी चाहिए तथा सभी

तुलनात्मक और तंत्रियों का स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को उनकी जिया परिधि में और गार्डियालिंग तंत्रिय से अलग होना चाहिए।

ऐसी ओपरियों के बारे में जो कम गामान्य है और जो दुर्घट है, उनकी केवल स्पष्टीकरण चाहिए, और उनके भवत्व सहजार्थ गुणों और लक्षणों पर बल दिया जाना चाहिए। अपेक्षाकृत दुर्घट और कठिन ओपरियों के बारे में बाद में पढ़ाया जाना चाहिए।

5. दूसरी ओपरियों का बारे में जो कम गामान्य है और जो दुर्घट है, उनकी केवल स्पष्टीकरण चाहिए जानी चाहिए, और उनके भवत्व सहजार्थ गुणों और लक्षणों पर बल दिया जाना चाहिए। अपेक्षाकृत दुर्घट और कठिन ओपरियों के बारे में बाद में पढ़ाया जाना चाहिए।

6. चिकित्साशास्त्र पढ़ाते समय मैटीरिया डेडिका की ओर निर्देश करने रहने का प्रयास किया जाना चाहिए जिससे कि कम संख्या में ओपरियों की पहचान संबंधित ओपरियों की पूँछों से संघर्ष हो प्रकट हो जाए। विद्यार्थियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाए कि वे किसी बीमारी में बहेदू मैटीरिया डेडिका के संसाधनों का उपयोग करें और वे किसी विशिष्ट रोग के लिए कुछ थोड़ी भी ओपरियों का हो याद न करें। हेनीमन ड्रिटिकोग के सहारे वह (विद्यार्थी) न केवल प्रयुक्त सद्धारणों वाले और रोग में उनके रोगहर मृत्यु की उचित परिप्रेक्ष में समझने में उनकी मदद करेगा अल्कि जहाँ तक औपचारिक परोक्षणों का संबंध है वह ड्रिटिकोग उसके भार को भी हड्डा करेगा, अत्यथा वर्तमान प्रवृत्ति से रोगों के उपचार के प्रतिनियोगिक ड्रिटिकोग उपयोग होता है और यह आर्गेन्टन के अध्यापन के प्रतिकूल है।

मैटीरिया डेडिका के प्रयोग का प्रदर्शन बहिर्भूत रूपियों वा अस्पताल के बाहरी में रेंगियों के मामलों में किया जाना चाहिए।

तुलनात्मक मैटीरिया डेडिका और चिकित्साशास्त्र विषयक लेक्चर और दूसरी ओपरियों में गोरों की ओपरियों विषयक लेक्चरों के माध्यम संबद्ध एकान्त होने चाहिए।

7. ओपरियों के विषय में पढ़ाने के लिए कानेज की उद्दीपित संग्रह शीट (होर्मेटिक शीट) और अन्य निदर्शी विद्यार्थियों के समक्ष प्रदर्शन के लिए ग्रन्तने चाहिए। लेक्चर विलचन्स होने चाहिए तथा पाठ्यों और सामग्री की स्लाइडें प्रक्षेपित की जानी चाहिए।

8. क. प्रारंभिक लेक्चर . हाँस्योपैथी मैटीरिया डेडिका के अध्यापन में निम्नलिखित होने चाहिए :-

(क) हाँस्योपैथी मैटीरिया डेडिका का स्वरूप और उनकी परिधि।

(ख) हाँस्योपैथी मैटीरिया डेडिका के लोग, और

(ग) मैटीरिया डेडिका के अध्ययन के विभिन्न तरीके।

ख. अंपाधियों के विषय में शिवाय निम्नलिखित शीर्ष के अधीन दी जानी चाहिए।

(1) सामान्य नाम, प्राकृतिक वर्गीकरण, आशास, प्रयुक्त भाग, सैयारी

(2) ओपरिय पूर्वांग के लक्षण

(3) ओपरियों का नाक्षणिक-जिम्मेवाल विशिष्ट लक्षणों और वृत्तियों पर बल दिया जाए।

(4) ओपरियों का तुलनात्मक अध्ययन।

(5) पूरक, विरोधी, प्रतिकारक और सुमंगल ओपरियों।

(6) चिकित्सीय प्रयोग (अनुप्रयुक्त मैटीरिया डेडिका)

ग. शुश्नाक की बायोकेमिक चिकित्सा पद्धति के अन्तर्मात्र 12 ऊन (टिक्स) ओपरियों का अध्ययन।

परिशिष्ट 1

वित्तीय डी. एच. एम. एस. परीक्षा के लिए मैटीरिया डेडिका के पाठ्य विवरण में सम्मिलित ओपरियों की सूची:

* 1. एवंटेनम	38. यूफरेशिया
2. एकोनाइटम नैप	39. फेरम मेट
3. एसम्यूलम लिप	40. फेरम फास
4. हयुजा जिन	* 41. जेनमीमियम
* 5. एमियम मेफा	42. प्रेफाइटीज
6. एनो सांक	43. हीपर सल्फ
7. एमुमिना	44. हेलेकोरस
8. अमोनिया कार्ब	45. ह्यायोसियामस
9. एन्टीमोनियम क्राइ	46. इमेशिया
10. एटीमोनियम टाई	47. इपीकाक
11. एपिस मेनिकिका	48. काली विच
12. अर्जेन्टम बेट	49. काली कार्ब
13. अर्जेन्टम नाइट्रिकम	* 50. काली स्पोर
* 14. आमिका मोस्टाना	* 51. काली फास
15. आसेमिकम एल्ब	52. काली सल्फ
16. बीकैस बेट	53. लेकेसिंग
17. एरम ट्रिफ	54. लिडमपाल
18. बैकटीसिया	55. लाइकोपोडियम
19. बेराइटाकार्ब	* 56. मैतीरिया फास
* 20. बेलाकोना	57. मध्यरियस कॉर
21. बेवेंसिस ब्लोरेसिस	58. मध्यरियस सल
* 22. बीकैस	59. नैट्रम स्पोर
23. बायनिय एल्ब	60. नैट्रम फास
24. फैलकेरिया कार्ब	61. नैट्रम सल्फ
25. कैलकेरिया फ्लोर	62. नाइट्रिक एसिड
26. कैलकेरिया फास	* 63. नक्स बोमिका
27. कैलकेरिया सल्फ	* 64. फास्फोरस
* 28. कलेंडुला	65. प्लाटीना
29. कार्बो थेज	66. पोडोफाइलम
* 30. कास्टिकम	67. प्लसेटिला
31. कैमोमिला	* 68. रम टाक्स
32. सिना	69. मिकेली कॉर
33. सिनकोना आफ	70. मीरिया
* 34. कोलचिकम	71. साइलीशिया
35. कोलोमिथि	72. स्पारिया
36. ड्रोसेरा	* 73. सल्फर
* 37. उलकामारा	74. थूजा
	75. वेरेट्रम एल्ब

टिप्पणी: *अंकित ओपरियों 1 डी० एच. एम. एस. पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाए।

परिशिष्ट-2

वित्तीय डी० एच० एम० एस० परीक्षा के लिए 75 ओपरियों की सूची (परिशिष्ट 1) के अतिरिक्त सम्मिलित ओपरियों की सूची डी० एच० एम० एस० परीक्षा के पाठ्य विवरण में सम्मिलित की गई है।

1. एसेटिक एसिड
2. एकिट्या रासेमोसा

3. अर्गेन्नन मस	4. एग्जेन्स कैफटस
5. अम्ब्रावेरीशिया	6. एनाकार्डियम
7. आर्सेनिकम आयोड	8. विसमय
8. बोविस्टा	10. बीफटस जी
11. कैलकोरिया आर्स	12. कैम्फरा
13. केनाविम सेटाइवा	14. कैन्यरिन
15. कैसिकम	16. कार्बोनिक एसिड
17. कार्सीनोसिन	18. कालोफाइलम
19. कैलीडोनियम	20. सिकूडा विगेसा
21. कोक्यूलम शैक्षिक	22. कोनियम
23. ओक्स सेटाइवा	24. कोटेलस होरा
25. ओटन टिग	26. कूप्रम आर्स
27. कूप्रम भेट	28. डिजिटेलिस
29. यूपेटोरियम पफ	30. फ्लोरिक एसिड
31. र्सोनो चन	32. हेमामेलिस विर
33. हाइड्रस्टिस	34. आयोडिम
35. किसोबाहम	36. लैक केंगाल्यम
37. लिनियम टिग	38. मैनेशिया कार्ब
39. मैनेशिया फास	40. मेटोरिटिम
41. मेजेरियम	42. नेसकस मेसकस
43. म्यूरेस्ट	44. म्यूरियाटिक एसिड
45. नेट्स कार्ब	46. नक्स मेसकेटा
47. ओरियम	48. पेट्रोलियम
49. फास्फोरिक एसिड	50. प्लदम
51. सोरिम	52. पाइरोजिन्यम
53. रेनन्कुलस बल्ब	54. रोहोटेन्ड्रन
55. रियूमेक्स	56. रुटा
57. सेवाइना	58. सैम्युक्स
59. सेन्टोरिया	60. सरसापरिला
61. स्पाइजेलिया	62. स्टेन्ट भेट
63. स्टेकिमेनिया	64. स्टामोनियम
65. सिफीनियम	66. द्युबुरक्यूमिनम
67. वैरियोनियम	68. वेरेट्रम विर
	69. जिकम भेट

आर्गेन्नन और होम्योपैथी दर्शन

क्लीनिक का आयुर्विज्ञान आर्गेन्नन विकिसाशास्त्र के दर्शन की एक उच्चवस्तरीय है। यह आयुर्विज्ञान के द्वेष में संहिताशुद्ध रूप में एक मौलिक हृति है। आर्गेन्नन और होम्योपैथी के इतिहास तथा उसके संस्थापक की जीवनवृत्त के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाएगा कि होम्योपैथी मानवधा की एक सबसे कठिन समस्या के अर्थात् रोगों का उपचार और निरोगी जनने की समस्या के समाधान के प्रति विवेचन के आगमनात्मक नार्सूर्य तरीके के इतिहास के अनुप्रयोग की उपज है। अब निगमनात्मक और आगमनात्मक दोनों ही प्रकार के तर्कणात्मक के मूल सिद्धांतों का अच्छा परिचय आवश्यक है। तदनंतर आर्गेन्नन का अध्यापन ऐसी रीति से किया जाना चाहिए जिससे कि विद्यार्थियों को वे तर्कपूर्ण सिद्धांतों के निहितार्थ स्पष्ट रूप से समझ में आ जाएं जिनके द्वारा होम्योपैथी का निर्माण हुआ और जिनके आधार पर ही होम्योपैथी विकिसा व्यवसायी को प्रत्येक रोग के मामले में उपचार करने में अपना वैनिक कार्ब सरलता से और सुविश्वार्द्धक चलाना होता है।

कायचिकित्सक के रूप में प्रयोगात्मक कार्ब में मार्गदर्शन के लिए व्याशहारिक भागों को भलीभांति समझ कर योग कर देना चाहिए।

2 ई० एच० एम० एम० परीक्षा

1. प्रारंभिक लेक्चर—10 लेक्चर

विषय :

1. होम्योपैथी क्या है?

यह विकिसाशास्त्र का एक विशेषरूप मान्य नहीं है। यह आयुर्विज्ञान की संपूर्ण पहिति है और जीवन, स्वास्थ्य, रोग, उपचार तथा रोगमुक्ति के प्रति इसका अपना सुस्पष्ट दृष्टिकोण है।

इसका जीवन, स्वास्थ्य, रोग, उपचार और रोगमुक्ति के प्रति पावन, व्यक्तिप्रक और गत्यात्मक दृष्टिकोण।

इसका पूर्णतः तकङ्गुण और वस्तुपूर्ण आधार और वृष्टिकोण।

होम्योपैथी आयुर्विज्ञान की एक वस्तुप्रक और तर्कपूर्ण पहिति है।

होम्योपैथी का दृष्टिकोण और उसके तभीके सर्वथा वैज्ञानिक हैं।

अबलोकित तथ्यों और आंकड़ों पर तथा ऐसे तथ्यों और आंकड़ों से अभिन्न रूप से सम्बद्ध निगमनात्मक और आगमनात्मक तर्क पर आधारित है।

2. सभी निवानपूर्ये और परानैदातिक विषयों के प्रति होम्योपैथी का सुस्पष्ट दृष्टिकोण।

3. सभी निवानपूर्ये और परा निवानिक विषयों के बारे में प्रारंभिक विचार, उनके पारस्परिक मंध्य और संपूर्ण जीविन प्राणी से उनका संबंध।

4. रोगमुक्ति और स्वास्थ्य के प्रयोगन के निए होम्योपैथी के मिद्दांतों के दक्षतापूर्ण प्रयोग के उद्देश्य से इन विषयों के आवश्यक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने का महत्व।

5. होम्योपैथी की गत्यात्मक फार्माकोलोजी (प्रविंग) और भेषजी (फार्मसी) के सुभिन्न आवश्यक तत्व।

6. डेनिमन का आर्गेन्नन, पांचवा और छठा संस्करण : II ई० एच० एम० एम० पाठ्यक्रम में सूक्ष्म 1 से सूक्ष्म 145 तक पढ़ाए जाने चाहिए, किन्तु परीक्षा केवल सूक्ष्म 1 से सूक्ष्म 70 तक के भीन हीनों चाहिए।

3 ई० एच० एम० एम० परीक्षा

आर्गेन्नन और दर्शन

सैडाटिक

1. हनिमेन का आर्गेन्नन पांचवा और छठा संस्करण—सूक्ष्म 1 से 294 तक।

2. ह्यूज की पुस्तक 'दि प्रिसिपल एण्ड प्रैप्क्टस आफ होम्योपैथी' की प्रस्तावना। प्रोफेसरों से उत्तुरोष है कि वे आर्गेन्नन पर अपने प्रारंभिक लेक्चरों में विद्यार्थियों के मात्र में उन तर्कमंगत सिद्धांतों के निहितार्थों की जित पर होम्योपैथी का निर्गण हृआ और उसकी रूपरेखा तैयार की गई तथा पश्चिम में आयुर्विज्ञान के विकास के इतिहास और उसमें इनिमन के योगदान की बात की बेंदारू जिसस कि वे आयुर्विज्ञान के भैव्र में होम्योपैथी के, उसके मग्नरूप में, स्थान का और हनिमेन के जीवन को भी मूल्यांकन कर गके।

3. होम्योपैथी दर्शन : ---

(क) होम्योपैथी दर्शन पर केस्ट के लेक्चर,

(ख) स्टूडर्ट अमो-होम्योपैथी दर्शन पर लेक्चर, और लेख 'दि जीनस अफ होम्योपैथी',

(ग) एच० राबर्ट कृत थार्ट आफ कमोर वाई होम्योपैथी,

(८) चिकित्सा विकान (इन्हें) ।

होम्योपैथो दर्शन के लैक्चरी दौरान निम्नलिखित विषयों को स्पष्ट किया जाना चाहिए :—

- (१) होम्योपैथी का प्रविष्टि
- (२) होम्योपैथी या तक ।
- (३) जीवन, स्वास्थ्य, रोग और अस्वास्थ्य ।
- (४) मुगाहता, प्रतिक्रिया और रोगक्रमता इच्छूनीटी ।
- (५) ताज़ा और चिरकारी मिजाज़ के होम्योपैथी सिद्धान्त का सामान्य विक्लीन विकान ।
- (६) होम्योपैथी वर्षन ।
- (७) शक्तिकरण और अस्थल्प (एनफैन्टिसिमल) खुरकी और औषधि शक्ति ।
- (८) होम्योपैथी दृष्टिकोण से रोगी की परीक्षा ।
- (९) कुल लक्षणों का महत्व और उनका जटिलताएँ ।
- (१०) लक्षणों का मूल्य ।
- (११) होम्योपैथी रोग घृदि
- (१२) श्रीरथि का प्रभाव इन्हें के बाद पूर्वानुमान ।
- (१३) द्वितीय नुस्खा ।
- (१४) कठिन और ठीक न होने थाने केरा—उपशमन ।

4. आर्गेनन की प्रस्तावना (पांचवा और छठा संस्करण) ।

5. होम्योपैथी का इतिहास—हेनिसन के जीवनकाल के दौरान विद्यमान आयुर्विज्ञान, हेनिसन का प्रारंभिक जीवन, विभिन्न उपचार पद्धति से उसको हुई निराशा, “विष विष को मारना है” सिद्धान्त के बारे में उसकी खोज, हेनिसन के जीवन के अंतिमकाल का इतिहास, विभिन्न देशों में होम्योपैथी का प्रारंभ । होम्योपैथी के प्रशंसक और उनका योगदान । होम्योपैथी का प्रद्वालन विकास । होम्योपैथी में वर्तमान विचारशास्त्र । होम्योपैथी का अन्य विकित्या पद्धतियों पर प्रभाव ।

6. डीनमन की कृति “क्रानिक डिजोजेज” ।

विषयवाच :—

- (क) काय चिकित्सक को सहायता और उच्चतम प्रादर्श रंगमूल्कि—सूत्र 1 और 2 ।
- (ख) कायचिकित्सक का ज्ञान—सूत्र 3 और 4
- (ग) रोग का ज्ञानकारी जिससे नकेत मिलता है—सूत्र 5 से 18 तक ।
- (घ) आपधिया का ज्ञानकारी—सूत्र 19 से 21 तक ।
- (ङ) उपचार के अन्य लक्षणों की मुलता में होम्योपैथी उपचार के नर्सांकों का मूल्यांकन—सूत्र 22 से 69 तक ।
- (च) सारांश—रोगमुक्ति के लिए तंत्र शर्तो—सूत्र 70 ।

7. आर्गेनन के प्रयोगारमक भाग चिपकल लेखकों को निम्नलिखित विषयों के अधीन बाट कर पढ़ाया जाए :—

- (क) रोगों को ठीक करने के दैश्य से क्या जानना आवश्यक है नवा रोगी वृत्त लेने का तरीका—सूत्र 71 से 101 तक ।
- (ख) औषधि का रोगजनक भवित्यों अर्थात् औषधि प्रविष्टि अध्ययन औषधि का ज्ञान विषय प्रकार प्राप्त किया जाए—सूत्र 105 से 145 तक ।

(ग) टाक औषधि चुनाव कैसे किया जाए—सूत्र 147, 148, 149, 150, 153, 155 ?।

(घ) सहा भावा—सूत्र 157, 160, 161, 162, 163, 164, 169, 171, 173 ।

(ङ) स्थानीय रोग—सूत्र 186, 187, 190, 191, 196, 197, 199, 201, 202, और 203 ।

(च) चिरकारी रोग—सूत्र 204, 206 और 208 ।

(छ) मानविक रोग—सूत्र 210 से 230 तक ।

(ज) सविरामी रोग—सूत्र 231, 232, 238, 240 से 242 तक ।

(झ) आहार, रिधान और औषधि के उपयोग के रूप—सूत्र 245 से 248 तक, 251, 253, 259, 262, 263, 269, 270, 272, 275, 276, 280, 286, 288, 290, 291 ।

तुर्तीध ३१० एवं ३२० प्रमाण विषयों में आर्गेनन और होम्योपैथी दर्शन विषय के लिखित प्रश्न पत्र में होंगे :—

पर्वा 1—आर्गेनन की प्रस्तावना

सूत्र 1 से 294 तक ।

पर्वा 2—होम्योपैथी औषधि, होम्योपैथी वर्षन और चिरकारी रोगों या इतिहास ।

प्रयोगारमक

रोगी वृत्त लेना :—

मियास्ट्रीटिक विद्यान के लिए एक केत्र ।

III श्री० एस० एस० परोदा

निकिता व्यवसाय

होम्योपैथी का रोगों के प्रति एक मुमिन दृष्टिकोण है । इसमें रोगों को न तो उसके प्रमुख लक्षणों को आधार पर और न गरीब के किसी अंग या भाग के रोग के आधार पर पहचाना जाता है । वह रोगी को समग्र रूप से देखती है और रोगी द्वारा प्रशंसित लक्षणों की समग्रता ही उसके रोग की दृष्टिकोण है । अतः होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसायी के लिए व्यान का कोई महत्व नहीं होता है कि रोगी जिस दशा से सबके निधि की दृष्टिकोण है उसका नाम क्या है ।

होम्योपैथी का आधारभूत सिद्धांत यह है कि वह रोगी का उपचार करती है न कि उसके रोग का । यह गिरावं विद्यायियों को व्यावहारिक समझाया जाता चाहिए और जब उनमें इस दृष्टिकोण की जड़ें जम जाएँ तभी वे सच्चे होम्योपैथी चिकित्सा व्यवसायी बन सकते ।

कायाचिकित्सा शत्यत, एक व्यावहारिक विद्यान है और इसका अल्ला ज्ञान कथाओं की बजाए रोगी शरण्यों के निष्ठ व्याप्ति किया जा सकता है । अतः यह साक्षात्कारी वरकरी चाहिए कि महाविद्यालय में विद्यायियों के अंतिम धरण के अध्ययन क्रम के दौरान उन्हें सधन नैदानिक प्रशिक्षण दिया जाए ।

ज्वर

प्रोटोजुआ मन्त्रमण द्वारा कारित गामाय प्रकार के ज्वर, भलेरिया, लैन्कवाटर ज्वर, लीशमैनिया, यावाजार, जीवाणुन संक्रमण व्याय कारित ज्वर, प्रमस्तिकाकृ भेन (भरितोसाइटल ज्वर, अंग ज्वर, बेनिलग कोलाई मंक्रमण, स्पार्कोकीटा संक्रमण व्याय कारित ज्वर, सिफिलिस, यिणाण संक्रमण द्वारा कारित ज्वर, छसरा (भीजिल्स, जर्मन मीजिल्स, छोटी

माता, बेचक गोपीनाथ (बैंकसीनिया), भौतिक और रासायनिक कारएं कारा कारित रेंग, अकाश हेतु बाले ज्वर, सेप्टिसीनिया, पाइमिन, परिसी-येलस, प्लेग ।

परिसंचरण तंत्र

व्यक्तिपरक (मडेंटिटर ध्वनि, वस्तुपरक, चिन्ह सामान्य चिन्ह, नाड़ी, रक्तदाब, नाड़ी तंत्र, हृदय की भौतिक परीक्षा, शरीर रक्तमा संबंधी नियन्त्रिया, निरीक्षण और परिस्पर्शन, हृदय स्पंड दक्षिण नियन्त्रण स्पंडन, अन्य स्पंडन, अविजठर (एपिगैस्टिक स्पंडन, शिरा स्पंडन, उप्पुपैंट-रेंग (विल) परिस्ताइन (परकशन), हृदय मन्त्राता, हृदय परिश्रवण असामान्य हृदय व्यनियोग, मर्म, हृदय बाह्य व्यनियोग, हृदय की उपकरण परीक्षा, पॉलीग्राफ, विद्युत हृदयलेख, हृदय की एक्स रे परीक्षा, हृदय क्षमता परीक्षण, हृदयवाहिका रोग, धृक्कन, कट्टवास, भूर्छा, श्यामा (सापनीसिसी), अतालता, हृदयवादरणशोध, अस्तहृदयशोध, कपाटिकी रोग, सापेक्ष, निवान, अन्मजास हृदय रोग, हृदयपेशी रोग, धूमनी रोग, अतिरिक्तदबी हृदय रोग, हृदयल, हृदयपेशी रोधातल एन्ड्रोरिजन, वाहिका ब्रेकरोग, फूफूकुस धमनी रोग, विशेष दशाओं में हृदय, हृदय की अविकृदि और विस्पारण, परिसंचालन पात, हृदयवाहिका रोग का पूर्वानुमान ।

प्रवासन तंत्र

व्यक्तिपरक घटना, आसी, वक्ष पीड़ा, कट्ट श्वास, थक, रक्त निर्झायान, कठ्ठे प्रवासन मार्ग की परीक्षा, माक, कंठ, प्रयत्नी (फैरिनस) टांसिल, स्वर यंत्र (सैरिंग्स) फेफड़ों की भौतिक परीक्षा, निरीक्षण, परिस्पर्शन, परिस्ताइन, परिश्रवण, श्वास, ध्वनि, स्वर अनुनाद, बाह्य व्यनियोग, विशेष व्यव्याहार, फुफूकुसी रोग, एपिस्टेमिस, नासाशोध, ग्रसनीशोध, डान्सिस शोध, एडिनाइड, स्वरयंत्र शोध, डिप्पीरिया, काली आसी, श्वास प्रणाल-शोध, श्वसनी विस्फार, श्वसनी रोग, दमा, ऊँचा कटिंघंडीय, इयोसिनो-फोलिया, न्युमोनिया, फूफूकुस शोध, फेफड़ों का फोड़ा, फेफड़ों का फेंगोन, फूफूकुस यथमा, बोतलसीरि, फूफूकुस रोधातल, फूफूकुस निपान, फूफूकुस अर्द्धव, फूफूकुस धुलिमयता, फेफड़ों का सिफिलिस, आण फूफूकुस रोग, प्ल-रिसी, जटवास, रक्तवास, वस्त्रवासीका वक्ष, बातवडा मध्यस्थल आकर्ष, मध्यस्थलानिका अवैद ।

पार्वन तंत्र

व्यक्तिपरक घटना, भूख और प्यास, निगरण कट्ट, उदर पीड़ा, अन्य अनुविद्याजनक संबंधना, शूल निस्तानिका, भूतली और बमन, रक्तबमा, प्रवाहिका, कड़ज, आंख बाधा, मख श्वास, ग्रासनली, उदर शरीर की परीक्षा, निरीक्षण, परिस्पर्शन परिस्ताइन परिश्रवण, उदर, आंख मलाशय परीक्षा, मल परीक्षा, थक्कुत रोगों की भौतिक परीक्षा और सक्षण, पित्तशय अंतर्वस्तु परीक्षण, एक्सरे परीक्षा अम्याशय, सामान्य पोषण, रोग, पायो-रिया, दंत डाल्ब, मुखपाक, जिहवा, लाला ग्रंथियां, ग्रासनली, उदर आमाशय कैसर, उदर विस्फारण, जठर निर्म बाधा, तीक्र प्रवाहिका, चिरकारी प्रवाहिका, हैजा, स्पू, शेषांकशोध, पेचिका, बूद्धांतशोध, बृहदांत के अन्य रोग, अविनमोध, आशयभ्रंश, निष्क्रिय रक्ताधिक्य ।

मूत्र प्रवानन तंत्र

व्यक्तिपरक घटना, मूत्रण, बृक्षों का भौतिक परोक्षण, सामान्य बृक्षों की परीक्षा, हीमोग्लोबिनमेह, काइलमेह, पाणिका शोध, बृक्ष के रक्तनधर रोग, यूरिनिया, जननाली तंत्र, गोनोरिया, सिफिलिस ।

शाहिनीहीन गंभियाँ :

लीहा बृद्धि की भौतिक परीक्षा, हृष्णिन रोग, जलवायु संबंधी न्यूूं, बादशाह ग्रंथि, मिक्सिडीमा क्रेटिनता, नेक्टोत्सेधी, ग्रेसग्रंड, एप्लिसन रोग, डायारिट्रीज में जिल्ड्स ।

रक्तोपादक तंत्र ।

रक्त कोशिकाएं, सांहित रक्त कणिकाएं, रक्त रंग, प्रणाशी अरक्तता, लघु कोशिका अत्यवर्णी अरक्तता, रक्तसंतापी अरक्तता, बहुलंहित कोशिका-रक्तता, अंतराश्वासालबद्धता, श्वेत रक्त कणिकाएं, ल्यूकीमिया, कर्णीश्वेत कोशिकाहीनता, परप्पूरा, हीमोफिलिया, स्कर्वी ।

त्वचा तंत्र :

त्वचा विस्फोट, स्केबीज, ल्यूजिं जोस्टर, स्थानिक विस्फोट, त्वचा विस्फोट भृत्यत स्वामानिक रोग, सिपिलिम, बुण्डरोग, गेलर्जी, एक्जीमा, ल्यूचीय लीशमेनीयता, अज्ञात हेतु बाले विफोट, सोरिनामिस, ओपेडि विस्फोट, शोफ, जानपदिक जलणोंक ।

जलन तंत्र :

अध: पृष्ठ बेदना, अस्थियो के रोग, सिफिलिस, अस्थिमज्ज गांधी, जोड़ों के रोग, अविनिर्विष्ट मन्त्रिणीशोध, संकामी सन्धिशोध

तंत्रिका तंत्र :

शरीर रचना और शरीर क्रिया, शारीरिक परंपरा, प्रमस्तिक भूल तरण, प्रमस्तिक लक्षण, करोटि तंत्रि का रोग मस्तिष्कावरणशोध, अन्त-करोटि अर्बुद, प्रमस्तिक चनालता, अस्तःशल्यता, रक्ततापाव, तंत्रिका-तंत्र सिफिलिस, मस्तिष्कशोध, विषाणुज रोग, असामान्य वेशी गति अवकुंचन, मुषुम्भा रोग, सुप्युस्ना तंत्रिका रोग, सुप्युस्ना तंत्रिका रोग, सुप्युस्ना तंत्रिका रोग ।

तंत्र अथ गंभियाँ, मानसिक रोग, विक्रिप्ति । ओपेडि विषय के लिखित पर्चे निम्नलिखित रूप में होते हैं :—

पर्चा 1. — संकामक रोग, एन्डोकाइट संत्र के विकार, चायपचय के रोग, हीमता रोग, धाचन तंत्र के रोग, रक्त ध्लीहा और लसीका गंभियों के रोग तथा ऊर्ध्वकरिमधीय रोग, हीमोपोरीथी चिकित्साशालन ।

पर्चा 2. — चलन तंत्र के रोग, तंत्रिका तंत्र के रोग, हृदयवाहिका तंत्र के रोग, मूत्र प्रजनन तंत्र के रोग, मामान्य त्वचा रोग, बालक रोग हीमोपोरीथी चिकित्साशालन ।

शाल्य क्रिया

जहाँ ओपेडि असफल होती है वहाँ शाल्य क्रियान का प्रारम्भ होता है। शाल्य धमों के ऐसे रोग जिनके लिए यांत्रिक कौशल अपेक्षित है, वस्तुतः शाल्य क्रियान के भेदों में आते हैं किन्तु यद्यकैवा जब क्षति दृष्टी विस्तृत या व्रेत्ति होती है कि उसके परिणाम स्वरूप जीव में गतिशील प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है तो उसके उपचार के लिए गतिशील आवश्यक हो जाती है ।

शाल्य क्रिया रोग के परिणामों को हूर करती है किन्तु शुल्तियाँ द्विकृति को ठीक करने तथा अनुभव या जटिलताओं के निवारण के लिए शाल्यकर्म पूर्व और शक्ति कार्मांतर उपचार आवश्यक है। अधिकांश दशाएं ऐसी होती हैं जिनके लिए हीमोपोरीथी में आल्सरिक दशाएं पर्याप्त होती हैं, इसलाग हीमोपोरीथी का प्रविष्य गहरा अधिक व्यापक है साथा उस सीमा तक शाल्य क्रिया का प्रविष्य रींसित है। किन्तु ओपेडि के पूरक के रूप में शाल्य क्रिया का हीमोपोरीथी में अपना एक निपिचत स्थान है और तबनुसार उसकी शिक्षा दी जानी चाहिए ।

शाल्य क्रियान के सामान्य मिद्दान्तों और उसके अध्यवसाय के बारे में एक अवस्थित पाठ्यक्रम सम्मिलित क्रिया जाना चाहिए जिसमें निम्नलिखित विषयों पर लेखाचार हो :—

(क) सामान्य शाश्वतकर्म प्रक्रिया :

शाल्य रोगी की परीक्षा । अपूर्ति और पूर्तिराधि, शाल्यकर्म में विसंक्रमण धमकीक, रोगी को शाल्यकर्म पर नियंत्रण, शक्ति कर्म व फैसलोंक में शाल्यकर्मांतर उपचार,

(1) शाल्यकर्मोंतर जटिलताएं ।

(2) शोध, संक्रमण, पृथृता, शस्त्रकर्म रोगों का जीवाणु विज्ञान, रोग-क्षमता,

(3) अधिनियिष्ट और विनियिष्ट संक्रमण।

(4) क्षतिया, नील, धाव, रक्तस्राव, आधात, निपात, दग्ध, लप्तद्रवदात् ।

(5) प्रणोद्यति और प्रीन।

(6) मामान्य अर्बुद, सिस्ट।

(7) अस्थियों का क्षतियां, अस्थिभंग और संधिअस्थिति के संबंध में मामान्य बातें ।

(8) मंथि की क्षतियों के संबंध में मामान्य बातें ।

(9) संधियों और किंवेष रूप से नितम्ब संधि के रोग ।

(अ) प्रादेशिक शस्त्रकर्म :

(1) मस्तिष्क और उसकी कलाओं की क्षतिया और रोग, मस्तिष्क का संधटन, मस्मीडन, शोने और विदीर्घ होना, अन्तः कपाल रक्तस्राव ।

(2) सुषुमा की क्षतियां और उसके रोग, सुषुमन का यक्षमा रोग (सुषुमा यक्षमा,) गोआस और कटि कोड़ा ।

(3) हृदयों और लेहे की विरुद्धप्राणी—चण्डोण्ठ घंड तालु, जबड़ की क्षतियां, जबड़ की संधिअस्थिति ।

(4) लासाप्रयिण्यों का केंद्र जिह्वा संक्रमण, यायराइड भौर पैग-यायराइड अर्बुद ।

(5) तीव्र कर्णमूल शोष—कर्णमूल विद्वधि, मध्यकण शोष ।

(6) दांसिलों का रोग—दांसिल उच्छेषन, प्रस्त्रेक—प्रसन्नी फोड़ा, एडिनाइड ।

(7) नाक के रोग, तीव्र और चिरकारी नासाशोष, पटीय दोष, पालीपस ।

(8) ग्रासनी का निकृचन, निगरण कट्ट, अणिपिलना (ऐकेलेपिया)

(9) स्वरयंत की परीक्षा, सुवम और दुर्वम वृद्धिया, डिफ्टीरिया, श्वास-प्रणाल छेदन, कठझार शोष ।

(10) ग्रीवा के संक्रमण, ग्रीवा संयोजक-अतिशोष, ग्रीवा के आसापास वृद्धियों, घेघा यायराइड उच्छेषन ।

(11) वक्ष की क्षतियां, पसलियों का अस्थिभंग, असिक्तात्म वात स्फीति ।

(12) ल्लूग और फेफड़ों के रोग ।

(13) स्तन रोग, तीव्र मंकासी स्तन शोष और स्तन फोड़ा, स्तन की वृद्धिया, सरल अर्बुद, दुर्वम अर्बुद, स्तन के कार्सीनोमा का शस्त्रकर्म ।

(14) उदरोय प्रश्नकर्म, मामान्य बातें, खोड़ने और ठोस अन्तरोग की क्षतियां, तीव्र पर्युवर्या शोष, अस्तः पर्युद्या फोड़ा, शोणि फोड़ा, अवस्थाव्यवह फोड़ा और दाहिने हस्तियक फोसा से फोड़ा ।

(15) हृनिया—नैवार्निक दशा और जटिनानां शावित्र हृनिया, चिपाशिन हृनिया ।

(16) आहाशय और ग्रहणी व्रण तथा कंसर, शस्त्रकर्म द्वारा उपचार के लिए लक्षण ।

(17) आत्र रोगों के शस्त्रकर्म पहलू, आंख छिदण-आंख बाधा और आंखबद्धना स्थैतिकता ।

(18) पुङ्क के रोगों का शस्त्रकर्म पहलू—एपेन्डीसाइटिस ।

(19) तीव्र उदर रोग के केसों का अन्यैषण और उनकी परीक्षा, उनका सापेक्ष निदान ।

(20) जिगर का कोड़ा—जस्तकर्म द्वारा उपचार, पिनाशमरो (पित्ताश-मरिता) ।

(21) मलाशय : अर्बुद और कैसर, बवासीर, मलाशय कर्सीनोमा का ध्रश, गुदा, विदर और मालद्रण ।

(22) मूत्र पथ की परीक्षा के तरीके, वृक्षक अस्थर्मा मूत्राशय विदार, अस्थारी विवृत मूत्राशय, मूत्राशय में आंगनुक शल्य, मूत्राशय अस्थरी, मूत्राशय की क्षतियां और उसके निकृचन-मूत्र का परिचाव, प्रास्टेट वृद्धि, प्रास्टैट की दुर्वमता, वृषण-कोण अर्बुद, जलवृषण और अप्रसीति ।

(23) नेत्र के सामान्य रोग, नेत्र प्रेषणमला, स्वच्छ मंडल, सैस, परितारिका, दूषिट पटल, नेत्रपोत्तक पेशियों के रोग, ग्लूकोमा ।

टिप्पणी :—शस्त्रकर्म के बास प्रयोगात्मक प्रदर्शन । शस्त्रकर्म के नियन्त्रित पर्यावरण में होने :—

पर्वा—I :

शोष, विनियिष्ट और अधिनियिष्ट रोग, रक्तस्राव, आधात, दग्ध, प्रण और प्रेंग्रीन । अर्बुद, सिस्ट । तंत्रिकाओं की क्षतिया और उनके रोग, पेशियों, कंडरा और एलेप्युर्डा, लसीका, वाहिका क्षत्र के जिसके अन्तर्गत प्लीहा (तिली) भी है, रोग ।

सिर और ग्रीवा शस्त्रकर्म जिसके अन्तर्गत यायराइड स्तन और जन्मजात विप्रमत्ताओं का शस्त्रकर्म भी है । उदरीय शस्त्रकर्म जिसके अन्तर्गत आमाशय तंत्र का शस्त्रकर्म भी है ।

अस्थि और संधि शस्त्रकर्म । सुषुमनकी क्षतियां और उसके रोग ।

अंगों की विरुद्धप्राण ।

मध्य-शस्त्रकर्म ।

जनन-मृत्र तंत्र शस्त्रकर्म सथा होम्योपैथी चिकित्सामान्य ।

पर्वा—II :

कण मसा कठ विज्ञान, रक्तिज रोग, नेत्र विज्ञान, दंत्र विज्ञान तथा होम्योपैथी चिकित्सामान्य और होम्योपैथी में शस्त्रकर्म का क्षेत्र ।

प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान

इन विषयों के बारे में होम्योपैथी का दृष्टिकोण वर्षा है जो औपचारिक और शस्त्रकर्म के बारे में उसका है । प्रसूति और स्त्री रोग संबंधी केसों के संबंध में कार्य करने के लिए होम्योपैथी चिकित्सा अधिकारी को स्थानिक दण्डाओं और प्रमदी केसों के, जिनमें जीवन रक्षा के उपाय के रूप में या यत्क्रिय आधारों को दूर करने के लिए शस्त्रकर्म आवश्यक है, निशान के लिए अन्वेषण के विशेष नैशानिक तरीकों का प्रयोग अवश्य दिया जाना चाहिए ।

किसी भी स्त्री में पारिवारिक हिस्टोरिया (पिक्टॉन) के उन्मूलन या गर्भ की ऐसी विकसितियों के जो संभवना के दौरान उसमें उत्पन्न हों, शोषन के लिए सर्वोत्तम समय और इस पर विशेष रूप से बल दिया जाना चाहिए ।

विद्यार्थियों को नवजात पिण्ड के केस की शिक्षा भी दी जानी चाहिए । इस स्थैतिक पर यि मात्रा और पिण्ड एकत्र जैव इकाई है और यह यि विशिष्ट निकाट मनोविज्ञानिक संबंध पिण्ड के जीवन के कम से कम प्रथम दो वर्ष तक बना रहता है, विशेष रूप से वह दिया जाना चाहिए ।

प्रसूति विज्ञान

- योवनारम्भ, डिम्बक्षरण और रजोधर्म, सामान्य संगर्भता, उस्ब, जग्मु, परनिका, अपरा, नाभि रङ्गु, गर्भ-परिसंचरण, माधारण शरीर किया।
- अपसामान्य भगर्भता:—(i) गर्भ हेतुक विषरकता भगर्भ अतिवन, गर्भक्षेपक (एक्सोमिगमा), गर्भक्षेपक पूर्व विगरकता, आक्सिमक रक्तस्राव।
(ii) जन्मपूर्व रक्त स्राव—अंडे और ii त्रिमास—अस्थानी संगर्भता, हाइडोटिडली निय, गर्भपाप, अपसामान्य संगर्भता, तुलीय क्रिमास के शोगन रक्त स्राव, मम्मुर्जी अपरा, आक्सिमक रक्तस्राव।
(iii) हाइडोनियम, अल्लउल्वीवक्ता
(iv) संगर्भता में महबूद्ध रोग।
- सामान्य प्रसव: (i) प्रसव के प्रक्रम, (ii) प्रसव की शरीर रचना और शरीर किया, (iii) सामान्य प्रसव की शिक्षाविधि, (iv) सामान्य प्रसव का प्रबन्ध।
- अपसामान्य प्रस्तुतियाँ:—
नितम्ब प्रस्तुति, पश्चकपाल
नितम्ब प्रस्तुति,
आनन प्रस्तुति,
माल प्रस्तुति,
स्कन्द प्रस्तुति,
नाभिरज्जु प्रस्तुति
बहु संगर्भता,
श्रोणि संकुचन,
प्रसवोत्तर रक्तस्राव,
गर्भशय रक्तस्राव।
- प्रसूतकाल, प्रसूतकाल की शरीर किया
प्रसूतकाल का प्रबंध
प्रसूतकाल के विकार
- नवजातिशिशु
स्तन पायन, इनर दृश्य पोषण,
काशपूर्व शिशु, प्रुत्तिक्षमतां, नवजात शिशुर के रोग, गर्भ भी शक्तिया, रोग और मृत्यु। गर्भ स्थानावरोध या गर्भ मृत्यु।
- गर्भसात प्रेरण—प्रसव फारसप्स का प्रेरण, भगलेन, गर्भवर्तन।

स्त्रीरोग विज्ञान

- स्त्री जननार्गी अंगों की शरीर रचना।
- स्त्री रोग विषयक केस की परीक्षा।
- रजोधर्म, रजोनिवृत्ति और योवनारम्भ की शरीर किया और अंत स्थायिक।
- रजोधर्म असंगतियाँ, अनारंभ, कृच्छारंभ, अस्थारंभ, रक्त प्रदर।
- स्वेत प्रदर।
- व्राह्य जननार्गों के रोग—भगणाय, वैयाननिटिम, भग ब्रण, कण्ड, भग अर्बुद, रत्नज रोग।
- योनि रोग। योनिणीय, योनि अर्बुद।
- गर्भाण्य ग्रावा रोग—गर्भाण्य ग्रावा गोंध, ग्रावरक्त, अपग्रवन, पार्नाप्तम, गर्भशय ग्रावा केंमर।
- गर्भाण्य रोग: गर्भशय विस्थापन, शोथ, तासन, कासिनोमा गर्भशय।

10. डिम्बवाहिनी भगी के रोग, शोथ।

11. श्रोणि पर्युदयणियोथ, श्रोणि संयोजक उत्तिशोथ,

12. हिम्बगंधि के रोग—शोथ, अर्बुद।

13. बंधता।

14. स्त्रीरोग सम्बन्धी शस्त्रकर्म, गर्भशय का विस्फरण और क्यूरोटिंग।

प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान के लिखित पर्वे निम्नलिखित रूप में होते:—

पर्वा I—प्रसूति विज्ञान, नवजातिशिशु, शिशु स्वच्छता और होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र।

पर्वा II—स्त्री रोग विज्ञान और होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र।

होम्योपैथी रिपर्टरी

होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका लक्षणों का एक विश्वकोष है। कोई भी व्यक्ति सभी औषधियों के विशिष्ट श्रेणीकरण सहित उनके सभी लक्षणों को याद नहीं रख सकता है। रिपर्टरी मैटीरिया मेडिका के लक्षणों की एक अनुक्रमणिका, उसकी एक सूची है जो व्याकहारिक रूप में स्पष्ट रूप से अनुभव की गई है तथा जिसमें औषधियों का पारस्परिक श्रेणीकरण भी उपलब्धित है। इससे उपयुक्त उपचार के शीघ्र चयन में बहुत सुविधा होता है। रिपर्टरियों की महायाता के बिना होम्योपैथी का चिकित्सा व्यवसाय करना असंभव है और सर्वोत्तम रिपर्टरी वह है जो स्वयंपूर्ण है। अतः होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका और रिपर्टरी जुड़वा बज्जों के समान हैं।

ओषधियों और रोगदण्डाओं के बीच आवश्यक समलूपता विभिन्न प्रकार से और विभिन्न मात्रा में प्राप्त करना संभव है और इसलिए विभिन्न प्रकार की रिपर्टरियाँ हैं। समलूपित का पता लगाने में प्रत्येक रिपर्टरी के अपने सुभिन्न फायदे हैं।

रोगीवृक्ष लेना:

नियकारी रोग को हाथ में लेने में कठिनाइयाँ केसों को लेवरदू करना और अभिलेख रखने की उपयोगिता। लक्षणों की समग्रता। लक्षणों का औषधनिदेशन असामान्य, विलक्षण तथा विशिष्ट लक्षण; सामारण और विशिष्ट लक्षण; लक्षणों का त्रिलोप करना। केत वे सामान्य और असामान्य लक्षणों का विश्लेषण। मानविक लक्षणों का महस्त।

माधारण लक्षणों के प्रकार और उनके स्रोत। महवर्ती लक्षण।

1. रिपर्टरियों का इतिहास।

2. रिपर्टरियों के प्रकार।

3. बोहमिगसन रिपर्टरी के आधार पर समादित तीन केसों का प्रदर्शन।

4. केट की रिपर्टरी—केट प्रदर्शन के शिष्य में उच्चतर अद्ययन।

5. बोगर की बोहमिगसन रिपर्टरी—रिपर्टरी में उसका योगदान।

6. काँड़ रिपर्टरी और उसके साथ पोष केसों का प्रदर्शन। काँड़ रिपर्टरियों की परिसीमाएं और उनके फायदे।

प्रदर्शनों सहित सैद्धान्तिक लिखन।

प्रयोगास्त्रक:

विश्वार्थी और रिपर्टरीकरण

(i) केट की रिपर्टरियों पर 15 संशिष्ट केस।

(ii) केट पर 10 विकारी (सम्प्रे) केत।

(iii) 5 केसों को क्रासचैक करना।

सामान्य मनोविज्ञान की प्रस्तावना :

(क) मनोविज्ञान की एक विज्ञान के रूप में परिभाषा और अन्य विज्ञानों से उसके अन्तर ।

(ख) मन की संकल्पना ।

(ग) मेम्मर और उसका गिरावङ्ग । वेतना की डिप्लाइज़मेंट संरचना ।

(घ) क्रायड और उसका मिडान्ट । असेंसन वी ग्रन्टिंग ।

(ङ) मनोविज्ञान की अन्य समसामयिक विवाराशारामाण ।

(च) मन तथा स्वस्थ शरीर और रोगी शरीर के बीच संबंध ।

(छ) प्रतिशतता, कल्पना, उद्भावना, बृद्धि, स्मृति ।

(ज) शोध मंकल्प, प्रभाव, नैर्मिक प्रवृत्ति, भावना, आचरण ।

टिप्पणी :—डिप्लोमा स्तर पर मनोविज्ञान विषय में कोई परीक्षा नहीं होगी।

भाग—6

क. डी०एच०एम०एस० परीक्षाओं में प्रवेश, परीक्षा की स्तरीय आदि

8. प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा : (i) कोई भी विद्यार्थी प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा में तभी प्रवेश पा सकेगा जब कि वह किसी होम्योपैथी महाविद्यालय में उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के समाधान-प्रद रूप में, कम से कम 12 मास की अवधि तक निम्नलिखित सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक विज्ञान पाठ्यक्रमों में नियमित रूप से उपस्थित रहा हो ।

(ii) प्रत्येक विषय में लेक्चरों तथा प्रदर्शनों, प्रयोगात्मक कक्षाओं की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित होगी :—

विषय	सैद्धांतिक	प्रवर्णन, प्रयोगात्मक कक्षाएं, ट्यूटोरियल, सेमिनार, संगोष्ठिया
प्रारंभिक लेक्चर 150	300 घंटे	(सैद्धांतिक, प्रवर्णन, प्रयोगात्मक कक्षाएं)
जिसके अन्तर्गत मैटीरिया मेडिका और होम्योपैथी तत्वज्ञान भी है ।	— 150 —	प्रवर्णन, प्रयोगात्मक कक्षाएं
फार्मसी	30 घंटे	50 घंटे
शरीर रचना	150 घंटे	300 घंटे
शरीर किया विज्ञान तथा जीवरसायन	150 घंटे	300 घंटे

टिप्पणी—एक वर्ष में दूयोगन के न्यूनतम उपयोग घंटे 1100 से 1200 घंटे हैं और हन घंटों का उपयोग पूरी तरीके से अध्यापन और प्रणिकरण कार्यक्रम के लिए किया जाना चाहिए ।

*प्रारंभिक लेक्चर नए प्रवेशकों का निकिसा व्यवसाय से परिचय कराने के लिए होते हैं । ये उनके समक्ष साधारणतः आयुर्विज्ञान के इतिहास का और विशेष रूप से होम्योपैथी तथा हनीमन के जीवन का एक विवृंगम वित्र प्रस्तुत करते हैं । स्वास्थ्य और रोग की धारणा और भन्नपूर्ण के स्वस्थ व्याधी और रोगी अवस्था दोनों ही में अध्ययन के, होम्योपैथी वर्षों की लपरेखा और लगभग दो वर्षों में होम्योपैथी की महत्वपूर्ण औपचिर्यों के औपचिर्यों द्वारा उदाहरण सहित होम्योपैथी मैटीरियालिका में भी परिचय के विषय में हनीमन का योगवाना, परिवर्तनशील समाज में कार्य-विकिरण के रूप में उनकी भूमिका, स्वास्थ्य सम्बन्धी वर्तमान आन्ध्रप्रदेश और देश के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों की जानकारी, शरीर रचना, शरीर किया विज्ञान, विकृति विज्ञान आदि जैसे आधारभूत

आयुर्विज्ञानों का परिचय, उनका अन्तर सम्बन्ध और रोगलक्षण विषयों के सम्बन्ध में उनका गहन्य और उनकी युतिगति (शरदलायी, रोग सम्बन्धी सामग्री की योंगी सी जानकारी देने से आयुर्विज्ञान के विषय में विद्यार्थियों की अधिसूचि जागत हो जाएगी) । मनोविज्ञान और सर्कणामन का पारम्परिक द्वान ।

(iii) महत्वपूर्ण औपचिर्यों के शौपचिरि चिक्को की महायता भी होगी, पैदी मैटीरिया मेडिका के अध्यापन पर और हाँस्योपैथी विविधालय पर और अधिक बहु विद्या जाना चाहिए । प्रारंभिक लेक्चरों में परिशिष्ट 1 की कम से कम 20 (X चिन्ह) औपचिर्यों की पर्याप्त चर्चा होनी चाहिए ।

(iv) प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा, पाठ्यक्रम के 12 मास की समाप्ति पर आयोजित की जाए ।

(v) प्रथेक विषय में होने वाली परीक्षा में लिखित, मौखिक और प्रायोगिक परीक्षण होना चाहिए । प्रथेक विषय में प्रथेक पर्व के नियमीन घटकों का समय दिया जाए ।

(vi) हीम्योपैथी कार्मसी (मैटीरिया) की परीक्षा में सिद्धान्त का एक पर्व, प्रयोगात्मक परीक्षा और मौखिक परीक्षा होनी चाहिए ।

(vii) शरीर रचना और शरीर किया विज्ञान में से प्रथेक की परीक्षा में मिडान्ट के दो पर्व, एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होनी चाहिए ।

(viii) जिस विद्यार्थी को किसी भी विषय में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त होने वाले वारे में यह जांचित किया जाएगा कि उन्हें उम्म विषय जातर्व (विद्यो योग्यता) प्राप्त किया है परन्तु यह तब होगा जब कि उसने परीक्षा प्रथम प्रमुखता में उन्नीष की हो ।

(ix) प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी उस परीक्षा में सभी विषयों में उत्तीर्ण हो ।

(x) प्रथेक विषय में उत्तीर्ण अंक प्रथेक भाग (अधारित, लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षा) में 45 प्रतिशत होने चाहिए ।

(xi) प्रथेक विषय के लिए पूर्ण अंक और उत्तीर्ण होने के लिए अपेक्षित न्यूनतम अंक निम्नलिखित होंगे ।

विषय	लिखित	मौखिक	प्रयोगात्मक	योग
	पूर्ण उत्तीर्ण पूर्ण उत्तीर्ण पूर्ण उत्तीर्ण पूर्ण उत्तीर्ण			
फार्मसी	100 45 50 23 50 23 200 90			
शरीर रचना	200 90 100 45 100 45 400 180			
शरीर किया विज्ञान	200 90 100 45 100 45 400 180			
मैटीरिया मेडिका (20 पाली क्रेस्ट और होम्योपैथी तत्व-शास्त्र (भेदीवृत्त लेने को छोड़कर सूत्र 1-145)	100 45 100 45 -- -- 200 90			

9. डिसीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा :

(i) कोई भी विद्यार्थी डी०एच०एम०एस० परीक्षा में नव तक प्रवेश नहीं पाएगा जब तक कि—

(क) उसने पूर्ण एक वर्ष की समाप्ति पर प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण न कर की हो, और

(ख) वह किसी मान्यताप्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालय में उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य को समाधानप्रद रूप से प्रथम डी०एच०एम०एस० परीक्षा करने के बारे कम से

कम एक वर्ष की अवधि तक परीक्षा के विषयों में मेडानिक और प्रयोगात्मक दोनों ही प्रकार के निम्न-निम्नित पाठ्यक्रम में नियमित रूप से उपस्थित न रहा हो।

(ii) विषयों में लेक्चरों तथा प्रवर्णन/दृश्योरियल/प्रयोगात्मक/नैवानिक कक्षाओं के अन्तर्मध्य में संबंधित हैं जो विषयों में होंगी :—

विषय	सैद्धानिक	प्रदर्शन/दृश्योरियल प्रयोगात्मक/ नैवानिक/ संगोष्ठियां]
1. विकृति विज्ञान, रोगानु विज्ञान और परजीवी विज्ञान ।	100	100
2. न्याय आयुर्विज्ञान तथा विगविज्ञान	60	10
3. निरोधक तथा सामाजिक आयुर्विज्ञान (जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुर्विज्ञान भी हैं)	100	50
4. मैट्रिसिया मेडिका		
5. आर्गेन्ट और वर्शन	100 75	(इसमें प्रदर्शन/ दृश्योरियल आदि सम्बलित हैं)।

(iii) द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा, डी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के दो वर्ष की समाप्ति पर आयोगित की जाएगी प्रत्येक विषय में द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा लिखित/वैदिक/प्रयोगात्मक और/या नैवानिक होंगी। प्रत्येक विषय में प्रत्येक पर्चा के लिए तीन चंडे का समय दिया जाएगा।

(iv) विहृति विज्ञान, रोगानु विज्ञान और परजीवी विज्ञान की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्चा, एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होंगी।

(v) निवारक और सामाजिक आयुर्विज्ञान की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्चा और सामाजिक परीक्षा होंगी।

(vi) न्याय-आयुर्विज्ञान और विषय विज्ञान की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्चा और एक मौखिक परीक्षा होंगी।

(vii) आर्गेन्ट तथा हॉम्योपैथी वर्णन की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्चा और एक मौखिक/प्रयोगात्मक परीक्षा होंगी।

(viii) आर्गेन्ट तथा हॉम्योपैथी वर्णन की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्चा और एक मौखिक/प्रयोगात्मक परीक्षा होंगी।

(ix) जिस विद्यार्थी को किसी भी विषय में 75 प्रतिशत अंक हींगे उसके बारे में यह घोषित किया जाएगा कि उसने उस विषय में आनंद प्राप्त किया है किन्तु यह तब होगा जब कि उसने परीक्षा प्रयास में उत्तीर्ण की हो।

(x) द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी उस परीक्षा में सभी विषयों में उत्तीर्ण हों।

(xi) हॉम्योपैथी तथा महबूब आयुर्विज्ञान वांनों प्रकार के सभी विषयों में उत्तीर्ण अंक प्रत्येक भाग (अधिक नियमित, मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षा) में 45 प्रतिशत होंगे।

(xii) प्रत्येक विषय के लिए पूर्ण अंक और उत्तीर्ण होने के लिए अपेक्षित अनुमति अंक निम्नलिखित हैः—

विषय	विविध	मौखिक	प्रयोगात्मक	योग
पूर्ण उत्तीर्ण पूर्ण उत्तीर्ण पूर्ण उत्तीर्ण पूर्ण उत्तीर्ण				
अंक अंक अंक अंक अंक				
विहृति विज्ञान				
1. रोगानु विज्ञान अपर				
परजीवी विज्ञान	100	45	50	23
न्याय आयुर्विज्ञान	100	45	50	23
सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान				
(जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुर्विज्ञान भी है)				
(जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य शिक्षा और पारिवारिक आयुर्विज्ञान भी है)				
आयुर्विज्ञान मेडिका	100	45	50	23
(75 पार्श्वक्रेस्ट	100	45	50	23
शैक्षिकी)				
आर्गेन्ट				
(सूची 70 रुपये)	100	45	50	23
10. दूसरी डी०एच०एम०एस० परीक्षा :				
(i) कोई भी विद्यार्थी दूसरी डी०एच०एम०एस० परीक्षा में तब तक प्रवेश नहीं पाएगा जब तक कि—				
(क) उसने पूर्ण 1½ वर्ष की समाप्ति पर द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण न कर ली ही, और				
(ख) उस किसी माध्यताप्राप्त हॉम्योपैथी महाविद्यालय से उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य को समाधानप्रद रूप से द्वितीय डी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने के बावजूद कम से कम 1½ वर्ष की अवधि तक परीक्षा के विषयों में मेडानिक और प्रयोगात्मक दोनों ही प्रकार के निम्नलिखित पाठ्यक्रम में नियमित रूप से उपस्थित न रहा हो।				
(ii) विषयों में लेक्चरों तथा प्रदर्शन/दृश्योरियल/प्रयोगात्मक और नैवानिक कक्षाओं के अनुमति संबंधी के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित रूप में होंगे :—				

विषय	सैद्धानिक	प्रदर्शन/दृश्योरियल/ प्रयोगात्मक/वैदिक संगोष्ठियां
1	2	3
1. अध्याधिका प्रयोग (जिसने अंतर्गत मानसिक रोग और हॉम्योपैथी विभाग में 6 मास का निदान संबंधी प्रशिक्षण)	300 (2½ वर्ष में)	300 (हॉम्योपैथी आर्गेन्ट और हॉम्योपैथी विभाग में 3 मास का निदान संबंधी प्रशिक्षण)
2. शास्त्रकिया (जिसके अंतर्गत कार्य, नासा और कंठ, नेत्र के अंतर्गत हॉम्योपैथी विभाग में 3 मास का निदान संबंधी प्रशिक्षण)	180 (2½ वर्ष में)	150 (शास्त्रकिया वार्ड और शास्त्रकिया बहिर्भूत विभाग में 3 मास का निदान संबंधी प्रशिक्षण)
3. प्रमूलि विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान	180 (2½ वर्ष में)	150 (प्रसूति और स्त्री रोग वार्ड और बहिर्भूत विभाग में 3 मास का निदान संबंधी प्रशिक्षण)

4. मैटीरिया मेडिका	200 ($1\frac{1}{2}$ वर्ष में)	400
5. आर्गेन्टन तथा वर्सेन	125 ($1\frac{1}{2}$ वर्ष में)	100
6. रियटरी	100 ($1\frac{1}{2}$ वर्ष में)	100

टिप्पण— $2\frac{1}{2}$ —बर्बे में दृष्टिशाल के म्यूनिशप घटों की कुल संख्या 2760 है। पेपर घटों का उपयोग विभार विमर्श, सिम्मोजिया, दयूटोट्रियल आदि के लिए किया जा सकता है।

(iii) प्रत्येक विषय में तृतीय ढी०ए०ज्ञ०एम०एस० परीक्षा सिक्षित, मौखिक, प्रयोगात्मक और/या नैवानिक होती है। प्रत्येक विषय में प्रत्येक पर्व के लिए सीन घंटे का समय दिया जाएगा। तृतीय ढी०ए०ज्ञ०एम०एस० परीक्षा ढी००ज्ञ०एम०एस० पाठ्यक्रम के 3rd वर्ष की समाप्ति पर आयोजित की जाएगी।

(iv) चिकित्सा अधिकारी विषय की परीक्षा में सिद्धांत के बां पर्वे, एक भीड़िक परीक्षा और होम्योपैथी की वृष्टि से रोगवर्गीकरण विज्ञान संबंधी और चिकित्सा शास्त्रीय निधान दोनों का अवधारण करने की वृष्टि से रोगों वृत्त लेने की शम्या निकट प्रयोगात्मक परीक्षा होती ।

(v) शाल्य किया की परीक्षा में सिद्धांश के दो पर्व, स्पिलट, पट्टियों और सामान्य उपयोग के शाल्य उपकरणों के प्रयोग के विषय में मीठिक परीक्षा और एक नीदानिक परीक्षा होती है। प्रत्येक विद्यार्थी को चिकित्सा गामते में शाल्य उपकार की आवश्यकता के संबंध में होम्योपेथी चिकित्साशास्त्र की परिचि के प्रति विशेष निर्देश से अपने रोगी की परीक्षा और उसके बारे में रिपोर्ट के लिए एक बटे का समय दिया जा सकता है।

(vi) प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान की परीक्षा में सिद्धांत के दो पर्व, एक मीडिक परीक्षा सत्या उपकरणों और सधिकत्वों पर प्रश्नों सहित प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान पर मैदानिक परीक्षा होती।

(vii) मैटिरिया मैटिका की परीक्षा में सिद्धान्त के दो पर्यांत, एक मैटिका परीक्षा और रोगयर्गीकरण विज्ञान तथा विकिसाशास्त्रीय निवास का अवधारण करने की दृष्टि से रोगीबृत्त लेने की शक्ति निकट नैवानिक परीक्षा होगी। इसके लिए एक घटे का समय विद्या आणगा।

(viii) आर्गेन्ट की परीक्षा में सिद्धान्त के दो पर्वे और एक मौखिक परीक्षा होती है।

(ix) होमोपैथी रिपटरी की परीक्षा में सिद्धांत का एक पर्याप्त और रोपीबूत लेने में लक्षणों के विश्लेषण और मूल्यांकन तथा उपचार का स्वरूप तथा करने में एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।

(x) जिस विद्यार्थी को किसी भी विषय में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त होंगे और उसके बारे में यह घोषित किया जाएगा कि उसने उस विषय में आनंद (विशेष योग्यता) प्राप्त किया है। किन्तु यह तब होगा जब कि उसने परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की हो।

(xi) तृतीय झी० एक०एक०एक० परीक्षा पास करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी उस परीक्षा के सभी विषयों में उत्तीर्ण हो ।

(xii) होम्योपैथी तथा महावद्ध आयुर्विज्ञान दोनों प्रकार के सभी विषयों में पास अंक प्राप्तेक भाग (अर्थात् लिखित, मौखिक और प्रायोगिक परीक्षा) में 45 प्रतिशत होंगे।

(xlii) प्रत्येक विषय के लिए पूर्ण अंक और पास होने के लिए अपेक्षित स्थानतम अंक निम्नलिखित हैं:—

विषय	सिविल	मौखिक	प्रयोगात्मक	योग
पूर्णीक उसीणीक पूर्णीक उसीणीक पूर्णीक उसीणीक पूर्णीक उसीणीक				
1. चिकित्सा व्यवसाय	200	90	100	45
2. शत्रु किया	200	90	100	45
3. प्रसूति विज्ञान और स्त्री रोग विज्ञान	200	90	100	45
4. मैट्रिस्या मैडिका	200	90	100	45
5. आर्गेन्श और होम्योपैथी वर्णन	200	90	100	45
6. रिपटरी	100	45	50	23
			50	23
			200	90

11. परीक्षाफल और परीक्षा में पुनर्प्रवेश :

(i) परीक्षा में प्रवेश पाने के इच्छुक प्रत्येक विद्यार्थी को परीक्षा फीस सहित विवित प्रकृति में अपना आवेदन परीक्षा के प्रारम्भ के लिए नियत तारीख से कम से कम 21 दिन पूर्व संबंधित प्राप्तिकारी को जेज्जा होगा।

(ii) परीक्षा के बाख यथाशीघ्र परीक्षा-निकाय सफल विद्यार्थियों की निम्नलिखित रीति से कमबढ़ सूची प्रकाशित करेगा:—

(क) योग्यता अम में प्रथम दस विद्यार्थियों के नाम और उनके रोल नम्बर, तथा

(ब) अन्य विद्यार्थियों के क्रमानुसार रोल मन्त्रालय

(iii) प्रत्येक विद्यार्थी को परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर संबंधित परीक्षा-निकाय द्वारा विद्युत प्रकृत में एक प्रमाणपत्र दिया जाएगा।

(iv) ऐसे विद्यार्थी को जो परीक्षा में बैठता है किन्तु किसी विषय (विषयों) में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है, परीक्षा के उस भाग के विषय या विषयों में जिसमें बहु फैल हो गया है, विवित प्रक्रिया में आवेदन के साथ विवित फीस का संदर्भ करने पर पूरक परीक्षा में प्रवेश विद्या जा सकता है। ऐसी परीक्षा साधारणतया, प्रथम परीक्षा के परीक्षाकाल के प्रकाशन की तारीख से छह सप्ताह के बावजूद आयोजित की जाएगी।

(v) यदि कोई विद्यार्थी अन्य पूरक परीक्षा या परस्परात्वर्ती परीक्षा में उस विषय/उन विषयों में उत्तीर्ण अंक प्राप्त कर लेता है तो उसके संबंध में यह घोषित किया जाएगा कि उसने पूरी परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।

(vi) यदि ऐसा विद्यार्थी पूरक परीक्षा में संबंधित विषय/विषयों में उसीर्ण नहीं हो पाता है तो वह यांत्री वाक्यिक परीक्षा में, विनियमों के अधीन अपेक्षित प्रभाषणपत्र के अतिरिक्त इन आवश्यक का एक प्रभाषणपत्र प्रस्तुत करें तर कि वह प्रधानाधार्य को समाधानप्रद रूप में उस विषय/उन विषयों में जिसमें वह अनुसीर्ण हो गया था, आगामी शिक्षा वर्ष की अवधि तक अतिरिक्त पाठ्यक्रम में उपलिख रहा था, आगामी वाक्यिक परीक्षा में उस विषय पर उन विषयों में बैठ सकता है परस्तु परीक्षा के सभी भाग अनु-पूरक अवसर सहित चार अवसरों में पूरे हो जाने चाहिए । इन चार अवसरों की गणना उस तारीख से की जाएगी जिस तारीख को संबंधित पर्याप्त परीक्षा होती नियत हो ।

(vii) यदि कोई विद्यार्थी विद्वित वार अवसरों के भीतर सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उससे अपेक्षा भी जाएगी कि वह सभी भागों के सभी विषयों में, महाविद्यालय के प्रधानाचार्य को समाधानप्रद रूप में, एक वर्ष तक पाठ्यक्रम पूरा करेगा और सभी विषयों में परीक्षा के लिए उठेगा ।

परन्तु यदि भूतीय डी० एच० एम० एस० परीक्षा में बैठने वाले किसी विद्यार्थी को विद्वित अवसरों के समाप्त होने पर केवल एक विषय में उत्तीर्ण होना बाकी रहता है तो उसे उस विद्यिष्ट विषय में आगामी परीक्षा में बैठने दिया जाएगा और वह इस विषेष अवसर के साथ परीक्षा पूरी करेगा ।

(viii) सभी परीक्षाएं उन सारी विषयों, समय और स्थानों पर आयोजित की जाएंगी जो परीक्षा-निकाय तय करे ।

(xi) परीक्षा निकाय अताधारण परिस्थितियों में, होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् को सूचना देकर यिनी भी परीक्षा को पूर्णतः या भागतः रद्द कर सकेगा और इस प्रकार रद्द किए जाने की तारीख से तीस विन की अवधि के भीतर उन विषयों में पुनः परीक्षा के आयोजन की व्यवस्था कर सकेगा ।

12. परीक्षक : (i) ऐसे व्यक्ति के सिवाय जिसने 4 वर्ष के अध्ययन के पश्चात् डिलोग्रा या होम्योपैथी में डिग्री प्राप्त की है अथवा भूतीय अनुसूची में सम्मिलित अहंता रखने वाले व्यक्ति के सिवाय कोई भी व्यक्ति डी० एच० एम० एस० पाठ्यक्रम की वृत्तिक परीक्षा के आयोजन के लिए आंतरिक या बाह्य परीक्षक अथवा प्रश्न पत्र सेटर नियुक्त नहीं किया जाएगा ;

परन्तु—

(क) ऐसा कोई भी व्यक्ति तब तक परीक्षक नियुक्त नहीं किया जाएगा जब तक कि उसे कम से कम तीन वर्ष का अध्यापन अनुभव न हो ;

(ख) डिलोग्रा स्तर की किसी संस्था के संबंधित विषय के प्राप्त्यापक की पंसिस से भीवे का कोई व्यक्ति आंतरिक परीक्षक नियुक्त नहीं किया जाएगा,

(ग) कोई भी व्यक्ति किसी सहाय आयुर्विज्ञान विषय का बाह्य परीक्षक तब तक नियुक्त नहीं किया जाएगा जब तक कि उसके पास ऐसी मान्यताप्राप्त आयुर्विज्ञान अहंता न हो जो होम्योपैथी (शिक्षा के न्यूनतम मानक) विनियम, 1980 के उपांध ड० के अनुसार अध्यापन पत्र पर नियुक्ति के लिए अपेक्षित है ;

(घ) बाह्य परीक्षक होम्योपैथी महाविद्यालयों और आधुनिक आयुर्विज्ञान के महाविद्यालयों के अध्यापन कार्य में लगे हुए कर्मचारियों में से ही लिए जाएंगे ;

(ङ) कुल बाह्य परीक्षकों में से एक तिहाई से अधिक परीक्षक होम्योपैथी या आधुनिक आयुर्विज्ञान के उन चिकित्सा व्यवसायों में से होंगे जो परीक्षा निकाय की राय में अविभिन्न प्राप्त चिकित्सा व्यवसायी हैं और जिन्होंने भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम, 1956 के अधीन मान्यताप्राप्त होम्योपैथी अहंता या आयुर्विज्ञान अहंता प्राप्त की है ;

(च) बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए सरकारी नियोजन में लगे व्यक्तियों के ताम पर भी विचार किया जा सकता है परन्तु यह तब होगा जब उनके पास वे उक्त उप-विनियम (ड०) में विनियिष्ट आयुर्विज्ञान अहंताएँ हों ;

(छ) प्रश्न पत्र सेटर व्यक्ति को आंतरिक या बाह्य परीक्षक नियुक्त किया जा सकता है ।

(ii) परीक्षा निकाय प्रश्नपत्रों के परिनियम (माडरेट) के लिए एक परिनियमन (माडरेटर) या अधिक से अधिक तीन परिनियमन नियुक्त कर सकेगा ।

(iii) मैट्रिक और प्रयोगात्मक परीक्षाएँ संबंधित आंतरिक और बाह्य परीक्षकों के परस्पर सहयोग से मायोजित की जाएंगी । उनमें से प्रत्येक के पास अधिकातम 30 प्रतिशत अंक होंगे । वे परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों को उनके कार्य के अनुसार हन अंकों में से अंक आवंटित करेंगे और इस प्रकार तैयार किए गए अंक पत्र पर वार्ता परिणामों के हस्ताक्षर होंगे । वोनां परीक्षकों में से किसी भी परीक्षक को यह अधिकार होगा कि वह पृथक अंक पत्र तैयार करे और उस पर अपने हस्ताक्षर करके उसे अपनी टिप्पणियों के साथ परीक्षा निकाय को अलग से भेज दे । परीक्षा निकाय ऐसी टिप्पणियों पर सम्बन्ध रूप से ध्यान देगा किन्तु वह अंक पत्रों के आधार पर परीक्षा फल घोषित करेगा ।

(iv) प्रत्येक होम्योपैथी महाविद्यालय आंतरिक और बाह्य परीक्षकों को, परीक्षाओं के आयोजन के लिए सभी सुविधाएँ देगा तथा आंतरिक परीक्षक परीक्षाओं के आयोजन के लिए सभी सुविधाएँ देगा ।

(v) बाह्य परीक्षक को होम्योपैथी महाविद्यालय द्वारा उपलब्ध न की गई सुविधाओं में किसी की कमी के बारे में अपने विचार और अपनी टिप्पणियां परीक्षा निकाय को संसूचित करने का अधिकार होगा ।

(vi) वह अपनी उक्तसूचमा की एक प्रति केन्द्रीय परिषद् को भी ऐसी कार्रवाई की जाने के लिए भेजेगा जो केन्द्रीय परिषद् ठीक समझे ।

पी० एल० बर्मा, सचिव

CENTRAL COUNCIL OF HOMOEOPATHY

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th May, 1983

No. 7-1/83/CCH.—In exercise of the powers conferred by clauses (i), (j) and (k) of section 33 and sub-section (i) of section 20 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973), the Central Council of Homoeopathy, with the previous sanction of the Central Government hereby makes the following regulations, namely :—

PART I

PRELIMINARY

1. **Short title and commencement.**—(1) These regulations may be called the Homoeopathy (Diploma Course) Regulations, 1983.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Gazette of India.

2. **Definitions.**—In these regulations, unless the context otherwise requires,—

(i) “Act” means the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973) ;

(ii) “Courses” means the courses of study in Homoeopathy, namely :—

(a) D.H.M.S. (Diploma in Homoeopathic Medicine and Surgery) ; and

(b) B.H.M.S. (Bachelor of Homoeopathic Medicine and Surgery).

- (iii) "Diploma" means a Diploma in Homoeopathy as provided in regulation 3 of these regulations or a Diploma in Homoeopathy included in the Second or Third Schedule and obtained after undergoing a course of study in Homoeopathy of not less than four years' duration;
- (iv) "Degree" means a degree in Homoeopathy defined in clause (iv) of regulation 2 of the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983 or in clause (iv) of regulation 2 of the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983;
- (v) "Homoeopathic College" means a Homoeopathic Medical College affiliated to a Board or University and recognised by the Central Council;
- (vi) "Inspector" means a Medical Inspector appointed under sub-section (1) of section 17 of the Act;
- (vii) "President" means the President of the Central Council;
- (viii) "Second Schedule" and "Third Schedule" mean the Second Schedule and Third Schedule respectively of the Act;
- (ix) "Syllabus" and "Curriculum" mean the Syllabus and Curriculum for different courses of study as specified by the Central Council under these regulations, the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983 and the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983;
- (x) "Teaching experience" means teaching experience in the subject concerned in a Homoeopathic College or in a Hospital recognised by the Central Council;
- (xi) "Visitor" means a Visitor appointed under sub-section (1) of section 18 of the Act.

COURSES OF STUDY

Diploma Course

3. (i) A Diploma Course in Homoeopathy shall comprise a course of study consisting of the Curriculum and Syllabus provided in these regulations spread over a period of four years including a compulsory Internship of six months' duration after passing the final Diploma examination.

(ii) The Internship shall be undertaken at the Hospital attached to the College and in cases where such Hospital cannot accommodate all of its students for Internship each student may undertake their Internship in a Hospital or dispensary run by the Central Government or State Government or local bodies.

(iii) At the completion of the Internship of the specified period and on the recommendation of the head of the Institution where Internship was undertaken, the concerned State Board or University, as the case may be, shall issue the Diploma to the successful candidate.

PART III ADMISSION TO COURSE

4. Minimum qualifications.—No candidate shall be admitted to D.H.M.S. (Diploma) Course unless he has—

- (a) passed the Intermediate Science or its equivalent examination with Physics, Chemistry and Biology as his subjects;
- (b) attained the age of 17 years on or before 31st December of the year of his admission to the first year of the Course.

5. Authorities empowered to conduct examinations.—The examination for the diploma course in various States shall be conducted by the agencies appointed by the respective State Governments or Homoeopathic Boards or Councils or Universities as the case may be.

PART IV—THE CURRICULUM

6. Subject.—Subjects for study and examination for the D.H.M.S. (Diploma) Course shall be as under—

- (i) Anatomy.
- (ii) Physiology.
- (iii) Organon of medicine.
- (iv) Chronic diseases and homoeopathic philosophy.
- (v) Fundamentals of psychology and logic.
- (vi) Case-taking and homoeopathic repertorisation.
- (vii) Homoeopathic pharmacy.
- (viii) Homoeopathic materia medica.
- (ix) Pathology, bacteriology and parasitology.
- (x) Social and preventive medicine including health education and family medicine.
- (xi) Forensic medicine.
- (xii) Practice of medicine and paediatrics.
- (xiii) Obstetrics and gynaecology.
- (xiv) Surgery including E.N.T. and ophthalmology.
- (xv) Homoeopathic therapeutics, and
- (xvi) History of medicine.

PART V—SYLLABUS

7. Syllabus of Diploma Course.—Following is the syllabus for the D.H.M.S. (Diploma) course.

FIRST D.H.M.S. EXAMINATION

HOMOEOPATHIC PHARMACY

Theoretical

- (i) Introduction : Pharmacy, Homoe Pharmacy—its speciality and original homoeopathic pharmacopoeia.

- (ii) Scope of homoeopathic pharmacy in relation to—
 - (1) Organon of medicine (Aph. 264 to 285 organon of medicine).
 - (2) Materia Medica.
 - (3) National Economy.
- (iii) Weights and measures including homoeopathic scales (Deci. Centi. Milli).
- (iv) Homoeopathic pharmaceutical instruments and appliances.
- (v) Sources of Homoeopathic drugs. Process of collection of drug substances, identification, purification, preservation and also preservation of potentised drugs.
- (vi) Vehicles—
 - (1) Their preparation and uses.
 - (2) Purification.
 - (3) Determination of proof strength of alcohol.
- (vii) Methods of preparation of drugs from organic and inorganic chemicals, vegetables, animals and animal products, disease products (nosodes) etc. Hahnemann's classical and modern methods including merits and demerits.
- (viii) (a) Methods of preparation of mother tincture solutions, potencies and triturations.
- (b) Potentisation of drugs on—
 - (i) Decimal scale.
 - (ii) Centesimal scale.
- (ix) Fluxion potency, methods of conversion of trituration into liquid form.
- (x) External application—its scope—modes of preparation and use of lotion, liniment, glycerole, ointment.
- (xi) Prescription—its study including abbreviations, principles and mode of prescription writing and validity.
- (xii) Pharmacology—Drug strength—Hom. Pharmacodynamics, dynamic power—medicine—posology—Hom. posology—remedy.
- (xiii) Brief study of standardisation of drugs and vehicles.
- (xiv) General knowledge of legislation in relation to homoeopathic pharmacy.
- (xv) General laboratory methods. Solutions, dilution, decantation—precipitation, filtration, distillation, crystallization, sublimation, percolation etc.
- (vi) Study of biological mechanical and or chemical characteristics of some important drug substances.
 - i) The technique of homoeopathic drug proving.

PRACTICAL

- (i) Identification, and uses of homoeopathic pharmaceutical instruments and appliances and their cleaning.
- (ii) Identification of important homoeopathic drugs (vide list attached).
 - (a) Microscopic
 - (i) At least 30 drug substances—20 from vegetable kingdom and 10 from minerals and chemicals.
 - (ii) Collection of 30 drug substances for barbiturum.
 - (iii) Microscopic study of two trituration of upto 3X potency.
 - (iii) Estimation of moisture content of one drug substance with water bath.
 - (iv) Purity test of ethyl, alcohol, distilled water, sugar of milk, including determination of sp. gravity of distilled water and alcohol.
 - (v) Estimation of size of globule,—its medication—of milk sugar and distilled water—Making of doses.
 - (vi) Preparation and dispensing of dilute alcohol solutions and dilutions.
 - (vii) Preparations of mother tinctures of 3 polychrests.
 - (viii) Preparations of triturations of 3 crude drugs upto 3X.
 - (ix) Preparations of mother tinctures of drugs which do not conform to the D.S.I.
 - (x) Potentisation of 3 mother tinctures upto 6X decimal scale and 3 centesimal scale.
 - (xi) Trituration of 3 drugs upto 6X and their conversion into liquid potencies.
 - (xii) Preparation of external applications—one of each.
 - (xiii) Writing of prescriptions and dispensing of the same.
 - (xiv) Laboratory methods :—
 - (a) Sublimation
 - (b) Distillation
 - (c) Decantation
 - (d) Filtration
 - (e) Crystallisation
 - (f) Percolation.
 - (xv) Visit to a Homoeopathic laboratory to study the manufacture of drugs on a large scale.

List of drugs for identification

1. Aconitum Nap.
2. Agaricus M.
3. Antimonium Tart.
4. Apis Mellifica.
5. Argentum Nitric.

6. Arnica Montana.
 7. Arsenicum Alb.
 8. Aurum Met.
 9. Baptisia T.
 10. Baryta Carb.
 11. Belladonna.
 12. Bryonia A.
 13. Cacuts G.
 14. Calcarea Carb.
 15. Calcarea Phos.
 16. Calendula.
 17. Camphora.
 18. Cantharis.
 19. Carbo Vegetabilis.
 20. Causticum.
 21. Chamomilla.
 22. Chelidonium M.
 23. China.
 24. Cina.
 25. Coccus Ind.
 26. Colchicum A.
 27. Colocynthis.
 28. Conium M.
 29. Cuprum Met.
 30. Digitalis P.
 31. Drosera.
 32. Dulcamara.
 33. Glonine.
 34. Graphitis.
 35. Hepar Sulph.
 36. Hyoscyamus N.
 37. Hypericum.
 38. Ignatia.
 39. Ipecacunha.
 40. Kali carb.
 41. Lachesis.
 42. Lycopodium.
 43. Mercurius Cor.
 44. Mercurius Sol.
 45. Mezereum.
 46. Nattum Mur.
 47. Nitric Acid.
 48. Nux Vomica.
 49. Opium.
 50. Phosphorus.
 51. Phosphoric Acid.
 52. Platina M.
 53. Plumbum M.
 54. Pulsatilla.
 55. Rhus Tox.
 56. Ruta G.
 57. Sambucus N.
 58. Sanguinaria C.
 59. Secale Cor.
 60. Sepia.
 61. Silicea.
 62. Spigelia.

63. Spongia T.
 64. Stannum Met.
 65. Stramonium.
 66. Sulphur.
 67. Tarentula Cu.
 68. Thuja O.
 69. Veratrum Album.
 70. Veratrum Viride.
 71. Zincum Met.

Anatomy and Physiology

Study of Normal Man in Preclinical Period

Human economy is the most difficult of all sciences to study. Man is a conscious mentalised, living being and function as a whole. Human knowledge has become so vast that for precise comprehension of man as a whole development of different branches of science like anatomy, physiology and psychology was necessary. But such a division is only an expedient; man nevertheless remains indivisible.

Consciousness, life and its phenomena cannot be explained in terms of cell physiology or of quantum mechanics not by physiological concepts which in their turn are based on chemio-physical concepts.

Though anatomy and physiology are hitherto being taught as entirely different subjects, a water-tight barrier should not be erected between them; structure (anatomy) and function (physiology) are but correlated aspects and the physic-chemical processes are but an external expression of an inexorable phenomenon which is life.

So anatomy and physiology should be taught with the following aims :

- (i) to provide for the understanding of the morphological, physiological and psychological principles which determine and influence the organism of the living body as a function unit;
- (ii) to correlate and interpret the structural organism and normal physiology of the human body and thus to provide the data on which to anticipate disturbances of functions;
- (iii) to enable the student to recognise the anatomical, physiological and psychological basis of the clinical signs and symptoms of disorders due to injury, disease and mal-development;
- (iv) Similarly, to give the student to understand the factors involved in the development of pathological processes and the possible complications which may arise therefrom;
- (v) to give the student such knowledge of preclinical subjects as will enable him ultimately to employ competently and rationally all the ordinary methods of examination and treatment (including surgery) that may involve such knowledge; and
- (vi) for enabling the student to pick out strange, rare and uncommon symptoms from

pathognomonic symptoms for individualisation of patients and drugs for the purpose of applying the law of similars in homoeopathic practice.

ANATOMY

Instruction in anatomy should be planned as to present to the student a general working knowledge of the structure of the human body. The amount of detail which he is required to memorise should be reduced to the minimum. Major emphasis should be laid on *functional* anatomy of the living subject rather than on the static structures of the cadaver, and on general anatomical positions and broad relations of the viscera, muscles, blood-vessels, nerves and lymphatics. Study of the cadaver is only a means to this end. Students should not be burdened with minute anatomical details which have no clinical significance.

Though dissection of the entire body is essential for the preparation of the student for his clinical studies, the burden of dissection can be reduced and much saving of time can be effected, if considerable reduction of the amount of topographical details is made and the following points are taken into consideration :—

1. Only such details as have professional or general educational value for the medical student should be presented to him.

2. The purpose of dissection is not to create technically expert prospectors but to give the student an understanding of the body in relation to its function, and the dissection should be designed to achieve this end; for example, ignoring of small and clinically unimportant blood vessels results in a much cleaner dissection and a much cleaner picture of the main structures and their natural relationships.

3. Much that is at present taught by dissection could be demonstrated as usefully through prepared dissected specimens.

4. Normal radiological anatomy may also form part of practical training. The structure of the body should be presented linking functional aspect.

5. Actual dissection should be proceeded by a course of lectures on the general structure of the organ or the system under discussion and then its function. In this way anatomical and physiological knowledge can be presented to students in an integrated form and the instruction of the whole course of anatomy and physiology made more interesting, lively and practical.

6. A good part of the theoretical lectures on anatomy can be transferred to tutorial classes with demonstrations.

A few lectures or demonstrations on the clinical and applied anatomy should be arranged in the later part of the course. They should preferably be given by a clinician and should aim at demonstrating the anatomical basis of physical signs and the value of anatomical knowledge to the clinician.

Theoretical

A complete course of human anatomy with general working knowledge of different anatomical parts of the body.

N.B. Demonstrations in the tutorial classes may be counted as general class lectures.

Candidates will be required to recognise anatomical specimens and to identify and answer questions on structures displayed in recent dissections; to be familiar with the bones and their articulations including the vertebrae and skull and with the manner of ossification of long bones.

Emphasis will not be laid on minute details except in so far as is necessary to the understanding of structure of their application to medicine and surgery. Candidates are expected to know the attachments of muscles sufficiently to understand their action, but not the precise details of the origin and insertion of every muscle or bone of the hand and foot and of the articulations and details of small bones of the skull.

Gross anatomy

- (i) Superior extremity, inferior extremity, pelvis head, neck, thorax and abdomen to be studied regionally and system by system.
- (ii) Endocrine organs with special reference to development and applied anatomy.

The living subject

Candidates must be prepared to undergo a test in surface anatomy and surface markings on a living subject. Radiographs : Candidates may be questioned on radiographs of the normal subject.

General nervous system

A knowledge of the naked eye anatomy of the brain, spinal cord and meanings and of the positions, connections and functional significance of the main nuclei and tracts.

PRACTICAL

(1) A course of dissection of the human body.

N.B. (a) Arrangements should be made to have dissection cards for the students. Parts should be allotted to students and the dissection of parts shall be recorded as complete only after their passing an oral examination concerning each part, held by demonstrations. The period for dissection should be at least 4 months.

(b) Regular attendance at the demonstration of dissection by a batch of ten students in respect of each part may be recorded as actual dissection by the students in case of scarcity of dead bodies.

(2) A course of practical demonstrations on surface marking of :—

- (i) Important viscerae

- (ii) Arteries
- (iii) Nerves
- (iv) Regions of clinical importance of the brain
- (v) Bony landmarks.

The written papers in Anatomy shall be distributed as follows :—

Paper I—Upper extremity, head, face, neck and brain.

Paper II—Lower extremity, thorax, abdomen and pelvis.

PHYSIOLOGY

The purpose of a course in physiology is to teach the functions, processes and inter-relationship of the different organs and systems of the normal human organism as a necessary introduction to their disturbances in disease and to equip the student with normal standards of reference for use while diagnosing and treating deviations from the normal. To a homoeopath the human organism is an integrated whole body, life and mind; and though life includes all the chemico-physical processes it transcends them. There can be no symptoms of disease without vital force animating the human organism and it is primarily the vital force which is deranged in disease. Physiology should be taught from the stand-point of description of vital phenomena and the chemico-physical processes underlying them in health.

A few lectures on histology are desirable.

Theoretical

A course of systematic lectures in the general principles and facts in physiology.

- (i) Histology—the animal cell, epithelial tissue, connective tissue, muscular tissue, nervous tissue.
- (ii) Contraction :—Simple contraction—tetany, fatigue, principal changes associated with contraction. Differences in function between voluntary and involuntary muscles, and rigor mortis.
- (iii) Digestive system—including dietics. Food-stuff—vitamins, functions of the oesophagus, stomach, large and small intestines, salivary glands, pancreas and liver. Composition of saliva and its functions, composition and function of gastric juice, pancreatic juice, bile and succus entericus, functions of the large intestines. Absorption of food stuffs. Functions of the liver. Mechanism of deglutition, peristalsis, defaecation.

Definition and General action of Enzymes

General metabolism of fat, carbohydrates and proteins.

- (iv) Respiratory system :—Structures of trachea, bronchi and lungs, mechanism of respiration.

exchange of gases during respiration, Tidal air, complementary air, supplemental air, residual air, vital capacity, apnoea, asphyxia and its stages, tissue respiration.

(v) Circulatory system :

- (a) Blood—its composition, life history of red-blood cells and white blood cells, their functions. Coagulation of blood.
- (b) Heart—structure, innervation, cardiac cycle, heart sound—their character and causation, heart block, E.C.G.
- (c) Blood vessels.

Histology of arteries, veins and capillaries. Mechanism of blood flow.

Pulse—its normal characters.

Blood pressure, vascular tone—vasomotor nervous mechanism. Short description of the reticulo endothelial system and its functions, spleen, mechanism of intravascular clotting, immunity. Vital reactions to a normal stimuli.

- (vi) Lymphatic system :—Structure of lymphatic glands and vessels, composition of lymph. Mechanism of lymph flow.

- (vii) Urinary systems :—Structure and functions of kidney, Urine and its physical characters and chemical composition, common abnormal ingredients and their detection.

- (viii) Cutaneous system :—Structure and functions of skin. Sweat glands—their structure. Composition of sweat.

- (ix) Animal heat. Its regulation in warm blooded animals.

- (x) The Ductless glands. Structures and functions of thyroid and parathyroid. Suprarenal and pituitary bodies. Pancrease and diabetes.

(xi) Nerves and nervous systems :

- (a) Classification of nerves.
- (b) The Central nervous system.
- (c) Brain—structure and functions of cerebral cortex (Cerbrum rolandic areas. The cortical centres).
- (d) The medulla, vasomotor, respiratory and cardiac centres.
- (e) The cerebellum—structure and function of cerebellum.
- (f) The spinal cord—description of the spinal traces of ascending and descending degeneration. Function of the spinal cord.
- (g) The autonomic nervous system.
- (h) The sympathetic nervous system.
- (i) The para-sympathetic nervous system.

(xiii) The special senses :—

- (a) Structures and functions of different part of eye-ball, vision-formation of retinal image. Mechanism of accommodation, common errors of refraction.
- (b) Hearing—anatomy and function of external, middle and internal ear.
- (c) Taste and smell-varieties of the papillae of the tongue and their structure.
- (d) Nerves of taste. Olfactory nerves.
- (e) Cutaneous and muscle sense-varieties of the end-organ, varieties of cutaneous sense, muscle sense.

(xiii) Reproductive system—The male reproductive organs, the female reproductive organs, fertilisation of ovum. The mammary glands, menstruation. Ductless glands in connection with reproduction.

PRACTICAL

- (1) Identification of histological specimens of tissues and organs, Bone, cartilage, fibrous tissue, cellular tissue veins, arteries, liver, lung, appendix, fallopian tube, cross section of spinal nerve, lymph gland, spleen kidney.
- (2) Preparations and staining of blood films. Total and differential count of blood cells.
- (3) Use of the haemoglobinometer and sphygmomanometer. Demonstration of some experiments in connection with nerve muscle physiology.
- (4) Chemical examination of common normal and abnormal ingredients of urine.

N.B.—Candidates are required to possess a general and working knowledge of positive physiological facts and established theories to the exclusion of tentative and controversial hypothesis regarding them. The whole subject of physiology is to be taught from the stand point of description of the vital phenomena and the chemico-physical processes underlying them in relation to vital force theory as enunciated by S. Hahnemann.

The written papers in Physiology shall be distributed as follows :—

Paper I—Histology, blood and lymph, cardiovascular system, reticuloendothelial system, spleen, respiratory system, urinary system, skin, regulation of body temperature, sense organs, nerve-muscle physiology.

Paper II—Endocrine organs, nervous system, reproductive system, digestive system, metabolism, enzymes, nutrition.

II. D.H.M.S. EXAMINATION

PATHOLOGY AND BACTERIOLOGY

The teaching of pathology and bacteriology has to be done very cautiously and judiciously, while allopathy associates the pathology of tissues and micro-organism with disease-conditions and considers bacteria as conditioned cause of diseases, homoeopathy regards diseases as purely a dynamic disturbance of the vital force expressed as altered sensation and functions which may or may not ultimate in gross tissue changes. The tissue changes are not therefore as essential part of the disease per se and are not accordingly in homoeopathy the object of treatment by medication.

2. Since the discoveries of Louis Pasteur and Robert Koch the medical world has come to believe in the simple dogma "kill the germs and cure the disease". But subsequent experience has revealed that there is an elusive factor called 'susceptibility' of the patient which is behind infection and actual outbreak of disease. As homoeopathy is mainly concerned with reactions of the human organism to different morbid factors, microbial or otherwise, the role of bacteria or viruses in the production of disease is therefore, in homoeopathy quite secondary.

3. Knowledge of bacteriology is nevertheless necessary for a complete homoeopathic physician; but it is for purposes other than therapeutics such as for diagnosis, prognosis, prevention of disease and general management. Similarly knowledge of pathology is necessary for disease determination, prognosis, for discrimination between symptoms of the patient and symptoms of the disease and for adjusting the dose and potency of indicated homoeopathic remedy.

4. Only broad basic training in pathology, free from specialist bias, should however be imparted to students. Teachers of pathology should never lose sight of the fact that they are training medical practitioners, especially homoeopathic practitioners, and not technicians and specialists in pathology. The living patient, and not the crops, should be the central theme in the teaching of the subject.

5. The purpose of the instruction in pathology is to enable the student to correlate subjective symptoms with the objective ones, to interpret clinical symptoms and their inter-relationship on the basis of underlying pathology.

A. General Pathology

- (1) Introduction—scope of pathology—Old school, New school (Homoeopathic) How to study pathology.
- (2) Health and disease, etiology of diseases, infection, Definite adoption.
- (3) Inflammation.

Concept of inflammation—phenomena of inflammation—etiology—clinical manifestation of inflammation. Classification of inflammation—Inflammation of special tissues suppuration.

Disturbances of Circulation :—

- (1) Hyperaemia (active and passive).
- (2) Thrombosis and Embolism including infection.
- (3) Oedema.
- (4) Fever.
- (5) Regenerative tissue changes. Hypertrophy and Hyperplasia. The healing process, healing of special structures.
- (6) Degenerative tissue changes ;

Atrophy, cloudy swelling—mucoid degeneration—amyloid degeneration, colloid degeneration fatty degeneration—lipoid infiltration—glycogen infiltration—pigmentary changes—necrosis—gangrene.

(7) Proliferative tissue changes :

- (a) Tumors, etiology—classification benign tumors, fibroma, myoma, lipoma, osteoma chondroma, lymphoma, malignant tumors :
- (i) cancers, (ii) sarcoma, cysts, infective granulomata.
- (8) Immunity—natural immunity—acquired immunity, active immunity, passive immunity, phagocytosis, opsonin chemotaxis—bacteriolysis antitoxia agglutinins, precipitin—cytolysin—anti ferments, antilipoids—albiminolysis—bacteriotropins, theories of immunity antigen—anaphylaxis shock.

B Special pathology :

- (i) Diseases of the blood—general consideration—pernicious anaemia—aplastic anaemia—chlorosis, leukaemia.
- (ii) Diseases of the circulatory system—pericarditis endocarditis—arterio sclerosis—syphilitic aortitis anurism.
- (iii) Meningitis.
- (iv) Diseases of the respiratory system.
- (v) Diseases of the kidney.
- (vi) Diseases of the alimentary tract—peptic ulcers—cholera—typhoid ulcers—tubercular ulcers—amoebic dysentery—bacillary dysentery.
- (vii) Cirrhosis of liver.
- (viii) Diseases of unknown causation, beriberi—epidemic dropsy.

C. Bacteriology :

The morphology, biology and pathogenic qualities of the following micro-organisms :—

Pyogenic cocci, pneumococcus and gonococcus.

R. Coli, B. Commiss, B. Diphtheria, B. Tuberculosis, B. Tetanus, B. Typhosus, B. Dysentericus, B. Leprae, R. Pestis, B. Coma, Diplococcus intracellularis.

Manengitilis micro coccus catarrhalis. B. Anthrax.
B. Paratyphosus.

D. Parasitology :

The morphology, Biology and Pathogenic qualities of the following :—

- (i) Protozoa, Entamoeba Histolytica
- (ii) Mastigophore leishmania.
- (iii) Sporozoa plasmodium vivax (Malariae) P. Falciparum.
- (iv) Helmanthis.
- (v) Spirochaetes of syphilis, Weils diseases, rat bite fever, ascaria lumbricoides—Oxyuris, Variculares filaria Bancrofti—Ankylostomaduo—denate, Taenia saginata, T. solium, T. echinococcus.

E. Viruses :

Small pox, chicken pox, measles, common cold, Herpes zoster, acute anterior polio—myelitis, influenza, Encephalitis lethargica, epidemical infective hepatitis, primary atypical pneumonia.

PRACTICAL

1. 20 demonstrations of histopathological studies of tissues and organs.
2. 20 demonstration of microscopic specimens of pathogenic organisms.
3. 20 demonstrations of technique of collection, preparation and examination of morbid materials such as blood, urine, pus, sputum and exudates. Demonstrations to run concurrently.

FORENSIC MEDICINE AND TOXICOLOGY

The subject is of practical importance to the students as homoeopathic physicians are to be employed by Government in areas where they may have to handle medico-legal cases, perform autopsies, apart from giving evidence in such cases. The training in forensic medicine at present conducted is inadequate to meet these needs.

The course should consist of a series of lectures and demonstrations including :—

1. Legal procedure :

Definition of Medical Jurisprudence, courts and their jurisdiction.

2. Medical ethics :

Law relating to medical registration and medical relation between practitioner and the State, the practitioner and the patient malpractice covering professional secrecy, the practitioner and the various legislations (Act), Provincial and Union such as Workman's Compensation Act, Leprosy Act, Public Health Act, Injuries Act, Child Marriage Act, Borstal schools Act, Medical termination of pregnancy Act, Lunacy Act, Indian Evidence Act, C.C.H. Act, 1973 etc.

3. Forensic Medicines :

Examination and identification of persons living and dead ; parts, bones, stains etc.

Death : Medico-legal, Post mortem signs, stages and results, Putrefaction, mummification, saponification, form of death, causes, agencies, onset etc. Assaults, wounds, injuries and death by violence, Asphyxial death, blood examination, blood stains, Seminal stains, Burns, scalds, lightning stroke, etc. Starvation, pregnancy, delivery, abortion, infanticide, Sexual crimes.

Insanity in relation to the State, life and accident insurance Toxicology : A separate course of lectures dealing poisoning in general, the symptoms and treatment of various poisons post-mortem appearance, and tests should be given.

Study of the following poisons :

Mineral acid, corrosive sublimate, arsenic and compound, alcohol, opium and its alkaloids, carbolic acid, carbon monoxide, carbon-dioxide, kerosene oil, cannabis indica, cocaine, belladonna, strychnine and nux-vomica, aconite, cleander, snake poison prussic acid, red lead poisoning.

4 Medico-legal post-mortem :

Recording post-mortem appearance, forwarding material to chemical examiners. Interpretation of laboratory and chemical examiner's findings. Students who are attending a course of lecture in forensic medicine should avail themselves of all possible opportunities of attending medico-legal post-mortems conducted by the professors of forensic medicine. It is expected that each student should attend at least ten post-mortems.

5. Demonstration :

1. Weapons.
2. Organic and inorganic poisonous substances.
3. Poisonous plants.
4. Charts, diagrams, models, X-ray films etc. of medico-legal interest.

PREVENTIVE AND SOCIAL MEDICINE

(Including Health Education and Family Medicine)

Instruction in this course should be given in the third year of medical studies by lectures, demonstrations and field study. This subject is of utmost importance, and throughout the period of medical studies the attention of the student should be directed to the importance of preventive medicine and the

measures for the promotion to positive health.

His function is not limited merely to prescribing homoeopathic medicines for curative purposes but has a wider role to play in the community. He has to be well conversant with the national health problems both of rural as well as urban areas, so that he can be assigned responsibilities to play an effective role not only in the field of curative but also of preventive and social medicine including family planning.

(i) Physiological Hygiene :

- (a) Food and Nutrition—Food in relation to health and disease. Balanced diets. Nutritional deficiencies and nutritional survey. Food processing. Pasteurisation of milk. Adulteration of food and food inspection, food poisoning.
- (b) Air, light and sunshine.
- (c) Effect of climate—Humidity, temperature, pressure and other meteorological conditions—comfort zone. Effect of overcrowding.
- (d) Personal Hygiene—(cleanliness, rest, sleep, work) physical exercise and training care of health in tropics.

(ii) Environmental sanitation .

- (a) Definition and importance.
- (b) Atmospheric pollution—purification of Air. Air sterilisation, air borne diseases.
- (c) Water supplies—sources and uses, impurities and purification. Public water supplies in urban and rural areas. Standards of drinking water, water borne diseases.
- (d) Conservancy—method in villages, towns and cities septic tanks, dry earth latrines. Water closets, disposal of sewage. Disposal of the dead, Disposal of refuse, incineration.
- (e) Sanitation of fairs and festivals.
- (f) Disinfection—Disinfectants, deodorants, antisepsics germicides. Methods of disinfection and sterilisation.

(iii) Preventive medicine :

- (a) General principles of prevention and control of communicable disease, plague, cholera, small pox, diphtheria, leprosy, tuberculosis, malaria, kalazar, filaria, common virus diseases e.g. common cold, measles, chicken pox, poliomyelitis, infective hepatitis, helminthis infection, enteric fever and dysenteries, also animal diseases transmissible to man. Their description and methods of preventive spread by contact, by droplet, insects, animal fountains etc. Homoeopathic point of view regarding prophylaxis and vaccination.
- (b) Natural history of disease.
- (iv) Family Planning—Demography, channels of communication national family planning programme.

Knowledge, attitudes regarding contraceptives practices. Population and growth control.

N.B.—Field demonstrations—water purification plant, infectious disease, hospital etc.

MATERIA MEDICA

HOMOEOPATHIC MATERIA MEDICA

Homoeopathic materia medica is differently constructed as compared to other materia medica. Homoeopathy considered that study of the action of drugs on individual parts or systems of the body or on animals or their isolated organs is only a partial study of life processes under such action and that it does not lead us to a full appreciation of the action of the medicinal agent, the drug agent as a whole is lost sight of.

Essential and complete knowledge of the drug action as a whole can be supplied only by qualitative synoptic drug experiments on healthy person and this alone can make it possible to view all the scattered data in relation to the psychosomatic whole of a person; and it is just such a person a whole to whom the knowledge of drug action is to be applied.

3. The homoeopathic materia medica consists of a schematic arrangement of symptoms produced by each drug, incorporating no theories of explanations about their interpretation or inter-relationship. Each drug should be studied synthetically, analytically and comparatively, and this alone would enable a homoeopathic student to study each drug individually and as a whole and help him to be a good prescriber.

4. Polychrests and the most commonly indicated drugs for every-day ailments should be taken up first so that in the clinical classes or outdoor duties the students become familiar with their applications. They should be thoroughly dealt with explaining all comparisons and relationship. Students should be conversant with their sphere of action and family relationship.

The less common and rare drugs should be taught in outline, emphasizing their most salient features and symptoms. Rarer or more difficult drugs should be dealt with later.

5. Tutorials must be introduced so that students in small numbers can be in close touch with teachers and can be helped to study and understand materia medica in relation to its application in the treatment of the sick.

6. While teaching therapeutics an attempt should be made to recall the materia medica so that indications for drugs in a clinical condition can directly flow out from the provings of the drugs concerned. The student should be encouraged to apply the resources of the vast materia medica in any sickness and not limit himself to memorise a few drugs for a particular disease. The Hahnemannian approach will not only help him in understanding the proper perspective of symptoms as applied and their curative value in sickness but will even lighten his burden as far as formal examinations are concerned. Otherwise the present trend produces the allopathic approach to treatment of

diseases and is contradictory to the teaching of Organon.

Application of *materia medica* should be demonstrated from cases in the outdoor and hospital wards.

Lectures on comparative *materia medica* and therapeutics as well as tutorials should as far as possible be integrated with lectures on clinical medicine in the various departments.

7. For the teaching of drugs the college should keep herbarium sheets and other specimens for demonstrations to the students. Lectures should be made interesting and slides of plants and materials may be projected.

8. A. *Introductory lectures*.—Teaching of the homoeopathic *materia medica* should include.

- nature and scope of homoeopathic *materia medica*,
- sources of homoeopathic *materia medica*, and
- different ways of studying the *materia medica*.

B. The drugs are to be taught under the following heads :

- Common name, natural order, habitat, part used, preparation.
- Sources of drug proving.
- Symptomatology of the drug emphasising the characteristic symptoms and modalities.
- Comparative study of drugs.
- Complementary, inimical, antidotal and concordant remedies.
- Therapeutic applications (applied *materia medica*).

C. A study of 12 tissue remedies according to Schussler's biochemical system of medicine.

APPENDIX I

List of drugs included in the syllabus of *materia medica* for the second D.H.M.S. Examination.

1. *Abrotanum*.
- *2. *Aconitum Nap.*
3. *Aesculus' Hip.*
4. *Aethusa Gyn.*
- *5. *Allium Ceps.*
6. *Aloes Soc.*
7. *Alumina.*
8. *Ammonium Carb*
9. *Antimonium Crud.*
10. *Antimonium Tart.*
11. *Apis Mellifica.*
12. *Argentum Met.*
13. *Argentum Nit.*

- *14. Arnica Montana.
- 15. Arsenicum Alab.
- 16. Aurum Met.
- 17. Arum Triph.
- 18. Baptisia T.
- 19. Barytacarb.
- *20. Belladonna.
- 21. Berberis vulgaris.
- 22. Borax.
- *23. Bryonia Alab.
- 24. Calcarea Carb.
- 25. Calcarea Flour.
- 26. Calcarea Phos.
- 27. Calcarea Sulph.
- *28. Calendula.
- 29. Carbo Veg.
- *30. Causticum.
- 31. Chamomilla.
- 32. Cina.
- 33. Cinchona off.
- 34. Colchicum A.
- *35. Colocynthis.
- 36. Drosera.
- *37. Dulcamara.
- 38. Eupharasia.
- 39. Ferrum Met.
- *40. Ferrum Phos.
- *41. Gelsemium.
- 42. Graphites.
- 43. Hepar Sulph.
- 44. Helleborus.
- 45. Hyoscyamus N.
- 46. Ignatia.
- 47. Ipecac.
- 48. Kali Bich.
- 49. Kali Carb.
- *50. Kali Mur.
- *51. Kali Phos.
- 52. Kali Sulph.
- 53. Lachesis.
- 54. Ledum Pal.
- 55. Lycopodium.
- *56. Magnesia Phos.
- 57. Mercurius Cor.
- 58. Mercurius Sol.
- 59. Natrum Mur.
- 60. Natrum Phos.
- 61. Natrum Sulph.
- 62. Nitric Acid.
- *63. Nux Vomica.
- *64. Phosphorus.
- 65. Platina M.
- 66. Podophyllum.
- 67. Pulsatilla.
- *68. Rhus Tox.
- 69. Secal Cor.
- 70. Sepia.

- 71. Silicea.
- *72. Spongia T.
- 73. Sulphur.
- 74. Thuja O.
- 75. Veratrum Alab.

APPENDIX II

In addition to the list of 75 drugs for the second D.H.M.S. Examination (Appendix I) the following drugs are included in the Syllabus for the Third D.H.M.S. Examination.

- 1. Acetic Acid
- 2. Actea Racemosa
- 3. Agaricus Mus
- 4. Agnus Cactus
- 5. Ambragrisea
- 6. Anacardium O.
- 7. Arsenicum Iod.
- 8. Bismuthum
- 9. Bovista
- 10. Cactus G.
- 11. Calcrea Ars.
- 12. Camphora
- 13. Cannabis Sativa
- 14. Cantharis
- 15. Capsicum
- 16. Carbolic Acid
- 17. Carcinosin
- 18. Caulophyllum
- 19. Chelidonium M.
- 20. Cicuta Virosa
- 21. Coccus Ind.
- 22. Conium M.
- 23. Crocus Sativa
- 24. Crotalus Hor.
- 25. Croton Tig.
- 26. Cuprum Ars.
- 27. Cuprum Met.
- 28. Digitalis P.
- 29. Eupatorium Perfol.
- 30. Fluoric Acid
- 31. Glonoine
- 32. Hammamelis Vir.
- 33. Hydeastis C.
- 34. Iodum
- 35. Kreosotum
- 36. Lac Caninum
- 37. Lillium Tig.
- 38. Magnesia Carb.
- 39. Magnesia Phos.
- 40. Medorrhinum
- 41. Mezereum
- 42. Moschus
- 43. Murex
- 44. Muriatic Acid
- 45. Natrum Carb.
- 46. Nux Moschata
- 47. Opium

48. Petroleum
49. Phosphoric Acid
50. Plumbeum M.
51. Psorinum
52. Pyrogenium
53. Ranunculus Bulb
54. Rhododendron
55. Rumex C.
56. Ruta G
57. Sabina
58. Sambucus
59. Sanguinaria C.
60. Sarsaparilla
61. Spigelia
62. Stannum Met.
63. Staphysagria
64. Stramonium
65. Syphilinum
66. Tuberculinum
67. Variolinum
68. Varatrum Vir.
69. Zincum Met.

ORGANON AND PRINCIPLES OF HOMOEOPATHIC PHILOSOPHY

Hahnemann's Organon of medicine is the high water-mark of medical philosophy. It is an original contribution in the field of medicine in a codified form. A study of organon as well as of the history of homoeopathy and its founder's life story will show that homoeopathy is a product of application of the history of inductive logical method of reasoning to the solution of one of the greatest problems of humanity namely the treatment and cure of the sick. A thorough acquaintance with the fundamental principles of logic, both deductive and inductive, is therefore, essential. The organon should accordingly be taught in such a manner as to make clear to the students the implication of the logical principles by which homoeopathy was worked out and built up and with which a homoeopathy physician has to conduct his daily work with ease and facility in treating every concrete individual case.

The practical portions should be thoroughly understood and remembered for guidance in practical work as a physician.

II. D.H.M.S. EXAMINATION

I. Introductory lectures—10 lectures

Subjects :

1. What is homoeopathy?

It is not merely a special form of therapeutics but a complete system of medicine with this distinct approach to life, health, diseases, remedy and cure.

Its holistic, individualistic and dynamistic approach to life, health, diseases, remedy and cure.

Its out and out logical and objective basis and approach.

Homoeopathy is nothing but an objective and rational system of medicine.

Homoeopathy is thoroughly scientific in its approach and methods.

Bases on observed facts and data and on inductive and deductive logical inseparably related with observed facts and data.

2. Distinct approach of homoeopathy to all the preclinical, clinical and para clinical subjects.
3. Preliminary idea about all the preclinical and para-clinical subjects, their mutual relations and relation with the whole living organism.
4. Importance of learning the essential of those subjects for efficient application of the principles of homoeopathy for the purpose of cure and health.
5. Distinctive essential features of the dynamic pharmacology (proving) and pharmacy of homoeopathy.
6. Hahnemann's organon 5th and 6th editions : In II D.H.M.S. Course Aph. from 1 to 145 should be taught. Though the examination may be limited Aph. 1 to 70.

II D.H.M.S. EXAMINATION

ORGANON AND PHILOSOPHY

THEORETICAL.

1. Hahnemann's organon 5th and 6th editions Aphorism 1 to 294.

2. Introductory chapters of Hughes 'The Principles and practice of Homoeopathy'. In their introductory lectures on organon the professors are requested to impress upon the mind of the students the implications of the logical principles on which homoeopathy was built and worked out; and the history of the development of medicine in the west and Hahnemann's contributions to it in order to arrive at a right assessment of the place of homoeopathy in all its aspects in the field of medicine and life of Hahnemann.

3. Homoeopathic philosophy (a) Kent's lectures in homoeopathic philosophy, (b) Stuart Close—lectures and essay on homoeopathic philosophy (The Genius of homoeopathy), (c) Art of cure by homoeopathy by H. Hobart; (d) Science of therapeutics (Dunham).

During the lectures of homoeopathic philosophy, the following items should be elucidated :—

- (i) The scope of Homoeopathy.
- (ii) The logic of homoeopathy.
- (iii) Life, health, diseases and indisposition.
- (iv) Susceptibility, reaction and immunity.
- (v) General pathology of homoeopathy theory of acute and chronic miasms.
- (vi) Homoeopathic philosophy.
- (vii) Potentisation and the infinitesimal dose and the drugs potential.

- (viii) Examination of the patient from the homoeopathic point of view.
- (ix) Significance and implications of totality of symptoms.
- (x) The value of symptoms.
- (xi) The homoeopathic aggravation.
- (xii) Prognosis after observing the action of the remedy.
- (xiii) The second prescription.
- (xiv) Difficult and incurable cases—Palliation.

4. Introduction to organon (5th and 6th editions).

5. History of homoeopathic medicine—medicine as it existed during Hahnemann's time, early life of Hahnemann; his disgust with the existing system of treatment; his discovery of law of similars; history of the late life of Hahnemann. Introduction of homoeopathy in various countries. Pioneers of homoeopathy and their contributions development of homoeopathy upto the present day. The present trends in the development of homoeopathy. Influence of homoeopathy on other systems of medicine.

6. Hahnemann's book on chronic diseases.

Topic Wise :

- (a) Aid of physician and highest ideal cure Aph. 1 & 2.
- (b) Knowledge of a physician—Aph. 3 & 4.
- (c) Knowledge of disease which supplies the indication Aph. 5 to 18.
- (d) Knowledge of medicines—Aph 19 to 21.
- (e) Evaluation of homoeopathic methods from other method of treatment—Aph. 22 to 69.
- (f) Summary—three conditions for cure Aph. 70.

7. Lectures on practical part of organon is to be divided into and taught under the following subjects :—

- (a) That is necessary to be known in order to cure the diseases and case taking method—Aph. 71—104.
- (b) The pathogenetic powers of medicine *i.e.* drug—proving or how to acquire knowledge of medicine Aph. 105 to 145.
- (c) How to choose the right medicine—Aph. 147, 148, 149, 150, 153, 155.
- (d) The right dose—Aph. 157, 160, 161, 162, 163, 164, 169, 171, 173.
- (e) Local disease—Aph. 186, 187, 190, 191, 196, 197, 199, 201, 202 and 203.
- (f) Chronic diseases—Aph. 204, 206, 208.
- (g) Mental diseases—Aph 210 to 230.
- (h) Intermittent diseases—Aph. 231, 232, 238, 240 to 242.
- (i) Diet, regimen and the modes of employing medicine—Aph. 245—248, 252, 253, 259, 262, 263, 269, 270, 272, 275, 276, 280, 286, 288, 290, 291.

At the III D.H.M.S examination the written paper in organon and principles of Homoeopathic Philosophy shall be distributed as follows :

Paper I—Introduction to organon Aphorism 1 to 294.

Paper II—History of Homoeopathic Medicine, Homoeopathic Philosophy and Chronic Diseases.

PRACTICAL.

Case taking :

On case with Miasmatic diagnosis.

III D.H.M.S. EXAMINATION

PRACTICE OF MEDICINE

Homoeopathy has a distinct approach to disease. It recognises disease neither by its prominent symptoms nor by those of any organ or part of the body. It treats the patient as a whole and the totality of the symptoms exhibited by him represents his disease. Merely the name of the condition from which he suffers most is thus of no significance to a homoeopath.

The basic principle of homoeopathy that it treats the patient and not his disease should be constantly impressed in the minds of the students, and it is only when this approach is firmly inducted in them that they will be true homoeopaths.

Medicine is essentially a practical science and can be more learnt at the bed-side than in a class room. Care should, therefore, be taken to impart an intensive clinical training to the students during the latter part of their studies in the college.

Fevers :

Common types of fevers, caused by protozoal infection, malaria, black-water fever, leishmanias, kala-azar, fevers caused by bacterial infection, cerebrospinal fever, enteric group of fevers, bacillus coli infection, fevers caused by spirochaetal infection, syphilis, fevers caused by virus infection, measles, german measles, chicken pox, small pox, vaccinia, dengue, fever caused by physical and chemical agents, fevers of unknown etiology, septicemia, pyemia, erysipelas, plague.

Circulatory System :

Subjective systems, objective sign, general signs, pulse, blood pressure, pulse wave, physical examination of the heart, anatomical positions, inspection and palpation, apex beat, right ventricular pulsation, other pulsations, epigastric pulsation, venous pulsation, thrill, precussion, increase of cardiac dullness, auscultation of the heart, abnormal heart sounds, synchronism of heart sounds, murmurs, exocardia sounds, instrumental examination of the heart, ploygraph, electrocardiograph, X-Ray examination of the heart, cardiac efficiency test cardio-vascular diseases, palpitation, dyspnosa, syncope, cyanosis, arrhythmia, pericarditis, endocarditis, valvular diseases, differential diagnosis and congenital heart diseases, myocardial diseases, arterial disease, hypertensive heart disease, angina

preparation of patient for operation-after treatment of operation cases, post operative complications.

- (2) Inflammation, infections, suppuration, bacteriology of surgical diseases, immunity.
- (3) Non specific and specific infections.
- (4) Injuries, contusions, wounds, haemorrhage, shock, collapse, burns and scalds.
- (5) Ulceration and generenc.
- (6) Common Tumours, cysts.
- (7) General considerations with regards to injuries of bones, fracture and dislocations.
- (8) General considerations with regard to injuries of joint.
- (9) Diseases of the joints especially hipjoint.

(b) *Regional Surgery*

- (1) Injuries and diseases of the brain and its membranes, concussion, compression, irritation and laceration of the brain, intracranial haemorrhages.
- (2) Injuries and diseases of the spine, tubercular disease of the spine (Spinal caries) psoas and lumbar abcess.
- (3) Deformities of the lips and face, rare-lip varieties of cleft plate, injuries of the jaws, dislocation of jaw.
- (4) Cancer tongue infection of salivary glands, thyroid and para-thyroid tumour.
- (5) Acute mastoiditis—mastoid operation, otitis media.
- (6) Affection of the tonsils—tonsillectomy, retropharyngeal abscess, adenoids.
- (7) Disease of the nose, acute and chronic rhinitis, septal defects, polypus.
- (8) Stricture of the oesophagus, dysphagia, achalasia.
- (9) Examination of the larynx, benign and malignant growth, diphtheria, tracheostomy, oedema glottis.
- (10) Infections of the neck, cellulitis neck, growths about the neck, goitre-thyro dectomy.
- (11) Injuries of the chest, fracture of ribs, surgical emphysema.
- (12) Diseases of the pleura and lungs.
- (13) Diseases of the breast, acute infective mastitis and mammary abscess growth of the breast, simple tumours, malignant tumours. Operation for carcinoma of the breast.
- (14) Abdominal operations, general considerations, injuries of the hollow and solid viscera, acute peritonitis, intraperitoneal abscess ; pelvic abscess, subphrenic abscess and abscess in the right iliac fossa.

- (15) Hernia clinical conditions and complications of hernia, obstructed hernia, strangulated hernia.
- (16) Surgical aspects of gastric and duodenal ulcers and cancer. Indications for operative treatment.
- (17) Surgical aspects of the intestinal affections, intestinal perforations—intestinal obstruction and stasis.
- (18) Surgical aspects of the affections of the appendix appendicitis.
- (19) The investigation and examination of acute abdominal cases, their differential diagnosis.
- (20) Liver abscess-surgical treatment, gallstone (cholelithiasis).
- (21) Rectum : Ulcers and cancers, haemorrhoids, prolapse of the rectum, carcinoma anus, fissures and fistula.
- (22) Methods of examination of the urinary tract renal calculus, rupture of bladder ectopia vesioac, foreign bodies in the bladder, stone in the bladder, injuries and stricture of the urethra-extravasation of urine enlargement of the prostate malignancy of the prostate, scrotal tumour, hydrocele and varicocel.
- (23) Common diseases of the eye, diseases of conjunctiva cornea, lens, iris, retina, muscles of eyeball, glaucoma.

N.B.—Ten practical demonstrations in operative surgery.

The written papers in Surgery shall be distributed as follows :

Paper-I

Inflammation, specific and non-specific infections, haemorrhage, shock, burns, ulcers and gangrene. Tumour and cysts. Injuries and diseases of nerves, muscles, tendons and bursa, diseases of lymph, vascular system including spleen.

Head and neck surgery including surgery of thyroid, breast and congenital anomalies. Abdominal surgery including gastro-intestinal system.

Bone and joint surgery. Injuries and diseases of soine.

Deformities of limbs.

Thoracic surgery.

Genito-urinary surgery, and Homoeopathic therapeutics.

Paper II

Otorhinolaryngology, venereal diseases, Ophthalmology, dental and homoeopathic therapeutics and scope of surgery in homoeopathy.

pectoris, myocardial infarction, aneurysm vasomotor. Vasomotor diseases of the pulmonary artery, heart under special conditions, hypertrophy and dilatation of the heart, circulatory failure, prognosis of cardiovascular disease.

Respiratory System :

Subjective phenomena; cough, pain in the chest, dyspnoea, sputum, haemoptysis, physical examination of upper respiratory tract, nose, throat, pharynx, tonsils, larynx, physical examination of the lungs, inspection, palpation, percussion, auscultation, breath sound, vocal resonance, adventitious sounds, friction, special sounds, pulmonary diseases, episitis, diphtheria, whooping cough, tracheitis, bronchiectasis, bronchial obstruction, asthma, tropical eosinophilia, pneumonia, pneumonitis, abscess of the lungs, gangrene of the lung, pulmonary tuberculosis, emphysema, pulmonary infarction, pulmonary collapse, pulmonary neoplasm, pneumoniosis, syphilis of the lung other pulmonary diseases, pleurisy, hydrothorax, haemothorax, chylothorax, pneumothorax, diaphragmatic spasm, mediastinal tumor.

Digestive System :

Subjective phenomena; appetite and thirst, dysphagia, abdominal pain, other uncomfortable sensations, colic, tenesmus, nausea and vomiting, haematemesis, diarrhoea, constipation, intestinal obstruction, examination of the mouth, breath, oesophagus, abdominal anatomy, inspection, palpation, percussion, auscultation, stomach, intestine, rectal examination, Examination of the stool, physical examination and indications of liver diseases, gall bladder contents testing, X-Ray examination, pancreas, common alimentary diseases, pyorrhoea, alveolaris, stomatitis, tongue, salivary glands, oesophagus, stomach gastritis, gastric ulcer, duodenal ulcer, gastric cancer, dilatation of stomach, puloric obstruction, acute diarrhoea, chronic diarrhoea, cholera, sprue, ileitis, dysentaries, colitis, other diseases of the colon. Dyspepsia, visceroptosis, passive congestion.

Utrine genital system :

Subjective phenomena, micturition, pain, physical examination of kidneys, common renal diseases, haemoglobinuria, chyluria, pyelitis, perinephric abscesses, Cystitis, nephritis, vascular diseases of the kidney, uraemia, genital system, gonorrhoea, syphilis.

Ductless glands :

Physical examination of splenic enlargement, hodgkin's disease, climatic bubo, thyroide gland, myxoedema, cretinism, exophthalmic goitre, addison's disease, diabetes mellitus.

HAEMOPOETIC SYSTEM

Blood cells, red blood corpuscles, diseases of blood, pernicious anaemia, hypochromic microcytic anaemia, haemolytic anaemia, polycythaemia, enterogenous cyanosis, white blood corpuscles, leukaemias, agranulocytosis, purpura, haemophilis, sourvy.

Cutaneous system :

Skin Eruptions : Scabies, herpes zoster, localised eruptions constitutional diseases with skin eruption;

syphilis, leprosy, allergy, eczema, dermal leishmaniasis, eruptions of unknown etiology, poriasis, drug eruptions, oedema, epidemic dropsy.

Locomotor system :

Low back pain, diseases of bones; syphilis, Ostomyelitis.

Diseases of joints : nonspecific arthritis, Infective arthritis.

Nervous system :

Anatomy & physiology, physical examination, cerebrospinal fluid, cerebral symptoms, cranial nerve affections, meningitis, intracranial tumours, cerebral thrombosis, embolism haemorrhage, neurosyphilis, encephalitis, viral diseases, abnormal muscular movements contractures, spinal cord, diseases, spinal nerve diseases, acute anterior poliomyelitis, mental diseases, psychoneurosis.

The written papers in Medicine shall be distributed as follows :—

Paper I—Infectious diseases, disorders of endocrine system, diseases of metabolism, deficiency diseases, diseases of the digestive system, diseases of blood, spleen and lymph glands and Tropical diseases, Homoeopathic therapeutics.

Paper II—Diseases of locomotor system, diseases of nervous system, diseases of cardiovascular system, diseases of urino-genital system, common skin diseases, diseases of children, Homoeopathic therapeutics.

SURGERY

Where medicine fails surgery begins. Affection of external parts requiring mechanical skill properly belong to surgery; but frequently when the injury is so extensive or violent as to evoke dynamic reaction in the organism, dynamic treatment with remedies is necessary.

Surgery removes the end products of disease; but pre and post operative treatment is essential to correct the basic dyscrasia and prevent sequelae or complications.

A large number of conditions being amenable to internal medication in homoeopathy, the scope of the latter is much wider and that of surgery is to that extent limited. But as a supplement to medicine surgery has a definite place in homoeopathy and should be taught accordingly.

A systematic course of instructions on general principles and practice of surgery, comprising lectures on the following topic be included :

GENERAL SURGERY

(a) *General surgical procedures :*

Examination of surgical patient. Asepsis and antisepsis, sterilisation technique in operative surgery,

Case taking :

Difficulties of taking a chronic case

Recording of cases and usefulness of record keeping Totality of symptoms. Prescribing symptoms : uncommon, peculiar and characteristic symptoms ; general and particular symptoms. Eliminating symptoms. Analysis of cases uncommon and common symptoms. Gradation and evaluation of symptoms. Importance of mental symptoms. Kinds and sources of general symptoms. Concomitant symptoms.

1. History of repertoires.
2. Types of repertoires.
3. Demonstration of 3 cases worked on Boenninghausen.
4. Kent's repertory—advances study with case demonstration.
5. Boger's Boenninghausen reportory—his contrito repertory.
6. Card repertory with demonstration of 5 cases, limitations and advantages of card repertoires.

Theoretical lectures with demonstrations.

Practical :

Students are to repertorise.

- (i) 15 short cases on Kent's repertory.
- (ii) 10 chronic (long cases on Kent).
- (iii) 5 cases to be cross-checked.

INTRODUCTION TO NORMAL PSYCHOLOGY

- (a) Definition of psychology as a science and its differences from other sciences.
- (b) Conception of the mind.
- (c) Mesmer and his theory. Hypnotism structure of consciousness.
- (d) Froud and his theory. Dynamics of the unconscious.
- (e) Other contemporary schools of psychology.
- (f) Relation between mind and body in health and disease.
- (g) Perception, imagination, ideation, intelligence, memory.
- (h) Cognition, conation, affect, instinct, sentiment behaviour.

Note : No examination in Psychology at diploma level.

PART VI—EXAMINATIONS

A. Admission to D.H.M.S. Examinations, Scheme of

Examination etc.

8. First D.H.M.S. Examination.—(i) A candidate may be admitted to the First D.H.M.S. examination

provided that he has regularly attended the following courses of instruction, theoretical and practical for a period of not less than 12 months at a Homoeopathic College to the satisfaction of the head of the College.

(ii) The minimum number of lectures and demonstrations/practical classes in each of the subjects shall be as shown below :—

Subject	Theoretical practical classess/ tutorials/ seminars/ symposia
*Introductory lectures including Materia Medica Homoeopathic Philosophy	150 } 300 Hrs. (theoretical, demonstration/ practical classes
Pharmacy	30 Hrs. 30 Hrs.
Anatomy	150 Hrs. 300 Hrs.
Physiology & Biochemistry	150 Hrs. 300 Hrs.

Note : The minimum available hours of the tuition in a year is 1100-1200 hours, and these hours should be utilised fully for teaching and training programme.

*Introductory lectures are provided for acquainting the new entrant to the medical profession. This will give them a bird's eye-view about the history of Medicine in general and Homoeopathy in particular and the life of Hahnemann. Hahnemann's contribution to the concept of health and disease and the study of man as a whole—both in health and disease ; the outline of Homoeopathic philosophy and introduction to the Homoeopathic Materia Medica with illustrations by a few drug-pictures of about ten to fifteen important commonly used drugs ; his role as a physician in the changing society ; the present day health needs and knowledge of health and family welfare programmes of the country ; the introduction of basic medical sciences like Anatomy, physiology, pathology etc., their inter-relationship and their importance and relevance to the clinical subjects ; (as an illustration, a little exposure to the clinical materials will arouse the interest of the students in the subject of medicine). Elementary knowledge of psychology and Logic.

(iii) Greater emphasis shall be laid on teaching of Homoeopathic Materia Medica with the help of drug picture of important drugs and on homoeopathy philosophy. At least 20 (*marked) drugs should be adequately covered in the introductory lectures from the Appendix I.

(iv) The first D.H.M.S. examination shall be held at the end of 12 months of the Course.

(v) The examination in each subject shall consist of written, oral and practical test. Three hours shall be allowed for each paper in each subject.

(vi) The examination in Homoeopathic Pharmacy shall consist of a theoretical paper, a practical examination and an oral examination.

OBSTETRIC AND GYNAECOLOGY

Homoeopathy adopts the same attitude towards these subjects as it does towards medicine and surgery. But while dealing with obstetrical and gynaecological cases a homoeopathic physician must be trained in special clinical methods of investigation for diagnosing local conditions and discriminating cases where surgical intervention either as a life saving measure or for removing mechanical obstacles is necessary.

The best time to eradicate familial dyscrasias in a woman or to purify the foetus of such dyscrasias which it may inherit is during pregnancy ; and this should be specially stressed.

Students should also be instructed in the case of the new born. The fact that the mother and child form a single biological unit and that this peculiar close psychological relationship persists for at least the first two years of the child's life should be particularly emphasised.

OBSTETRICS

1. Puberty, ovulation and menstruation, normal pregnancy, ammir, chorion, decidua, placenta, umbilical cord, foetal circulation, general physiology.
2. Abnormal pregnancy.—(i) toxæmia of pregnancy, hyperemesis gravidarum, eclampsia, pre-eclampsic toxæmia, accidental haemorrhages ; (ii) Antenatal-haemorrhage-I and II Trimesters-ectopic gestation, hydatidiform mole, abortion, abnormal pregnancy, haemorrhages during III trimesters, placentæ, praevia, accidental haemorrhage ; (iii) hydramnion, oligo-hydramnion ; (iv) Diseases associated with pregnancy.
3. Normal labour (i) Stages of labour, (ii) Anatomy and Physiology of labour, (iii) Mechanism of normal labour, (iv) Management of normal labour.
4. Abnormal presentations :

Breech	Presentation
Occipto-posterior	
Face, Brow	
Shoulder, Cord	
5. Puerperium, physiology of Puerperium. Management of Puerperium. Disorders of Puerperium.
6. The New Born Child

Breast feeding, Artificial feeding, premature infants, obstetric injuries, diseases of new born injuries, diseases and death of foetus. Foetal asphyxia of Foetal Death.

7. Induction of abortion. Induction of labour forceps, Episiotomy, Version.

GYNAECOLOGY

1. Anatomy of female genital organs.
2. Examination of a gynaecological case.
3. Physiology and endocrinology of menstruation, menopause and puberty.
4. Menstrual anomalies, Amenorrhœa, dyamenorrhœa, menorrhagia, metrorragic.
5. Leucorrhœa.
6. Diseases of external genital organs-vulvitis, Batholinitis, ulcer of vulva, pruritus, tumours of vulva, venereal diseases.
7. Diseases of vagina, Vaginitis, tumours of vagina.
8. Diseases of cervix—corvicitis, Erosion, Polypus, cancer of cervix.
9. Diseases of uterus : displacements, inflammation, fibroids, carcinoma uterus.
10. Diseases of fallopian tube, inflammation.
11. Pelvic peritonitis, pelvic cellulitis.
12. Diseases of Ovary : Inflammation, Tumour.
13. Sterility.
14. Gynaecological operations, Dilatation and curetting of uterus.

The written papers in Obstetrics and Gynaecology shall be distributed as follows :—

Paper I—Obstetrics, new-borns, infant Hygiene and Homoeopathic therapeutics.

Paper II—Gynaecology and homoeopathic therapeutics.

HOMOEOPATHIC REPERTORY

Homoeopathic *materia medica* is an encyclopaedia of symptoms. No mind can memorise all the symptoms of all the drugs together with their characteristic gradation. The repertory is an index, a catalogue of the symptoms of the *materia medica*, neatly arranged in a practical form, also indicating the relative gradation of drugs, and it greatly facilitates quick selection of the indicated remedy. It is impossible to practice homoeopathy without the aid of repertories, and the best repertory is the fullest. Homoeopathic *materia medica* and repertory are thus like twins.

It is possible to obtain the needed correspondence between drugs and disease conditions in a variety of ways and degrees, and these are, therefore, different types of repertories, each with its own distinctive advantages in finding the *similimum*.

(vii) The examination in anatomy and physiology shall each consist of two theoretical papers, a practical examination and an oral examination.

(viii) The candidate securing 75 per cent marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination at first attempt.

(ix) In order to pass the First D.H.M.S. examination, a candidate shall pass in all subjects at the examination.

(x) Pass marks in all subjects shall be 45% in each part (written, oral and practical) and 45% in the aggregate.

(xi) Full marks for each subject and minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass
Pharmacy	100	45	50	23	50	23	200	90
Anatomy	200	90	100	45	100	45	400	180
Physiology	200	90	100	45	100	45	400	180
Materia Medica (20 Polychrest drugs) and Homoeo- pathic Philosophy (Aph. 1-145 except case taking)	100	45	100	45	200	90

9. *Second D.H.M.S. Examination.*—(i) No candidate shall be admitted to the Second D.H.M.S. examination unless :—

- (a) he has passed First D.H.M.S. examination at the end of one year previously, and
- (b) he has regularly attended the following courses of instruction both theoretical and practical in the subjects of examination for a period of at least one year subsequent to his passing First D.H.M.S. examination a recognised Homoeopathic College to the satisfaction of the head of the college.

(ii) The courses of minimum number of lectures and demonstration/tutorial/practical/clinical classes in the subjects shall be as shown below :—

Subject	Theoretical		Demonstration/ Tutorial Practical// Clinical/ Symposia		Total
	Full	Pass	Full	Pass	
1. Pathology, Bacteriology and Parasitology	100		100		
2. Forensic Medicine & Toxicology	60		20		
3. Preventive & Social Medi- cine (including health edu- cation and Family Medi- cine)	100		50		
4. Materia Medica	100				
5. Organon & Philosophy	75	including demonstration/tuto- rial etc.			

(iii) The Second D.H.M.S. examination shall be held at the end of two years of D.H.M.S. Course. The Second D.H.M.S. examination in each subject shall be written, oral, practical and/or clinical. Three hours shall be allowed for each paper in each subject.

(iv) The examination in Pathology, Bacteriology and Parasitology shall consist of a theoretical paper, a practical examination and an oral examination.

(v) The examination in Preventive and Social Medicine shall consist of a theoretical paper and an oral examination.

(vi) The examination in Forensic Medicine and Toxicology shall consist of a theoretical paper and an oral examination.

(vii) The examination in Materia Medica shall consist of a theoretical paper and an oral/practical examination.

(viii) The examination in Organon and Homoeopathic Philosophy shall consist of a theoretical paper and an oral/practical examination.

(ix) The candidate securing 75 per cent marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination at first attempt.

(x) In order to pass the Second D.H.M.S. examination a candidate must pass in all subjects of the examination.

(xi) Pass marks in all subjects, both Homoeopathic and allied medical subjects shall be 45% in each part (written, oral and practical) and 45% in aggregate.

(xii) Full marks for each subject and the minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Mar- ks	Pass Mar- ks	Full Mar- ks	Pass Mar- ks	Full Mar- ks	Pass Mar- ks	Full Mar- ks	Pass Mar- ks
Pathology, Bacteriology and Parasitology	100	45	50	23	50	23	200	90
Forensic Medicine & Toxicology	100	45	50	23	50	23	200	90
Social and Preven- tive medicine (in- cluding health edu- cation and family medicine)	100	45	50	23	50	23	200	90
Materia Medica (75 Polychrest drugs)	100	45	50	23	50	23	200	90
Organon (upyo aph. 70)	100	45	50	23	50	23	200	90

10. *Third D.H.M.S. Examination.*—(i) No candidate shall be admitted to the Third D.H.M.S. examination unless :—

- (a) he has passed the Second D.H.M.S. examination at the end of 1½ years previously, and

(b) has regularly attended the following courses of instructions both theoretical and practical in subjects of examination for a period of at least 1½ years subsequent to his passing the Second D.H.M.S. examination in a recognised Homoeopathic College to the satisfaction of the head of the College.

(ii) The courses of minimum number of lectures and demonstration/tutorial/practical and clinical classes in the subjects shall be as shown below :—

Subject	Theoretical	Demonstration/Tutorial/ Practical/Clinical/Sym- posia
1. Practical of Medicine (including mental diseases & Homoeo. Therapeutics)	300 (in 2½ years)	300 (6 months of clinical training in homoeo. ward and homoeo. OPD).
2. Surgery (including ENT, Eye & Dental diseases and homoeopathic therapeutics)	180 (in 2½ years)	150 (3 months of clinical training in surgical ward and surgical OPD).
3. Obstetrics & Gynaecology	180 (in 2½ years)	150 (3 months of clinical training in Obs. & Gyn. wards and OPD)
4. Materia Medica	200 (in 1½ years)	400
5. Organon & Philosophy	125 (in 1½ years)	100
6. Repertory	100 (in 1½ years)	100

Note : The total number of minimum hours of tuition in 2½ years is 2760. The remaining hours can be utilised for discussion, symposia, tutorial etc.

(iii) The III D.H.M.S. examination in each subject shall be written, oral, practical and/or clinical. Three hours shall be allowed for each paper in each subject. The III D.H.M.S. Examination shall be held at the end of 3½ years of D.H.M.S. Course.

(iv) The examination in practice of medicine shall consist of two theoretical papers, an oral examination and a bedside practical examination in case-taking with a view to determine both the nosological and therapeutic diagnosis from the homoeopathic point of view. Time allotted shall be one hour.

(v) The examination in surgery shall consist of two theoretical papers, an oral examination on the application of the splints, bandages and surgical instruments of common use and a clinical examination. Maximum one hour may be allowed to each candidate for the examination of and report on his case with special reference to the scope of Homoeopathic therapeutics *vis-a-vis* the necessity of surgical treatment in the particular case.

(vi) The examination in obstetrics and gynaecology shall consist of two theoretical papers, an oral

examination and a clinical examination on obstetrics and gynaecology including questions on instruments and appliances.

(vii) The examination in *materia medica* shall consist of two theoretical papers, an oral examination and bedside clinical examination in case-taking with a view to determine both the nosological and therapeutic diagnosis. The time allotted shall be one hour.

(viii) The examination in *Organon* shall consist of two theoretical papers, and an oral examination.

(ix) The examination in *Homoeopathic repertory* shall consist of one theoretical paper and a practical examination in case-taking, analysis and evaluation of symptoms and deciding the line of treatment.

(x) A candidate securing 75 per cent marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination at first attempt.

(xi) In order to pass the Third D.H.M.S. examination, a candidate shall pass in all the subjects of the examination.

(xii) Pass marks in all subjects, both Homoeopathic and allied medical subjects shall be 45% in each part (written, oral and practical) and 45% in the aggregate.

(xiii) Full marks for each subject and the minimum numbers of marks required for passing Third D.H.M.S. examination are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass	Full	Pass
1. Practice of Medicine	200	90	100	45	100	45	400	180
2. Surgery	200	90	100	45	100	45	400	180
3. Obs. & Gyn.	200	90	100	45	100	45	400	180
4. Materia Medica	200	90	100	45	100	45	400	180
5. Organon and Homoeopathic Philosophy	200	90	50	23	50	23	300	135
6. Repertory	100	45	50	23	50	23	200	90

11. *Results and Readmission to Examination.*—(i) Every candidate for admission to an examination shall send to the authority concerned his application in the prescribed form with the examination fee at least 21 days before the date fixed for the commencement of the examination.

(ii) As soon as possible after the examination the examining body shall publish a list of successful candidates arranged in the following manner :—

(a) the names and roll number of the first ten candidates in order of merit, and

(b) the roll numbers of others arranged serially.

(iii) Every candidate shall on passing the examination receive a certificate in the form prescribed by the examining body concerned.

(iv) A candidate who appears at the examination but fails to pass in a subject or subjects may be admitted to supplementary examination in the subject or subjects of that part of the examination in which he has failed to be held ordinarily after six weeks from the publication of result of the first examination on payment of the prescribed fee alongwith an application in the prescribed form.

(v) If a candidate obtains pass marks in the subject or subjects at the supplementary examination or the subsequent examination, he shall be declared to have passed at the examination as a whole.

(vi) If such a candidate fails to pass in the subject or subjects at the supplementary examination in the subject or subjects concerned, he may appear in that subject or subjects at the next annual examination on production of a certification in addition to the certificate required under the regulations, to the effect that he had attended to the satisfaction of the Principal, a further course of study for a period of next academic year in the subject or subjects in which he had failed, provided that all the parts of the examination shall be completed within four chances including the supplementary one, to be counted from the date when the complete examination becomes due for the first time.

(vii) If a candidate fails to pass in all the subjects within the prescribed four chances, he shall be required to prosecute a further course of study in all the subjects of all parts for one year to the satisfaction of the head of the college and appear for examination in all the subjects.

Provided that if a student appearing for the Third D.H.M.S. Homoeopathic examination has only one subject to pass at the end or prescribed chances, he shall be allowed to appear at the next examination in that particular subject and shall complete the examination with this special chance.

(viii) All examinations shall be held on such dates, time and places as the examining body may determine.

(ix) The examining body may under exceptional circumstances partially or wholly cancell any examination conducted by it under intimation to the Central Council of Homoeopathy and arrange for conducting re-examination in those subjects within a period of three days from the date of such cancellation.

12. *Examiners*—(1) No person other than the holder of a Diploma obtained after 4 years' of study or a Degree in homoeopathy or person possessing qualification included in the Third Schedule shall be appointed as internal or external examiner or paper-setter for the conduct of a professional examination for the D H M S Course.

Provide that—

- no such person shall be appointed as an internal examiner unless he has at least three years' teaching experience;
- no person below the rank of lecturer in the subject of a Diploma level institution shall be appointed as an internal examiner;

(c) no person shall be appointed as an external examiner in any allied medical subject unless he possesses a recognised medical qualification as required for appointment to a teaching post in accordance with annexure E of the Homoeopathy (Minimum Standards of Education) Regulations 1983;

(d) external examiners shall be drawn only from the teaching staff of Homoeopathic Colleges and colleges of Modern Medicine

(e) not more than one-third of the total number of external examiners shall be from amongst practitioners in Homoeopathy or Modern Medicine who in the opinion of the examining body are practitioners of repute and who have obtained a Homoeopathic qualification or a medical qualification recognised under the Indian Medical Council Act, 1956;

(f) person in Government employment may also be considered for appointment as external examiners provided they possess a medical qualification as specified in sub-regulation (e) above;

(g) a paper-setter may be appointed as an internal or external examiner.

(ii) The examining body may appoint a single moderator or moderators not exceeding three in number for the purpose of moderating question papers.

(iii) Oral and practical examinations shall be conducted by the respective internal and external examiners with mutual co-operation. They shall each have 50% of the maximum marks out of which they shall allot marks to the candidates appearing at the examination according to their performance and the marks-sheet so prepared shall be signed by both the examiners. Either of the examiners shall have the right to prepare and sign and send separate marks-sheet separately to the examining body together with his comments. The examining body shall take due note of such comments but it shall declare results on the basis of the mark-sheets.

(iv) Every Homoeopathic College shall provide all facilities to the internal and external examiners for the conduct of examinations and the internal examiner shall make all preparations for holding the examinations.

(v) The external examiner shall have the right to communicate to the examining body his views and observations about any shortcomings or deficiencies in the facilities not provided by the Homoeopathic College.

(vi) He shall also submit a copy of his communication to the Central Council for such action as the Central Council may consider fit.

Dr. P. L. VERMA, Secy.
Central Council of Homoeopathy.

